फोन:-4103333, 2362400 फैक्स:-0141-2373513 वर्ष: 73 संख्या: 104 प्रभात जयपुर, मंगलवार 15 नवम्बर , 2022 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

ARBiT

Full Circle

Fresh breeze after that dank, lifeless, stale odour of prison! What a feast of colour the outside world was.

PARENTING: Good Sleep For Mental Health

A New Record in Safeguarding Children

An initiative taken under CII-Young Indians 'Project Masoom'

उत्तर पूर्व भारत में सरकार ने अमूर फैल्कन पक्षियों की सुरक्षा के लिए गन्स और एयर गन्स के इस्तेमाल पर पाबंदी लगा दी है तथा पक्षी पकड़ने के जाल व गुलेल आदि जब्त कर लिए हैं। साइबेरिया और उत्तरी चीन के बर्फीले भागों में रहने वाले ये पक्षी सर्दियां गुज़ारने के लिए साउथ अफ्रीका जाते समय कुछ समय के लिए भारत में कई स्थानों पर रुकते हैं। इन दिनों असम, नगालैण्ड और मणिपुर में वन अधिकारी इनकी सुरक्षा के लिए लगातार पैट्रोलिंग कर रहे हैं। इनके आगमन का नज़ारा अद्‌भुत होता है, बड़े-बड़े झुंडों से आसमान ढक जाता है। पेड़ों, चार दीवारियों, बिजली के खंभों, मकानों, हर जगह फैल्कन दिखाई देते हैं। उत्तर -पूर्व भारत में कुछ सप्ताह का ब्रेक लेने के बाद ये पक्षी फिर लम्बे प्रवास पर निकल पड़ते हैं और बिना रुके अरब सागर को पार कर 10 हजार कि.मी. की दूरी तय करके अपनी मंजिल पर पहुंचते हैं। उड़ते- उड़ते ही ये कीट पतंगे खाते हैं। जैसे ही ये भारत पहुँचते हैं, उत्तर पूर्व के वन अधिकारी चौकसी बढ़ा देते हैं। अमूर फैल्कन का मनपसंद भोजन दीमक हैं। इसके अलावा इन्हें टिड्डियाँ भी पसंद हैं, जो दोयांग बांध के कारण नमी बढ़ने से यहां काफी तादाद में पैदा होती हैं। वाइल्डलाइफ बायॉलजिस्ट एवं विशेषज्ञ सुमित डूकिया ने बताया कि, विश्राम के दौरान ये पक्षी ऊर्जा का भंडारण करते हैं और लम्बी उड़ान के लिए वसा एकत्रित करते हैं। बंदूक व गुलेल के प्रति सख्ती बहुत आवश्यक है, क्योंकि स्थानीय लोग अमूर फैल्कन का बड़े पैमाने पर शिकार करने के आदी रहे हैं। हर रोज हजारों फैल्कन पकड़े और मारे जाते हैं। स्थानीय लोग अमूर फैल्कन को खाते भी हैं। कंज़र्वेशन इण्डिया नाम के एक एन.जी.ओ. का कहना है कि सन् 2012 में हर रोज 12,000 फैल्कन मारे जा रहे थे। धीरे-धीरे स्थानीय गांव वालों को पक्षियों के संरक्षण के बारे में शिक्षित किया गया तब से फैल्कन के शिकार में भारी कमी आई है। नगालैंड का एक गांव, पंगति तो ''फैल्कन कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड'' माना जाता है। फैल्कन फैमिली के छोटे आकार के ये रैप्टर साइबेरिया और उत्तरी चीन में प्रजनन करते हैं और हर साल सर्दी में दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका जाते हैं।

चीन के राष्ट्रपति शी भारी पड़े अमेरिका के राष्ट्रपति पर, बहु प्रतीक्षित मुलाकात में

इस घटनाक्रम से ऐसा लगा कि, अन्ततोगत्वा अमेरिका के आर्थिक हितों ने अमेरिका का रवैया निर्धारित किया, न कि राजनीतिक सोच ने

- राष्ट्रपति शी ने मुलाकात के बारे में जारी लिखित बयान में साफ कहा, जहाँ तक ताइवान का सवाल है, अमेरिका अपनी सीमा में रहे। चीन ने स्पष्ट किया कि, वह अमेरिका के राजनीतिक नेताओं की ताइवान की बहुचर्चित यात्रा से काफी रूष्ट है।
- चीन ने यह भी कहा कि, अमेरिका के साथ रिश्तों में मूल मुद्दा (कोर इश्यू) ताइवान है तथा इसी नींव पर दोनों के पारस्परिक संबंध टिके हैं।
- मुलाकात के बाद राष्ट्रपति बाइडन ने कहा, उनका आकलन है, चीन निकट भविष्य में ही ताइवान पर आक्रमण करने वाला है।
- राष्ट्रपति बाइडन का यह वक्तव्य काफी नर्म था, क्योंकि, अमेरिका पहले विश्वास दिलाता रहा है कि, अगर चीन ने ताइवान पर आक्रमण किया तो वह सीधा हस्तक्षेप करेगा।
- चीन ने अपने लिखित वक्तव्य में रूस के खिलाफ कुछ नहीं कहा, जबकि अमेरिका ने अपनी तरफ से जोड़ा कि, चीन न्यूक्लियर हथियारों के उपयोग के खिलाफ है।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। बाली में सोमवार सुबह अमेरिका के साथ वार्ता में चीन का लहजा थोड़ा ज्यादा खरा और स्पष्ट था।

लगता है कि चीन के राष्ट्रपति शी के साथ वार्ता में बाइडन राजनैतिक सिद्धांतों से ज्यादा अमेरिका के आर्थिक हितों से प्रेरित नजर आए। अमेरिका के राष्ट्रपति और चीन के राष्ट्रपति के प्रति लहजा नर्म रखा, जो कि दोनों पक्षों की वार्ता में उजागर हुआ।

दोनों नेताओं की द्विपक्षीय वार्ता में क्या हुआ उस पर चीन ने 14 पृष्ठों का बयान जारी किया। और अमेरिका के राष्ट्रपति ने प्रैस कान्फ्रैंस में अपना पक्ष रखा।

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने कहा कि अमेरिका को ताइवान पर हद पार नहीं करनी चाहिए। उन्होंने यू.एस. के उच्चस्तरीय नेताओं के ताइवान दौरे पर आने पर भी आपत्ति जताई।

दूसरी ओर अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन, जो अमेरिका में मध्यावधि चुनावों में मिली जीत से प्रसन्न हैं, चीन के प्रति नर्म नजर आए। शी से मुलाकात के तुरंत बाद पत्रकारों से वार्ता में उन्होंने कहा कि चीन जल्दी ही ताइवान पर आक्रमण करने वाला है पर उन्होंने अपना पुराना आश्वासन नहीं दी दोहराया कि अगर चीन ने ताइवान पर हमला किया तो अमेरिका हस्तक्षेप करेगा। इससे स्पष्ट है कि बाइडन का रूख चीन के प्रति नर्म है।

दूसरी और चीन के राष्ट्रपति अमेरिकन राष्ट्रपति के साथ वार्ता के दौरान अपने रूख पर अडे रहे चीन के राष्ट्रपति ने वार्ता में साफ कहा कि अमेरिका के साथ आपसी रिश्तों में ''ताइवान'' मूल मुद्दा है।

चीन ने यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में रूस के न्यूक्लियर हथियारों के बारे में खुलकर कुछ नहीं कहा। जबकि, अमेरिका के राष्ट्रपति ने दावा किया है कि चीन न्यूक्लियर हथियारों के इस्तेमाल के खिलाफ था। अपने लिखित वक्तव्य में चीन ने रूस के खिलाफ कुछ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प. नेहरू को याद किया प्र.मंत्री ने

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। केन्द्र सरकार ने देश के प्रथम प्रधानमंत्री, पंडित जवाहर लाल नेहरु की जयंती, 14 नवम्बर को अखबारों में विज्ञापन जारी नहीं किए।

- देश के प्रथम प्रधानमंत्री को ट्वीट के जरिए प्रधानमंत्री मोदी ने श्रद्धांजलि तो दी, पर इस अवसर पर सरकार की तरफ से कोई विज्ञापन जारी नहीं हुआ।

तथापि, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बाली, जहां वे जी-20 शिखर वार्ता के लिए गए हैं, से की गई एक ट्वीट में उन्हें याद करते हुए कहा, ''उनकी जयंती पर हमारे पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु जी को श्रद्धांजलि, हम देश के लिए उनके योगदान को भी याद करते हैं।''

बंगाल में आजमाई रणनीति अब भाजपा दक्षिण भारत में लागू कर रही है

- दो दिन की तूफानी यात्रा में मोदी ने हजारों करोड़ के प्रोजैक्ट लगाने की घोषणा की तथा केन्द्रीय मंत्रियों व नेताओं को झोंक दिया प्रचार में एवं ''डबल इंजन'' सरकार के फायदे पुरज़ोर ढंग से समझाये गये।
- क्षेत्रीय पार्टियों के नेताओं का भ्रष्टाचार में लिप्त होने का भारी प्रचार किया गया तथा केन्द्रीय एजेंसियों ने भी इस प्रयास में पूरी मदद की, राजनीतिक नेताओं के निवास व प्रतिष्ठानों पर छापे मार कर।
- साथ ही क्षेत्रीय पार्टी के नेताओं को, जिसमें कांग्रेस भी शामिल है, लगातार प्रलोभन व दबाव डालकर भाजपा से जोड़ने का सुनियोजित प्रयास भी होता है। यह छवि बनाने का प्रयास होता है कि, राजनीतिक नेताओं के पलायन के लिये भाजपा ही लोकप्रिय पार्टी है।
- मोदी ने भी कर्नाटक को छोड़कर सभी अन्य राज्यों में, अंग्रेजी में भाषण दिये, हिन्दी थोपने के आरोप से अपने आप को दूर करते हुए।

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। नये क्षेत्रों में अपनी विजय-पताका फहराने के लिये भाजपा कुछ खास तौर-तरीके अपनाती है। उन्हीं तरीकों को वह इस समय उसके लिये अछूते क्षेत्र, कर्नाटक के अलावा, सारे दक्षिण भारत में अपना रही है, जहाँ से 130 सांसद लोकसभा के लिये चुने जाते हैं। ज्ञातव्य है कि कर्नाटक भाजपा के लिये दक्षिणी भारत का प्रवेश द्वार पहले ही बन चुका है। भाजपा अपने लिये अछूते रहे क्षेत्रों, चाहे वे विधानसभा चुनाव ही क्यों न हो, में सत्ता में आने के लिये क्षेत्रीय दलों का सामना करती है।

भाजपा की दक्षिण की योजना भी इसकी पश्चिम बंगाल की योजना जैसी ही है। जैसा कि विदित ही है, पश्चिम बंगाल में प्रधानमंत्री मोदी, केन्द्रीय मंत्रियों तथा पार्टी के प्रमुख नेताओं की पूरी टीम के नेतृत्व में जोरदार प्रदर्शन, हाई वोल्टेज मीडिया कवरेज से युक्त

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या खड़गे को कम तवज्जो दे रही है कांग्रेस

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। आसन्न गुजरात विधानसभा चुनावों में पर्यवेक्षकों की नियुक्ति को लेकर कांग्रेस अपने अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को पदानुकूल महत्व नहीं दे रही है।

ब्लॉक-स्तरीय पदाधिकारियों की नियुक्तियाँ तक तत्कालीन कांग्रेस

- पहले ब्लॉक लैवल की नियुक्तियां भी सोनिया गांधी के नाम पर होती थीं, अब गुजरात में हुई प्रदेश चुनावों से संबंधित नियुक्तियों में खड़गे की उपेक्षा की गई है।

अध्यक्ष सोनिया गांधी के नाम पर की जाती थीं, लेकिन ए.आई.सी.सी. महासचिव (संगठन) के.सी. वेणुगोपाल ने सोमवार को, नियुक्ति-अधिकारी खड़गे की उपेक्षा करते हुये, यह कहना उचित समझा कि जोन तथा अन्य स्तरों की नियुक्तियाँ ''ए.आई.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'झारखण्ड का अनुसरण करते हुए, बिहार में दबाव बनने लगा'

- सी.पी.आई. (एम.एल.) व हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा-एस मु.मंत्री नीतीश से मिले तथा ''कोटा'' 60 से 77 प्रतिशत करने के लिये 23 नवम्बर से शुरू हो रहे विधानसभा के आगामी सत्र में विधेयक लाने की मांग की।
- मु.मंत्री नीतीश कुमार पर यह भी दबाव बनाया जा रहा है कि, जात/जाति आधारित जनगणना को भी जल्दी पूरा करायें।

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। इकोनॉमिकली वीकर सैक्शन (ई.डब्ल्यू.एस.) को सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने के केन्द्र सरकार के प्रस्ताव की पुष्टि करने वाले सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की पृष्ठभूमि में, कोटा-राजनीति जोर पकड़ती जा रही है।

झारखंड विधानसभा द्वारा अभी हाल ही में, एक संशोधन विधेयक पारित करके सरकारी नौकरियों में 60 प्रतिशत आरक्षण को बढ़ाकर 77 प्रतिशत कर दिये जाने के बाद, बिहार गठबंधन सरकार के दो पार्टनर दलों ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से अपील की है कि वे 23 नवम्बर से शुरु हो रहे राज्य विधानसभा के शीतकालीन सत्र में इसी प्रकार का विधेयक लायें।

कुमार सरकार को बाहर से समर्थन दे रही सी.पी.आई. (एम.एल.) ने झारखंड के पैटर्न पर एस.सी., एस.टी., ओ.बी.सी. तथा ई.बी.सी. की कोटा-सीमा को बढ़ाने के लिये नया कानून लाने की जरूरत बताई है। हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा-एस ने मुख्यमंत्री से कहा है कि वे विभिन्न सामाजिक ग्रुपों की जनसंख्या के अनुपात में कोटा-प्रतिशत लागू करके अन्य राज्यों के लिये मिसाल प्रस्तुत करें।

पिछले शुक्रवार को, हेमन्त सोरेन सरकार ने झारखंड रिज़र्वेशन इन वेकेन्सीज़ ऑफ पोस्ट्स एंड सर्विसेज़ (अमेंडमेंट) बिल पारित कर के राज्य का आरक्षण कोटा 60 प्रतिशत से बढ़ाकर 77 प्रतिशत कर दिया था। नये कानून के अनुसार, एस.सी. समुदाय स्थानीय लोगों को 12 प्रतिशत, एस.टी. समुदाय को 28 प्रतिशत तथा ई.बी.सी. को 15 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा। किन्तु इस कानून में एक आपत्ति सूचना (केविऐट) भी है, क्योंकि इसमें एक शर्त है कि ''यह अधिनियम तभी लागू होगा, जब इसे संविधान की नवीं अधिसूची में शामिल कर लिया जायेगा।'' आलोचकों ने हेमन्त सोरेन सरकार पर प्रहार करते हुये, इस नये कानून को सरकार की एक ''राजनैतिक चाल'' बताया है क्योंकि सरकार भ्रष्टाचार की अनेक आरोपों का सामना कर रही है।

जो भी हो, लेकिन पड़ोसी राज्य के इस कदम से प्रेरित होकर, बिहार के राजनेता कुमार सरकार पर जातिगत-जनगणना कराने की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिये दबाव बना रहे हैं। सी.पी.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नेताजी की जयंती पर छुट्टी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को वह याचिका खारिज कर दी जिसमें मांग की गई थी कि नेताजी सुभाष चन्द बोस की जयंती 23 जनवरी को राष्ट्रीय अवकाश घोषित करने के लिए केन्द्र सरकार को निर्देश दिया जाए। और उनके लिए दिल्ली व

- सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को इस बारे में सरकार को कोई भी निर्देश देने से इंकार कर दिया तथा नेताजी की जयंती, 23 जनवरी को अवकाश घोषित करने की मांग करने वाली याचिका खारिज कर दी।

अन्य राज्यों की राजधानी में स्मारक भवन और म्यूज़ियम बनाया जाए।

याचिका मदुरै के निवासी के.के. रमेश ने दायर की थी। चीफ जस्टिस डी.वाय. चन्द्रचूड ने कहा कि यह मामला केन्द्र सरकार के विचार योग्य है, उन्होंने वकील से पूछा ''कोर्ट क्या

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विरोध जताने के लिये चीन के नागरिक ''कैन्टोनीज़'' भाषा का उपयोग कर रहे हैं

जैसा कि विदित ही है, चीन की ऑफिशियल भाषा ''मैन्डरिन'' है, अतः सैंसरशिप लागू करने वाले अफसर, ''कैन्टोनीज़'' से ज्यादा वाकिफ नहीं हैं

- इसलिए ''कैन्टोनीज़'' में लिखे असंतोष व विरोध के मैसेज सैंसर होने के बच जाते हैं तथा उनका व्यापक प्रसारण हो जाता है।
- चीन का औद्योगिक हब, ग्वान्जो पहले कैन्टन के नाम से जाना जाता था तथा हांगकांग व विदेशों में रहने वाले चीन मूल के लोग अधिकतर ''कैन्टोनीज़'' भाषा का उपयोग करते हैं।
- चीन की सख्त ''ज़ीरो कोविड पॉलिसी'' के खिलाफ काफी असंतोष है। कोविड पर नियंत्रण पाने के लिये, शहरों के कई हिस्सों पर, ''क्वारंटीन'' की सख्त पाबंदियाँ लागू की गयी हैं। परिवार में कोविड ग्रस्त को, जबरन कैम्पों में भेजा जाता और जिस फ्लैट या मकान में कोविड का मरीज पाया गया, उस ''फ्लैट'' को खाली करा कर चाबियां ले ली जाती हैं, ''डिसइन्फैक्टैंट'' आदि का, छिड़काव कराने के लिये।
- इस सख्ती के खिलाफ काफी असंतोष है। साथ ही औद्योगिक उत्पादन बंद होने से जनता पर भारी आर्थिक बोझ है, जिसका सरकार कुछ खास निराकरण नहीं कर पा रही है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। दक्षिण चीन के ग्वांग्ज़ू प्रांत के निवासियों ने सरकार की दमनकारी ज़ीरो कोविड पॉलिसी से परेशान होकर अपने गुस्से और असंतोष को व्यक्त करने का तरीका ढूंढ लिया है। मजेदार बात यह है कि इस तरीके में विपरीत कार्रवाई का भी कोई जोखिम नहीं है।

यह उस भाषा के उपयोग से संभव हो सका है, जिसे चीन के चौकन्ने नियंत्रक समझ नहीं पाते।

जिस भाषा का प्रयोग किया जा रहा है, वह चीन के सुदूर दक्षिण पूर्व की एक स्थानीय भाषा है। यह ग्वांग्ज़ू प्रांत में बोली जाती है जिसकी राजधानी भी ग्वांग्ज़ू है। पूर्व में इसे कैन्टैन के नाम से जाना जाता था। अतः प्रयुक्त की जा रही भाषा ''कैन्टॅनीज़'' है। यह दक्षिणी ग्वांक्शी प्रांत में भी बोली जाती है और हांगकांग के साथ ही मकाउ की मुख्य भाषा भी है। चीन से प्रवास कर विदेश में बसे लोगों की भाषा भी कैन्टॅनीज़ है क्योंकि ऐतिहासिक रूप से जो चाइनीज़ विदेशों में बसे थे, उनका उद्‌गम ग्वांग्डोंग प्रांत ही था।

चीन की ज़ीरो कोविड पॉलिसी करोना वायरस के किसी जन संक्रमण को रोकने का एक प्रयास है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए देश ने कुछ कठोर उपाय किए हैं, जैसे कि स्थान विशेष पर लॉकडाउन्स लगाना और बड़े पैमाने पर करोना टैस्ट करना। देश के पड़ोसी देशों की सीमाओं को सील कर दिया गया है।

चीन की ज़ीरो कोविड पॉलिसी का लक्ष्य हासिल करने के लिए कोविड पॉज़िटिव पाए जाने के बाद परिवार के सदस्यों को अलग-अलग कर दिया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूजा स्थल एक्ट, 1991, पर और समय मांगा केन्द्र ने

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केन्द्र सरकार को उन याचिकाओं पर जवाब देने के लिए और समय दिया, जिनमें पूजा स्थल

- सुप्रीम कोर्ट ने पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम 1991 को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर एफीडेविट पेश करने के लिए केन्द्र सरकार को 12 दिसम्बर तक समय और दिया।

(विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991 के कुछ प्रावधानों के चुनौती दी गई है। यह एक्ट उन पूजा स्थलो के उस स्वरुप बदलने के लिए इस केस दायर करने को प्रतिबंधित करता है, जो 15 अगस्त से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। -हरिऔध

भारत के नए मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ से आम नागरिक की अपेक्षाएं

9 नवंबर 2022 को डॉ धनंजय वाई चंद्रचूड़ ने भारत के मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ ग्रहण की। डॉक्टर चंद्रचूड़ भारत के 50वें मुख्य न्यायाधीश हैं। उनके पिता भी भारत के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं। ऐसा पहली बार ही हुआ है। डॉक्टर चंद्रचूड़ की ख्याति अत्यंत विद्वान विधि वेत्ता एवं नागरिक अधिकारों के रक्षक के रूप में है। वे 8 वर्ष से सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर कार्यरत थे। इससे पूर्व वे सर्वोच्च न्यायालय में वकील थे। वकील से सीधे सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त हो कर मुख्य न्यायाधीश के पद पर पहुंचने वाले अब तक के तीसरे व्यक्ति हैं।

गत आठ वर्षों में डॉक्टर चंद्रचूड़ ने अनेक निर्णय नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों को संरक्षण प्रदान करने हेतु दिए हैं। इसी कारण उनसे आम नागरिक की अपेक्षाएं कई गुणा बढ़ गई हैं। उसे कार्यपालिका के उत्पीड़न एवं एक तरफा कार्रवाई से मुक्ति की एक किरण दिखाई दे रही है। यह सही है कि जब कोई व्यक्ति कार्यपालिका से पीड़ित हो और उसे कहीं न्याय की आशा नहीं दिखाई दे तो वह न्यायालय का रुख करता है। न्यायपालिका के सर्वोच्च पायदान पर सर्वोच्च न्यायालय का स्थान है। सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश निष्पक्ष रुप से एवं बिना किसी दबाव के, संविधान के अनुरूप भारत के नागरिक के अधिकारों की रक्षा करेंगे, ऐसी आशा की जाती है। गत कुछ वर्षों में इसकी आवश्यकता और भी अधिक अनुभव होने लगी है क्योंकि कार्यपालिका चाहे वह राज्य स्तर पर हो अथवा केंद्र स्तर पर, अपने आप को निरंकुश समझने लगी है और ई डी, सी बी आई, एन आई ए, इंकम टैक्स जैसी संस्थाओं का उपयोग विपक्षियों को प्रताड़ित करने में करने लगी हैं। बहुमत के आधार पर सत्ताधारी दल विधायिका से भी मनमाने कानून पारित करवाने में सफल रही है।

जब भी इस प्रकार के कानूनों को न्याय की कसौटी पर कसने का प्रश्न आया तो, गत वर्षों में सर्वोच्च न्यायालय तक ने इनमें से कई मुद्दों को ठंडे बस्ते में डाल दिया और परोक्ष रूप से सत्ताधारी शासन को ही राहत प्रदान की। सरकार के पक्ष में दी गई राहत आम जनता के हितों पर कुठाराघात के रूप में सिद्ध हुई है। डॉक्टर चंद्रचूड़ ने अपने अनेक फैसलों के द्वारा इस अवधारणा को पुष्ट किया है कि वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एवं मानव अधिकारों के प्रति अत्यंत संवेदनशील एवं सचेत न्यायाधीश हैं। इनकी रक्षा के लिए वे कार्यपालिका तक की नाराज़गी की परवाह नहीं करते हैं। इनके द्वारा दिए गए प्रमुख निर्णयों में सबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश का अधिकार, अविवाहित महिलाओं को गर्भपात का अधिकार, समलैंगिकता को अपराध न मानना, महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन प्रदान करना, सम्मिलित हैं। इन सभी में डॉक्टर चंद्र चूड़ ने आम व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और उसके अधिकारों की रक्षा अपने निर्णयों के माध्यम से की। इन्होंने कानून की व्याख्या करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। जब जब इसे कम करने का प्रयास किया गया तो उस पर अंकुश लगाने का कार्य इन्होंने किया। इसी कारण अब तक जितने मुख्य न्यायाधीश बने हैं, उनसे कहीं अधिक आशा एवं अपेक्षा के साथ आम नागरिक एवं इस क्षेत्र में काम करने वाले, उनको देख रहे हैं।

कई वर्षों बाद डॉक्टर चंद्रचूड़ ऐसे मुख्य न्यायाधीश होंगे जो दो वर्ष से अधिक समय तक इस पद पर रहेंगे। श्री यूयू ललित ने भी अपने 74 दिन के संक्षिप्त कार्यकाल में न्यायिक प्रक्रिया को तेज करने एवं न्यायिक सुधारों की दृष्टि से अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाये। अपना कार्यकाल कम होने के कारण वे इनका प्रभाव होते हुए नहीं देख पाए। अब इस प्रक्रिया को डॉक्टर चंद्र चूड़ आगे बढ़ाएंगे। अपनी सोच को और विस्तार देते हुए प्रेस की स्वतंत्रता को अपने निर्णयों के माध्यम से सुदृढ़ करेंगे। हालांकि भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सभी अन्य न्यायाधीशों के समकक्ष ही होते हैं किंतु इन्हें कई विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं। जिनमें से एक इनका कार्य 'मास्टर ऑफ रोस्टर' के रूप में होता है। इसका तात्पर्य है कि वे विभिन्न विचाराधीन प्रकरणों पर सुप्रीम कोर्ट की बेंच गठित करें। वे यह तय करते हैं कि किस बेंच में किन न्यायाधीशों को रखा जाय। यह सर्व ज्ञात है कि कई न्यायधीश सरकार के दृष्टिकोण का समर्थन करते रहे हैं एवं निर्णय सरकार के पक्ष में अधिक देते हैं। कई ऐसे होते हैं जो सरकार की परवाह किए बिना सविधान और व्यक्ति की रक्षा के अनुसार अपना मत व्यक्त करते हैं। ऐसे न्यायाधीशों के निर्णय सरकारों को रास नहीं आते हैं। अब यह अधिकार डॉक्टर चंद्रचूड़ के पास मुख्य न्यायाधीश के रूप में होगा कि वह कई महत्वपूर्ण लंबित प्रकरणों में न्यायाधीशों की बेंच का गठन करें। बेंच में सम्मिलित न्यायाधीशों पर कई बार यह निर्भर करता है कि सर्वोच्च न्यायालय का क्या निर्णय होगा?

डॉ. चंद्र चूड़ लीक से हटकर निर्णय करने वाले न्यायाधीश के रूप में विख्यात रहे हैं। उन्होंने न्याय की न केवल बहुत पढ़ाई की है अपितु उसका निरंतर अध्ययन करके कानून को विकसित करने तक का कार्य किया है। उनकी विद्वता की झलक निश्चित रूप से उनके अब तक के कई निर्णयों में देखने को मिली है। अब यह और अधिक देखने को मिलेगी, ऐसी आशा है।

डॉ. चंद्र चूड़ लीक से हटकर निर्णय करने वाले न्यायाधीश के रूप में विख्यात रहे हैं। उन्होंने न्याय की न केवल बहुत पढ़ाई की है अपितु उसका निरंतर अध्ययन करके कानून को विकसित करने तक का कार्य किया है। उनकी विद्वता की झलक निश्चित रूप से उनके अब तक के कई निर्णयों में देखने को मिली है। अब यह और अधिक देखने को मिलेगी, ऐसी आशा है। जहां अधिकांश प्रकरणों में डॉक्टर चंद्रचूड़ ने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में सरकार के रुख की परवाह किए बिना, निर्णय दिए, अपवाद स्वरूप कुछ प्रकरण ऐसे भी हुए हैं जिनसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सरकार के पक्ष में झुके हुए दिखाई दिए। शायद, उन्होंने सरकार को नाराज करना उचित नहीं समझा। इनमें से एक निर्णय अयोध्या प्रकरण का था जिसका निर्णय करने वाली बेंच में वे शामिल थे। उन्होंने अपने निर्णय में यह मानने के बावजूद कि विवादित स्थल पर स्थापित मस्जिद तोड़ने का कार्य एक आपराधिक कृत्य था, उस भूखण्ड को, दूसरे पक्ष को मंदिर बनाने हेतु आवंटित करने का निर्णय दिया। शायद इस प्रकार का निर्णय लेते समय बहु संख्यक समाज की भावनाओं का ध्यान रखा गया होगा, किंतु यह निर्णय उनकी छवि के अनुरूप नहीं था।

इसी प्रकार ज्ञानवापी मस्जिद के प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई करने के दौरान, 1991 में बने इस कानून के बावजूद कि 1947 के पश्चात देश के किसी भी धर्म स्थल के स्वरूप को परिवर्तित नहीं किया जाएगा, उन्होंने ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वेक्षण कराने हेतु इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को सही माना। जब किसी का स्वरुप बदला ही नहीं जा सकता है तो फिर इसका सर्वेक्षण कराकर क्या हासिल किया जाना है? क्या इस प्रकार के सर्वेक्षण से अनेक प्रकार के विवादों को जन्म देने का रास्ता नहीं खोल दिया गया? ऐसा देखा गया है कि मुख्य न्यायाधीश बनने के पश्चात कई न्यायाधीश अलग ही रूप अपना लेते हैं एवं उनका कहीं अधिक निष्पक्ष एवं साहसिक रूप उभर कर सामने आता है। यही आशा अब डॉ चंद्रचूड़ से है। सामान्य नागरिक अपेक्षा कर रहा है कि अब तक आम नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों की रक्षा जिस प्रकार की है, उसी प्रकार बिना किसी अपवाद के, भविष्य में ऐसा करते रहेंगे। ऐसा करने से सरकार प्रसन्न हो अथवा नहीं।

डॉ. चंद्र चूड़ का मुख्य न्यायाधीश बनना संभवतया प्रधानमंत्री को बहुत पसंद नहीं आया, क्योंकि उन्होंने इनके शपथ ग्रहण समारोह में भाग नहीं लिया। इससे पहले गत आठ वर्षों में केवल एक बार प्रधानमंत्री तब शपथ ग्रहण समारोह में शामिल नहीं हुए थे जब श्री टी एस ठाकुर ने मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ ली थी। इनके अतिरिक्त अन्य सभी मुख्य न्यायाधीशों के शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री उपस्थित रहे। कहा जाता है कि ठाकुर भी कई बार प्रधानमंत्री एवं सरकार की आलोचना कर चुके थे एवं इसी कारण प्रधानमंत्री शामिल नहीं हुए। इस बार भी प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति को इसी तरह से देखा जा रहा है। स्पष्ट है कि चंद्रचूड़ का मुख्य न्यायाधीश बनना वर्तमान सरकार एवं प्रधानमंत्री की इच्छा के अनुरूप न हो, किंतु कॉलेजियम प्रणाली के कारण शायद इसे रोक पाना सरकार के लिए संभव नहीं हो पाया।

आगामी कुछ दिनों में कई महत्वपूर्ण प्रकरणों में सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई होगी और उन पर निर्णय दिये जाएंगे। इनमें प्रमुख हैं, संविधान के अनुच्छेद 370 की संवैधानिकता, सी ए ए (नागरिकता संशोधन कानून) की वैधता, नोट बंदी के निर्णय की प्रक्रिया की समीक्षा, एवं राफेल खरीद प्रकरण आदि इन सभी प्रकरणों में सरकार को अपना दृष्टिकोण सर्वोच्च न्यायालय के सम्मुख रखना होगा और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संविधान और कानून के दायरे में रहते हुए इन पर उनका परीक्षण करने के पश्चात अपना निर्णय दिया जाएगा। अब देखना यह है कि ये प्रकरण किस संविधान पीठ के पास भेजा जाता है? पिछले दो-तीन वर्षों से ये सभी अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकरण सुनवाई पर भी नहीं लिए गए थे। नए मुख्य न्यायाधीश ने शपथ ग्रहण के पश्चात ही स्पष्ट कर दिया कि वह आम नागरिक को उच्चतम प्राथमिकता देने का काम करेंगे। स्पष्ट है, उनके लिए सर्वोच्च प्राथमिकता सरकार की नहीं, अपितु आम नागरिक की है। यह नागरिक और लोकतंत्र, दोनों के लिए शुभ संकेत है। देशवासियों को अपेक्षा है कि नए मुख्य न्यायाधीश अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप सरकार के तानाशाही रवैये पर अंकुश लगाएंगे ताकि उसे, विशेषकर अल्पसंख्यक वर्ग को गरिमा पूर्ण जीवन जीने हेतु पर्याप्त समुचित संरक्षण प्राप्त हो सके।

डॉक्टर चंद्रचूड़ को मुख्य न्यायाधीश पद पर नियुक्त होने की बधाई देते हुए उन्हें आम नागरिक की अपेक्षाओं के अनुरूप खरा उतरने के हेतु अनेकानेक शुभकामनाएं!

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

147वीं जयन्ती पर विशेष

आदिवासी नायक "बिरसा मुण्डा"

यादराम सिंह यादव

प्राचीनकाल में आदिवासी जमीन के मालिक थे। इनकी देश के अनेक हिस्सों में हुकुमत थी। धीरे-धीरे इनकी जमीनें छीन ली गयी और इनका कई प्रकार से शोषण हुआ। ईसाई मिशनरियों ने आदिवासियों का धर्म परिवर्तन कराय जिससे विद्रोह के रूप में आन्दोलन हुए।

बिहार में जन्में बिरसा ने न केवल विदेशीयों के विरूद्ध झण्डा बुलन्द किया, बल्कि अपने देश के जमींदारों, जागीरदारों व सूदखोरों (दिकुओं) के विरूद्ध आवाज उठायी। उन्होंने विदेशियों द्वारा फैलाये जा रहे ईसाई धर्म के खिलाफ आवाज उठायी और उसकी काट में अपने नये धर्म बिरसायत (बिरसा पंथ) प्रारम्भ किया। जिसके देवता 'सिंग बौगा' की पूजा एवं आराधना की जाती है। बिरसा पंथ के हजारों-लाखों अनुयायी बने। इसमें युवा भी शामिल हुए, जिन्हें नानक कहा जाता था। मुण्डा (जवान) नाम आदिवासी संस्कृति का नाम है।

बिरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 को माता 'कार्मीहातु' पिता-'सुगना' एक गरीब खेतिहर कृषक के घर में, ग्राम 'उलिहातु' रांची हाल झारखंड प्रान्त में हुआ था। बिरसा के जन्म के दो वर्ष बाद माता-पिता का साथ छूट गया और ननिहाल के गांव 'चालकाद' में जाना पड़ा। बिरसा की प्राथमिक शिक्षा-दीक्षा 'चाईबासा' के एक जर्मन मिशनरी स्कूल में हुयी।प्राथमिक शिक्षा के बाद अपने गांव 'चालकाद' लौटे। आगे की पढ़ाई नहीं हो सकी।

बिरसा मुण्डा अंधविश्वासों को दूर करने का बीड़ा उठाया। सन् 1896 में फैली चेचक की महामारी दौर में अनेक कष्ट झेलकर लोगों की मदद की। इससे वहाँ के लोगों में बिरसा के प्रति सम्मान व आदर की भावना जागी। बिरसा मुण्डा को 'धरती बाबा' (भगवान) पुकारा जाने लगे। हजारों लोग इनको 21 वर्ष की आयु में बिरसा भगवान कहने लगे थे। बिरसा मुण्डा ने आदिवासियों को समझाया कि, आदिवासियों का बेगार एवं ऊँची लगान से जमींदारों, सूदखोरों तथा अंग्रेजों द्वारा शोषण किया जा रहा है।

सन् 1895 में छः हजार आदिवासी लोगों की एक सशस्त्र भीड़, अंग्रेजों के विरूद्ध आक्रमण के लिए 'चालकाद' में इकट्ठी हुयी। सुबह आक्रमण करने की योजना बनायी थी किन्तु उसी समय रांची के पुलिस अधीक्षक पुलिस फोर्स के साथ अचानक गांव पहुँच गये और बिरसा मुण्डा को गिरफ्तार कर लिया। बाद में बिरसा को राजद्रोह के आरोप में ढ़ाई वर्ष का कारावास की सजा हुयी। जेल से लौटने के पश्चात् बिरसा शान्त नहीं बैठे। उनके दिल-दिमाग में अंग्रेजी शासन के खिलाफ क्रान्ती मची हुयी थी। उनके निर्देशन में युवा मुंडाओं को संगठित कर धनुष बाण चलाने का प्रशिक्षण देते और उन्हें पूरी तरह उत्साहित करते। खूंटी बस्ती उनका मुख्यालय था। दो वर्ष की अच्छी तैयारी व संगठन के बाद सन् 1899 में बिरसा का आन्दोलन पुनः तेज हो गया और आदिवासीयों का ऐका कर आर-पार की लड़ाई करने की ठान ली।

बिरसा ने अपने हजारों क्रान्तीकारी सहयोगी साथियों के साथ खूंटी पुलिस थाने पर 01 दिसम्बर, 1899 को हमला बोल दिया और पुलिस के सिपाही भाग खड़े हुए। खूंटी क्षेत्र पर बिरसा का कब्जा हो गया। अंग्रेजों ने, दिल्ली एवं कलकत्ता से सेना बुलायी तथा पुलिस के साथ मिलकर 9 जनवरी, 1900 को आदिवासियों के स्वतंत्रता आन्दोलन को कुचलने के लिए खूंटी व रांची पर जवाबी हमला कर दिया। इतनी बड़ी सेना व पुलिस के आधुनिक हथियारों के सामने तीर चलाने वाले आदिवासी कैसे मुकाबला कर सकते थे। अंग्रेजी सेना ने आदिवासियों को अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलाकर भून दिया। जिसमें हजारों लोग मारे गये। बाद में दो डोका व मांझिया नाम के आदिवासी नेताओं ने समर्पण कर दिया। इसमें 581 बिरसायत गिरफ्तार किये, जिनमें से 13 लोगों को फांसी की सजा तथा शेष को काले पानी की सजा व आजीवन कारावास की सजा दी गयी। बिरसा अंग्रेजी सेना की पकड में नहीं आये।

अंग्रेजों ने कुछ आदिवासियों को पांच सौ रुपये के इनाम का लालच देकर बिरसा को सिंह भूमि के जंगलों से पकड़ने भेजा। इन गद्दार आदिवासियों ने ही बिरसा को पकड लिया और पुलिस को सौंप कर गिरफ्तार करा दिया। इन्हें रांची की जेल में डाल दिया। बिरसा के अनुयायियों को गांव-गांव-कस्बों से ढूँढ़-ढूँढ़ कर यातनाएँ दी गयी। उनकी जमीनें छीन ली गयी। घरों में आग लगा दी गयी। औरतों की अस्मत लूटी गयी।

रांची की जेल में कैद बिरसा मुण्डा की 9 जून, 1900 को हैजे से मृत्यु का समाचार दिया गया। बताया जाता है कि उनकी मृत्यु खाने में जहर मिलाने से हुयी थी। मृत्यु से पूर्व रांची जेल में मिलने गये उनके साथियों से बिरसा मुण्डा ने कहा था कि राजा, जमींदार, ठेकेदार, महाजन व हाकिमों को उखाड़ फेंकने के लिए तथा तुम्हें गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए फिर वापिस आऊँगा। एक स्वतंत्र मुण्डा राज्य की स्थापना के लिए हमारी लड़ाई खत्म नहीं हुयी है। मैं मुण्डा आदिवासियों के मुक्ति आन्दोलन (उलगुलान) के लिए फिर लौटूँगा। अंग्रेजी पुलिस व जेलर बिरसा के डर से कांपते थे।

शहीद बिरसा मुण्डा को झारखंड व बिहार के लोग आज भी बड़ी श्रद्धा व विश्वास से याद करते हैं। उनके साहस एवं निडरता की कहानी छोटा नागपुर में लोक कथाओं व लोक संगीत के द्वारा घर-घर में गाये व सुनाये जाते हैं। आदिवासियों के लिए उनके द्वारा किये गये त्याग एवं बलिदान को हमेशा स्मरण किया जायेगा। हमारे देश की संसद में अमर शहीद बिरसा मुण्डा का सुन्दर चित्र तथा परिसर में बिरसा के 'उलगुलान' की प्रतीक प्रतिमा लगी हुयी है। झारखंड एयरपोर्ट, रांची जेल एवं विश्वविद्यालय आदि का नामकरण बिरसा मुण्डा के नाम पर ही रखा गया हैं। भारत सरकार के डाकतार विभाग ने 15 नवम्बर, 1988 को उनकी स्मृति में एक डाक टिकिट जारी कर सम्मान दिया है। शहीद बिरसा मुण्डा ने केवल 25 वर्ष की कम आयु में इतना बड़ा कार्य किया है जो इतिहास में सुनहरी अक्षरों में हमेशा के लिए लिखा रहेगा। आओ ऐसे वीर, योद्धा, देशभक्त, बलिदानी तथा आदिवासियों के गुरु-भगवान बिरसा मुण्डा के जन्म दिवस पर दो लाइनों से नमन करते हैं-

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे, हर बरष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।"

- यादराम सिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं पत्रकार

छह दिसम्बर से मारवाड़ी अश्वों पर खेला जाएगा शाही गेम पोलो

- **इस सेशन में चार टूर्नामेंट के अलावा आठ प्रदर्शनी मैच भी खेले जाऐंगे**

जोधपुर, (कासं)। शहर में छह दिसम्बर से शुरू होने वाले पोलो सीजन को लेकर तैयारियां आरंभ हो गई। मारवाड़ी अश्वों पर घुड़सवार इस गेम को खेलते है जो कि शाही अंदाज का एक प्रतीक है।

इस सेशन में चार टूर्नामेंट के अलावा आठ प्रदर्शनी मैच भी खेले जाएंगे। जोधपुर पोलो एंड इकवेस्ट्रीयन इंस्टीट्यूट की तरफ से यह सेशन महाराजा गजसिंह स्पोर्ट्स फाउंडेशन के पोलो मैदान पर आयोजित होगा। इस सेशन में देश के नामचीन खिलाड़ी अपने खेल कौशल को प्रदर्शित करेंगे।

चार गोल के उम्मेद भवन पैलेस कप पोलो के साथ छह दिसम्बर से जोधपुर पोलो सेशन की शुरुआत होगी। आठ गोल का महाराजा ऑफ जोधपुर कप पोलो टूर्नामेंट 14 से 18 दिसम्बर के बीच खेला जाएगा।

वहीं राजपुताना एंड सेंट्रल इंडिया कप और महाराजा ऑफ जोधपुर गोल्डन जुबली कप दस-दस गोल के टूर्नामेंट होंगे। ये टूर्नामेंट 19 से 24 व 27 से 31 दिसम्बर तक खेले जाएंगे। 29 दिसम्बर को इंडियन एयर फोर्स लोंगेवाला पोलो कप आयोजित होगा। इसी दिन इंडियन एयर फोर्स एयर शो भी करेगा।

जोधपुर ने न केवल पोलो को एक से बढक़र एक नामचीन खिलाड़ी दिए है बल्कि पोलो को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई। महाराजा सर प्रताप, महाराज प्रेम सिंह, राव राजा हनूत सिंह, कर्नल किशन सहित कई खिलाड़ी देश-विदेश में अपने खेल के दम पर अलग पहचान कायम कर चुके है।

आजादी से पूर्व जोधपुर में छह पोलो मैदान हुआ करते थे। अब वर्ष 2000 से एयरपोर्ट पर नए पोलो मैदान पर मैच खेले जाते हैं।

12वीं के स्टूडेंट कार्तिक ने चाचा नेहरू की तस्वीर बनाई

चित्रकार कार्तिक ने चाचा नेहरू की हू-ब-हू तस्वीर उकेरी।

चिड़ावा, (निसं)। आप जो तस्वीर देख रहे है वो कोई फोटो नहीं बल्कि एक बाल कलाकार द्वारा बनाई गई कलाकृति है।

जी हां शहर के निजी विद्यालय लोहिया स्कूल के छात्र ने ये कमाल की चित्रकारी की है। शहर की पुरानी बस्ती स्थित श्याम मंदिर के पास रहने वाले शिक्षक प्रदीप - कविता सोनी के पुत्र कार्तिक सोनी की बचपन से ही चित्रकारी में रुचि रही है। बाल दिवस इस चित्र को बनाने में कार्तिक को करीब ढाई घंटे लगे। चित्र इतनी बारीकी से बनाया गया है कि चित्र को देखकर ऐसा लगता है कि मानो अभी तस्वीर बोल उठेगी। कार्तिक ने चित्र बनाने में मोबाइल पर तस्वीर को देखा और देखा और उसे उकेरा।

कार्तिक को क्रिकेट काफी पसंद है और उसमें भी पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के तो वे काफी मुरीद हैं। ऐसे में उन्होंने सबसे पहले महेंद्र सिंह धोनी की तस्वीर देखकर उनका चित्र बनाया। इसके बाद कार्तिक ने अपनी लाडली छोटी बहन श्रेष्ठा सोनी का भी बहुत मनमोहक चित्र बनाया। हाल ही में पूर्व केंद्रीय मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर भी कार्तिक ने सरदार पटेल का चित्र भी बनाया। वे लगातार अपनी चित्रकारी कला में निखार लाने में जुटे हुए हैं।

भारत के प्रथम भाप रेल इंजन की लाइव प्रदर्शनी

- **बेसिक पी.जी. कॉलेज में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित**

अजमेर, (कास)। लोको कारखाना, अजमेर के मुख्य द्वार पर स्थापित 1873 में निर्मित आई एस आर 421. शंटिंग लोको के पहियों और अन्य मुख्य पार्टस को पेडस्टल पर रखे रखे रेल इंजन को भाप से चलाया गया जिसकी पूर्व सूचना समाचार पत्रों के माध्यम से दी गयी थी। साथ ही कारखाने के संक्षिप्त इतिहास को छायाचित्रों के माध्यम से आमजन के लिए प्रदर्शित किया गया ताकि ऐसे नागरिक जिन्होने भाप इंजन की कार्य प्रणाली को नहीं देखा है उनके स्वभाविक कौतहूल का निदान हो सके।

यह कार्यक्रम प्रातः 11 बजे से सायं 05 बजे तक रखा गया जिस पर आमजन ने पर्याप्त रुचि दिखाते हुए जम कर भाग लिया। प्रदर्शनी में भाग लेने वाले दर्शकों में काफी संख्या में युवक युवतियाँ भी शामिल थे, अतः पूरी प्रदर्शनी के दौरान समय-समय पर रेल कौशल विकास योजना के बारे में भी सूचना दी गई। इस दौरान रेलवे की आन्तरिक सांस्कृतिक टीम ने देश भक्ति एवं रेल से संबंधित गीतों की भी प्रस्तुति दी, इस प्रदर्शनी को लगभग 900 से 1000 लोगों ने देखा जिसमें लगभग 200 स्कूली बच्चे एवं अभिभावक भी शामिल थे।

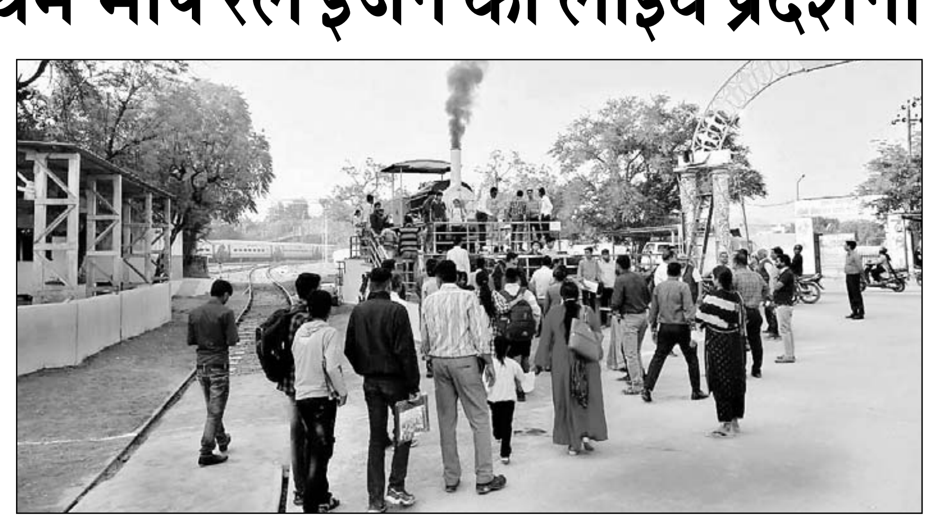
भाप के रेल इंजन को देखने उमडे शहर के लोग।

डिस्कॉम ने 9.5 करोड़ का राजस्व कमाया

अजमेर, (कासं)। डिस्कॉम ने लोक अदालत के माध्यम से 9597 मामलों का निस्तारण किया। इन प्रकरणों से डिस्कॉम को 9.5 करोड़ रुपयों की राजस्व प्राप्ति होगी।

प्रबंध निदेशक निर्वाण ने बताया कि स्थायी कनेक्शन विच्छेद वाले प्रकरणों में अजमेर सिटी सर्किल में 112 उपभोक्ताओं से 10.38 लाख रुपये, अजमेर जिला सर्किल में 128 उपभोक्ताओं से 14.99 लाख रुपये, भीलवाड़ा सर्किल में 220 उपभोक्ताओं से 22.54 लाख, नागौर सर्किल में 693 उपभोक्ताओं से 1.14 करोड़, झुंझुनू सर्किल में 946 उपभोक्ताओं से 1.29 करोड़, सीकर सर्किल में 1534 उपभोक्ताओं से 1.77 करोड़, बांसवाड़ा सर्किल में 440 उपभोक्ताओं से 23.38 लाख चित्तौड़गढ़ सर्किल में 2080 उपभोक्ताओं से 01.16 करोड़, डूंगरपुर सर्किल में 492 उपभोक्ताओं से 29.23 लाख अजमेर डिस्कॉम को राजस्व की प्राप्ति होगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 15 नवम्बर, 2022

मार्गशीष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, पुष्य नक्षत्र सांय 4:13 तक, शुक्ल योग रात्रि 12:3 तक, विष्टि करण सांय 4:37 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृष, बुध-वृश्चिक, गुरू-मीन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से 4:13 तक है। रवियोग सांय 4:13 तक रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सांय 4:13 से सूर्योदय तक है। भद्रा सांय 4:37 तक रहेगी।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:30 से 10:51 तक, लाभ-अमृत 10:51 से 1:32 तक, शुभ 2:52 से 4:12 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:50, सूर्यास्त 5:32

मेष
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य शीघ्रत और योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और अनावश्यक खर्च में वृद्धि होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगी।

पूर्व सैनिकों के समर्थन में आए गुढ़ा बोले, ''हरीश चौधरी के दिमाग में क्या है, ये समझ से परे है''

पूर्व सैनिक बोले, ''ये दु:ख का विषय कि जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग के नाम पर कुछ व्यक्ति या समूह निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए ऐसी मांग या सवाल खड़े करते हैं''

जयपुर, (का.प्र.)। ओबीसी आरक्षण में वर्गीकरण की विसंगति और पूर्व सैनिकों के कोटे को लेकर कांग्रेस विधायक हरीश चौधरी की मांग के खिलाफ अब राजस्थान के सैनिक कल्याण मंत्री खुलकर आ गए हैं। वहीं पूर्व सैनिकों ने भी धरना देकर ऐसा किए जाने को जाति, धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग के नाम पर कुछ व्यक्ति या समूह के निहित स्वार्थों की पूर्ति करने की साजिश बताया है।

हरीश चौधरी का कहना है कि सरकारी नौकरियों में ओबीसी वर्ग को 21 प्रतिशत आरक्षण प्राप्त है। पूर्ववर्ती भाजपा सरकार ने 17 अगस्त 2018 को एक नया नियम जोड़ा। इस नियम के तहत पूर्व सैनिकों को 12.5 फीसदी होरिजोंटल आरक्षण दिया गया। इस नियम की वजह से ओबीसी के अभ्यर्थियों के पदों पर पूर्व सैनिकों का कब्जा होने लगा है। ऐसे में ओबीसी वर्ग के मूल अभ्यर्थी सरकारी नौकरियों में चयनित होने से वंचित हो रहे हैं। चौधरी की इस मांग के बाद अब सैनिक कल्याण मंत्री राजेंद्र गुढ़ा ने पूर्व सैनिकों के समर्थन में उतरते हुए कहा कि हरीश चौधरी के दिमाग में क्या है, ये समझ से परे है लेकिन मैं पूर्व सैनिकों के अधिकारों पर कुठाराघात नहीं होने दूंगा। इसके लिए किसी भी हद तक जाना पड़ेगा तो मैं जाऊंगा।

हरीश चौधरी की मांग के विपरीत राजेंद्र गुढ़ा ने कहा कि सैनिक कल्याण विभाग मेरे पास है, इसलिए पूर्व सैनिकों के साथ कोई कुठाराघात नहीं होने दिया जाएगा। इस मामले के लिए चाहे किसी भी हद तक जाना पड़े, मैं जाऊंगा। यह हमारी देश की रक्षा के लिए बॉर्डर पर जान जोखिम में डालते हैं। देश की हिफाजत जिन लोगों के कंधे पर है, उनके हितों के साथ कोई भी कुठाराघात नहीं होगा। गुढ़ा ने कहा कि मैं उस जिले और शेखावाटी आता हूं जिसकी पहचान ही सेना से है। जिस तरीके से मोदी सरकार ने अग्निवीर और अग्निपथ लाकर सैनिक के ढांचे को ध्वस्त करने का काम किया है, इसके ऊपर दूसरा कुठाराघात राजस्थान की सरकार में नहीं होने देंगे। गुढ़ा ने कहा कि देश में आज के समय में कोई काम कर रहा है तो वो देश के सैनिक है। इनका काम सर्वोच्च है। नेता के ऊपर तो भ्रष्टाचार, जातिवाद और भाई भतीजावाद के आरोप लगते हैं, लेकिन हमारे सैनिकों में कोई जाति, कोई परिवार और कोई भाई-भतीजावाद नहीं है। वो निस्वार्थ देश की रक्षा करते हैं।

इस बीच सैनिकों के कोटे की मांग के विरोध में पूर्व सैनिक भी आ गए है। पूर्व सैनिकों ने कहा कि ये दु:ख का विषय है कि जाति, धर्म, सम्प्रदाय और वर्ग के नाम पर कुछ व्यक्ति या समूह अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए समय-समय पर ऐसी मांग या सवाल खड़े करते रहते हैं। ये सामाजिक सौहार्द्र और एकता को खंडित करता है। अब तो राजनैतिक स्वार्थ और वर्ग विशेष का नेता बनने के प्रयास में सैनिकों के खिलाफ सरकार पर गलत निर्णय लेने का दबाव बनाया जा रहा है। सिविल सेवाओं में पूर्व सैनिकों के लिए जारी नोटिफिकेशन 1988 के अनुसार अब तक बिना भेदभाव के पूर्व सैनिकों को 12.5 फीसदी और 15 फीसदी आरक्षण मिल रहा था। इसे चयनित पूर्व सैनिक से सम्बद्ध वर्ग को प्राप्त आरक्षित सीमा में समायोजित ग्रुप किया जाता रहा है।

राजस्थान के सभी जिलों से आये सैकड़ों पूर्व सैनिकों ने सोमवार को सैनिक विश्राम गृह, बनीपार्क जयपुर में एकत्रित होकर उनको प्राप्त आरक्षण में बदलाव के लिए विधायक हरीश चौधरी आदि द्वारा उठाई जा रही मांग का पुरजोर विरोध किया।

बच्चों की प्रतिभा संवेदनशीलता के साथ निखारें : आफरीदी

राजस्थान ललित कला अकादमी एवं पं. जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी की ओर से राज्य स्तरीय बाल दिवस समारोह में बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

जयपुर, (का.सं.)। राजस्थान ललित कला अकादमी एवं पं. जवाहर लाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय बाल दिवस समारोह में मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी एवं वरिष्ठ साहित्यकार फारूक आफरीदी ने कहा कि बच्चे देश की अमूल्य धरोहर हैं। इनके साथ संवेदनशील दृष्टिकोण रखना और उनकी प्रतिभाओं को निखारना समाज का दायित्व है। पं. जवाहर लाल नेहरू ने बच्चों के रचनात्मक विकास के लिए हमेशा प्रेरणा देते हुए उनके उत्थान को प्राथमिकता दी। बच्चों के हितों के लिए राज्य सरकार संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि बच्चों में एक-दूसरे के प्रति नफरत की भावना नहीं होती, उनमें कोई रंग भेद, जाति भेद, धर्म भेद नहीं होता। वे हम सबको एकता का संदेश देते हैं। इस अवसर पर आफरीदी ने पं. नेहरू बाल कवि सम्मान तथा चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को स्मृति चिन्ह एवं पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया। 14 बाल कवियों को 5100-5100 रुपए और 28 बाल चित्रकारों को एक-एक हजार रुपए के नकद पुरस्कार दिए गए।

> ■ बच्चों पर किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं होना चाहिए यह जिम्मेदारी शिक्षकों और अभिभावकों की समान रूप से है : अवधेश दिवाकर

कार्यक्रम के आरम्भ में नेहरू बाल साहित्य अकादमी के चैयरमेन इकराम राजस्थानी ने आगुन्तकों का स्वागत करते हुए कहा कि राजस्थान सरकार ने देश की पहली बाल साहित्य अकादमी का गठन कर एक नया इतिहास रचा है। हम अकादमी के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक कार्यक्रम आरम्भ करने जा रहे है।

राजस्थान ललित कला अकादमी के अध्यक्ष लक्ष्मण व्यास ने कहा कि चित्र प्रतियोगिता में नेहरू जी के सपनों के भारत को लेकर बच्चों ने जो चित्र उकेरे हैं वे स्वागत योग्य है। इस अवसर पर मेरे सपनों का भारत शीर्षक से 12 बच्चों ने स्वरचित काव्य पाठ कर श्रोताओं का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष अवधेश दिवाकर ने कहा कि बच्चों पर किसी भी प्रकार का अत्याचार नहीं होना चाहिए यह जिम्मेदारी शिक्षकों और अभिभावकों की समान रूप से है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डॉ. बी.एल. सैनी ने कहा कि राजस्थान सरकार बालकों के स्वास्थ्य शिक्षा पोषण एवं तकनीकी ज्ञान सहित सर्वांगीण विकास के लिए अद्भुत काम कर रही है और राजस्थान के बच्चे देश विदेश में प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं। अब यह काम नेहरू बाल साहित्य अकादमी के माध्यम से आगे बढ़ेगा।

प्रदेश में सोमवार को 36 नए करोना संकमित मिले

सबसे ज्यादा 14 मरीज जयपुर में पाए गए हैं

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में सोमवार को नए करोना संक्रमितों की संख्या में फिर वृद्धि हुई है। इस दौरान राज्य में 36 नए संक्रमित मिले हैं। वहीं इस बीच रिकवरी कम होने से एक्टिव केस बढ़कर 226 हो गए हैं।

प्रदेश में पिछले चौबीस घंटों में 7 जिलों में 36 नए संक्रमित मिले हैं। इससे पहले रविवार को 22 मरीज पाए गए थे। इधर राजधानी जयपुर में आज सबसे ज्यादा 14 नए संक्रमित सामने आए। इसके अलावा अजमेर में 9, राजसमंद में 8, सिरोही में 2 तथा सवाई माधोपुर, उदयपुर और अलवर में 1-1 नया संक्रमित मिला। इस बीच राज्य में 1127 जांचे की गई है।

प्रदेश में सोमवार को एक बार फिर रिकवरी में कमी आई है। इस दौरान राज्य में केवल 24 ही मरीज ठीक होने से एक्टिव केस बढ़कर 226 हो गए हैं। इस बीच राजधानी जयपुर में 7 मरीज ही रिकवर होने से एक्टिव केस बढ़कर 66 हो गए हैं। प्रदेश में सोमवार को लगातार पांचवें दिन भी करोना से किसी मरीज की मौत नहीं हुई है। हालांकि राज्य में अब तक इस बीमारी से 9648 लोगों की मौत हो चुकी है।

राजधानी जयपुर में सोमवार को 11 स्थानों पर नए संक्रमित मिले हैं। इनमें सर्वाधिक 3 मरीज सांगानेर में पाए गए हैं। इसके अलावा बस्सी में 2 तथा बनीपार्क, गलता गेट, जवाहर नगर, झोटवाड़ा, महेश नगर, निर्माण नगर, पुरानी बस्ती, सोड़ाला और विद्याधर नगर में 1-1 नया संक्रमित मिला है।

'सहकारी समितियां डिलीवरी सिस्टम को मजबूत करें'

जयपुर, (का.सं.)। रजिस्ट्रार सहकारिता, मेघराज सिंह रतनू ने कहा कि सहकारी समितियों के डिलीवरी सिस्टम को मजबूत करने के आवश्यकता है, तभी इसकी पहुंच सभी लोगों तक हो पाएगी। सहकारिता सेवा आधारित एक आंदोलन है, इसकी पहुंच को व्यापाक बनाने के लिए उच्च स्तर की सेवाएं दी जाए।

रतनू 69वें अखिल भारतीय सहकारी सप्ताह के अवसर पर कॉनफैड द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहकारिता क्षेत्र में इज ऑफ डूईग बिजनेस, जैम और निर्यात संवर्धन विषय पर संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि समय के साथ सहकारी समितियों को अपनी कार्यशैली में भी परिवर्तन करना होगा तथा नई सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। सहकारिता के प्रति लोगों में विश्वास बनाये रखने के लिए गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान की जाये।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने हाल ही में सहकारिता मंत्रालय का गठन किया है और नई सहकारिता नीति भी प्रक्रियाधीन है। ऐसे में आने वाले समय में सहकारिता का दायरा बढ़ेगा एवं इसके माध्यम से दी जाने वाली सेवाओं में भी वृद्धि होगी। अत:नई तकनीक एवं लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान में रखते हुए सहकारी समितियां अपने कार्यों को अंजाम दे।

इस अवसर पर अतिरिक्त रजिस्ट्रार प्रथम राजीव लोचन शर्मा, एसएलडीबी के प्रबंध निदेशक विजय शर्मा, कॉनफैड के प्रबंध निदेशक दिनेश शर्मा सहित बड़ी संख्या में सहकार जन उपस्थित थे। कॉनफैड के महाप्रबंधक अनिल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दुष्कर्म के दो मामलों में तीन अभियुक्तों को सजा

जयपुर, (का.सं.)। पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-1 महानगर द्वितीय ने नाबालिग के साथ दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त शाहरुख कुरेशी और आरिफ कुरेशी को सात साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्तों पर कुल 24 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। अदालत ने मामले में दो लोगों को बरी भी किया है। वहीं महानगर द्वितीय की पॉक्सो कोर्ट ने नाबालिग का अपहरण कर दुष्कर्म करने वाले अभियुक्त सोनू राज यादव को बीस साल की सजा सुनाई है। अदालत ने कहा कि नाबालिग की सहमति कानून में कोई महत्व नहीं रखती है।

राजस्थान में बेरोजगार युवाओं से छल करना बन चुका सरकारी ट्रेंड : शेखावत

जयपुर। विद्या संबल योजना स्थगित होने पर केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने राजस्थान सरकार पर तीखा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान में बेरोजगारों युवाओं से छल करना सरकारी ट्रेंड बन चुका है।

> ■ विद्या संबल योजना स्थगित होने पर केंद्रीय जलशक्ति मंत्री का सरकार पर प्रहार

सोमवार को ट्वीट कर शेखावत ने कहा कि गहलोत जी यथास्थितिवादी हैं। वे कुछ नहीं बदलना चाहते। न सिस्टम को, न खुद को। रोजगार देने की बात राजनीतिक लाभ के लिए की जाती है। हकीकत में योजनाओं का न बजट होता, न ब्लू प्रिंट।

इससे पहले, वनरक्षक सीधी भर्ती का पेपर लीक होने पर शेखावत ने कहा कि हम पर्चा लीक रोकने में सक्षम नहीं हैं। द्वितीय पारी का पेपर लीक होने संबंधी पत्र के जरिए गहलोत सरकार अपरोक्ष तौर पर यही कहना चाह रही है। कायदे से इस तरह की स्वीकारोक्ति के बाद गहलोत जी को युवाओं से माफी मांगनी चाहिए कि रोजगार देना हमारे बस का नहीं। हमें आपसे ज्यादा राहुल जी और अपने भविष्य की चिंता है।

प्रदेश के लाखों बेरोजगार युवाओं के साथ धोखा : राजेन्द्र राठौड़

जयपुर। उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़ ने ट्वीट कर कहा कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा में पेपर लीक के बाद अब विद्या संबल योजना के तहत गेस्ट फैकल्टी शिक्षकों के पदों पर भर्ती प्रक्रिया का स्थागित होना प्रदेश के लाखों बेरोजगार युवाओं के साथ धोखा है।

राठौड़ ने कहा कि प्रशासनिक लापरवाही के कारण विद्या संबल योजना में स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पदों की भर्ती में संवैधानिक प्रावधानों की अवहेलना करते हुए आरक्षण का प्रावधान ही नहीं रखा गया जिस पर विभिन्न संगठनों ने आपत्ति भी दर्ज कराई थी।

राठौड़ ने कहा कि शुरूआती दौर से विरोध का सामना कर रही यह भर्ती प्रक्रिया आरक्षण संबंधी प्रावधानों के साथ व गेस्ट फेकल्टी के स्थान पर स्थायी रूप से कराई जाती तो युवाओं के साथ ऐसा छल नहीं होता और उनके हितों पर कुठाराघात नहीं होता। राठौड़ ने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस सरकार द्वारा पहले नौकरियां निकालना और फिर उन्हें रद्द किया जाना भर्ती प्रक्रियाओं में एक नई परिपाटी की शुरुआत करने जैसा है। इससे भर्ती प्रक्रियाओं के नाम पर अपने को ठगा महसूस करने वाला युवा बेरोजगारी के दलदल में फंसता जा रहा है। वक्त आने पर युवा कांग्रेस सरकार को इसका माकूल जवाब देगा।

पुलिस कर्मियों को रोडवेज मासिक पास 200 रु. में ही मिलेगा

जयपुर। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा राजस्थान पुलिस कॉन्स्टेबल को रियायती दरों पर रोडवेज का मासिक पास उपलब्ध कराने की घोषणा के क्रम में गृह विभाग ने संबंधित आदेश जारी कर कॉन्स्टेबल से पुलिस निरीक्षक स्तर के कार्मिकों के लिए अंशदान पूर्व की भांति प्रतिमाह 200 रुपये निर्धारित किया है। निर्धारित 300 रुपये में से शेष 100 रुपये की राशि का अंशदान राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।

महानिदेशक पुलिस उमेश मिश्रा ने बताया कि पुलिस कर्मियों के व्यापक कल्याण के उद्देश्य से पुलिस मुख्यालय के अनुरोध को स्वीकार करते हुए पुलिस कर्मियों का अंशदान 300 रुपये से कम करके 200 रुपये ही निर्धारित किया गया है। उल्लेखनीय है कि रोडवेज प्रशासन ने अंशदान राशि को बढ़ाकर 500 रुपये प्रतिमाह की एवं इसमें से 300 रुपये का अंशदान पुलिसकर्मी से एवं 200 रुपये का अंशदान राज्य सरकार से पुनर्भरण करने का प्रावधान किया गया था।

जवाहर सर्किल पर बेशकीमती जमीन की नीलामी पर रोक

जयपुर, (का.सं.)। जेडीए अपीलीय अधिकरण ने जवाहर सर्किल पर स्थित जेडीए की सात हजार एक सौ वर्गमीटर व्यावसायिक जमीन की नीलामी पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही अधिकरण ने मामले की सुनवाई 11 जनवरी को रखी है। अधिकरण ने यह आदेश पुष्पेन्द्र कुमार मुकीम के प्रार्थना पत्र पर दिए। अधिकरण ने पूछा है कि विवादित भूखंड के नीचे बीसलपुर और सीवरेज पाइप लाइन गुजरने का होने वाले निर्माण पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा या नहीं? इसके साथ ही पूर्व में प्रस्तावित गोल मार्केट योजना को किन तकनीकी आधारों पर निरस्त किया गया।

प्रार्थना पत्र में अधिवक्ता सोहन सिंह सोलंकी ने कहा कि जेडीए की ओर से जवाहर सर्किल पर स्थित खसरा नंबर 93 और 94 की सात हजार एक सौ वर्गमीटर जमीन की नीलामी 16 नवंबर को प्रस्तावित है। इसी भूखंड पर जेडीए ने पूर्व में गोल मार्केट प्रस्तावित किया गया था और वहां के भूखंडों को अन्य जगह समायोजित किया गया था। वहीं बाद में वीआईपी सुरक्षा और यातायात के कारणों से योजना को निरस्त कर दी गई। प्रार्थना पत्र में कहा गया कि इस भूखंड से बीसलपुर की भूमिगत पाइप लाइन और सीवरेज लाइन भी गुजर रही है। वहीं गोकुल वाटिका की चालीस फीट मुख्य रोड के हिस्से को भी इस भूखंड में शामिल कर लिया गया। वहीं जेडीए की ओर से अधिकरण को मामले में क्षेत्राधिकार नहीं होने की आपत्ति पेश की गई और मामले में विस्तृत बहस करने की मंशा जताई। इस पर अधिकरण ने नीलामी पर रोक लगाते हुए मामले की सुनवाई 11 जनवरी को तय की है।

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

मुकेश दाधीच निर्विरोध निर्वाचित

जयपुर। उत्तर-पश्चिम रेलवे द्वारा जयपुर स्थित रेलवे सामुदायिक भवन में क्षेत्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्श दात्री समिति की 20 वीं बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान राष्ट्रीय रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री परिषद के सदस्य का चुनाव किया गया जिसमें भारतीय जनता पार्टी राजस्थान के प्रदेश उपाध्यक्ष मुकेश दाधीच निर्विरोध सदस्य चुने गए।

मुकेश दाधीच को निर्वाचन अधिकारी एवं रेलवे महाप्रबंधक विजय शर्मा ने निर्वाचन पत्र प्रदान किया। मुकेश दाधीच ने निर्विरोध चुने जाने के लिए सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया एवं कहा कि वे जनता की रेलवे से जुड़ी समस्याओं को निरंतर हल करवाने का प्रयास करते रहेंगे।

बाड़मेर-जयपुर ट्रेन के मथुरा तक बढ़ाने के बाद पहली बार जयपुर से सांसद रामचरण बोहरा ने इस ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि यह कि एक फ्लैट G-103, B-27-A, जो कि आम्रपाली नगर, गांधी पथ वेस्ट, वैशाली नगर में स्थित है, जिस पर मैंने एवं मेरे पिताजी श्री राजेश कुमार शर्मा ने एच.डी.एफ.सी. लिमिटेड से ऋण लिया हुआ था तथा उक्त फ्लैट के समस्त असल दस्तावेज एच.डी.एफ.सी. लिमिटेड में रहन (MORTGAGE) कर रखे हैं।
यह मेरे पिताजी का दिनांक 20.09.2019 को स्वर्गवास हो चुका है तथा उक्त फ्लैट के पेटे लिए हुए ऋण की पूर्ण अदायगी एच.डी.एफ.सी. लिमिटेड को की जा चुकी है, इसलिए अब मैं उक्त फ्लैट के असल दस्तावेज को प्राप्त करना चाहता हूँ। यदि इस सम्बन्ध में किसी भी व्यक्ति, संस्था, फर्म इत्यादि को किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति है तो मय दस्तावेज प्रकाशन तिथि से सात दिवस तक की अवधि में एच.डी.एफ.सी. जगतपुरा रोड, होम लोन ब्रान्च, जयपुर (फोन नम्बर-0141-6480799) में सम्पर्क करें। सूचित रहे।
दिनांक-13/11/2022 मनोज शर्मा
निवासी-जयपुर मो.नं. 9782042239

खोया पाया

मेरे खरीद शुदा मानसरोवर जयपुर स्थित भगवान दास के नाम से आवंटित आवास संख्या 43/11/03, का मूल कब्ज़ा पत्र घर से बोर्ड ऑफिस के मध्य कहीं गिर गया है मिलने पर सूचित करें। मिनाक्षी बांगा 7597666868

मेरा मकान संख्या 85/108 आर.एच.बी. प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर द्वारा जारी समस्त ओरिजनल दस्तावेज एंव रजिस्ट्री मुझसे कही गुम हो गई है मिलने पर सूचित करें वरसी बाई मो. 8279214667

आम-सूचना मेरे मुवक्किल श्री मोहम्मद रफीक पुत्र श्री पीर खां उम्र 50 वर्ष जाति मुसलमान निवासी मकान नं. वी.वी. 231, वन विहार कच्ची बस्ती, दिल्ली रोड बाईपास रोड, ईदगाह, जयपुर (राज.) जिनका पुत्र फैसल खान जिसका मेरे मुवक्किल के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता है ना ही आवश्यक खर्चे जैसे पानी, बिजली, टैक्स वगैराह के बिल जमा करवाता है। एवं मेरे मुवक्किल के विपरित कार्य करता है। यह कि इसलिए मेरे मुवक्किल ने अपने पुत्र फैसल खान को अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। सभी लोगों को मेरे मुवक्किल द्वारा आम सूचना दी जाती है कि कोई भी मेरे मुवक्किल के पुत्र से सव्यवहार करेगा तो उसके लिए मेरे मुवक्किल कि कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।
जयपुर MINHAJ ABUZAR MANSOORI
दिनांक-14.11.2022 M.N. 9782444622

सम्पत्ति-क्रय-विक्रय

इंद्रागांधीनगर/मालवीयनगर/सिद्धार्थ नगर/प्रतापनगर, (JLN-रोड/ रिंगरोड़), जगतपुरा/मॉडलटाउन आसपास सभी हाउसिंगबोर्ड कॉलोनी, सेक्टर-रेजिडेंशियल/कमर्शियल/एग्रीकल्चर/ इण्ड्स्ट्रियल/ हॉस्पिटल/इन्स्टीट्यूशन्स/ फार्महाउसेस/रिसोर्ट, लेण्डस -(बेचने-खरीदने) हेतुः-भावना एंटरप्राइजेज, रियलिटी चेम्बरः-7599912345

राजस्थान आवासन मंडल, वृत प्रथम, प्रताप नगर जयपुर
क्रमांक : 11790 **जाहिर आम सूचना** दि. 14.11.2022
राजस्थान आवासन मण्डल की मुख्यमंत्री जन आवास योजना सेक्टर-26 प्रताप नगर सांगानेर जयपुर में आवेदक सुश्री मंजू कंवर पुत्री श्री मांगु सिंह द्वारा आवेदन क्रमांक RHB/029028 आर्थिक दृष्टि कमजोर आय वर्ग में आवास आवंटन हेतु निवेदन किया गया था। मण्डल नियमानुसार वरियता लॉटरी दिनांक 25.01.2022 के द्वारा वरियता क्रमांक P-30/G-I.I/HPS/EWS/Sec/26/2021 निर्धारित किया जाकर पूर्व ग्रहण राशि मांग क्रमांक 8415 दिनांक 20.09.2022 जारी किया गया था। सुश्री मंजू कंवर की मृत्यु दिनांक 14.05.2022 को हो जाने के कारण उनकी माता जी श्रीमती मनवर कंवर पत्नी श्री मांगु सिंह द्वारा आवासन मण्डल में अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया हैं। अत: उक्त पंजीकरण का हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अद्योहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही हैं, श्रीमती मनवर कंवर पत्नी श्री मांगु सिंह का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
भवदीय
संपदा प्रबंधक, वृत प्रथम, राज. आवा. मं. जयपुर

नाम परिवर्तन

मैं (कमल कुमार) अपने पुत्र का नाम प्रियांश लालवानी से बदलकर पवन लालवानी कर लिया है अतः भविष्य में इसी नाम से जाना जाये। 120/42, विजयपथ, मानसरोवर, जयपुर।

मेरे पुत्र देव जैन की CBSE दसवीं अंकतालिका (RN. 11172617) में सौतेली माता का नाम संगीता जैन दर्ज है जबकि उसकी वास्तविक माता का नाम कविता जैन है। (उसकी दोनों माताओं का स्वर्गवास हो गया है) अतः भविष्य में उसकी माता का नाम कविता जैन पत्नी अशोक कुमार जैन जाना जाये।

मैं आर्मी नं. No. 15614160P-रेंक-HAV. नाम DEVENDRA SINGH यूनिट 3 Guards (1 Raj Rif) C/o 56 APO मेरे सर्विस रिकॉर्ड में मेरी पुत्री का नाम BHAVANA KUSANA गलत दर्ज है जबकी सही नाम BHAWNA KASANA है, समान दर्ज करें।

मैं चन्दन कुमार शर्मा पुत्र श्री ओम प्रकाश शर्मा निवासी प्लाट नम्बर एफ-8/89, चित्रकुट, वैशाली नगर, जयपुर ने अपना नाम चन्दन कुमार से बदलकर चन्दन कुमार शर्मा रख लिया है भविष्य में मुझे चन्दन कुमार शर्मा के नाम से जाना जावें।

मैंनें मेरा नाम Amit Kumar Sen से बदलकर Amit Kumar रख लिया है पुत्र श्री Ram Avtar अतः भविष्य में मुझे Amit Kumar के नाम से जाना जावे पता 435-B, Ganesh Nagar Vistar Harnathpura Jothwara Jaipur Rajasthan-302016

उद्घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
व्यवहार मिश्रित (मुतफरिक) वाद सं. 7415/2022
विषयः-उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना पत्र।
प्रार्थी-नाम
1. श्रीमती यमुना देवी पत्नि स्व. श्री पूरणमल सैनी, उम्र करीब 73 वर्ष, जाति माली, निवासी-मकान नम्बर बी-16, कृष्णा नगर द्ववितीय, टोंक रोड़ (नयी विधान सभा के पीछे), जयपुर।
2. श्रीमती उमा गहलोत पत्नि श्री अरविन्द कुमार गहलोत, पुत्री स्व. श्री पूरणमल सैनी, उम्र करीब 51 वर्ष, निवासी-प्लॉट नम्बर 35-ए, शिवा कॉलोनी, जे.पी. फाटक के पास, लाल कोठी, टोंक रोड़, जयपुर।
3. श्रीमती उर्मिला सैनी पत्नि श्री योगेश सैनी, पुत्री स्व. श्री पूरणमल सैनी, उम्र करीब 49 वर्ष, निवासी-52 शांती विहार कॉलोनी, सांगानेर एयरपोर्ट के पास, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)।
4. श्रीमती सावित्री सैनी पत्नि श्री भीम सिंह, पुत्री स्व. श्री पूरणमल सैनी, उम्र करीब 47 वर्ष, निवासी-प्लॉट नम्बर बी-297, आनन्दपुरी, मोती डूंगरी रोड़, जयपुर।
मृतक- श्री पूरणमल सैनी पुत्र स्व. श्री फूलचन्द सैनी की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांकः-13.12.2022
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम श्री पूरणमल सैनी पुत्र स्व. श्री फूलचन्द सैनी, जाति माली, निवासी-बी-16, कृष्णा नगर द्वितीय, टोंक रोड़ (नयी विधान सभा के पीछे), जयपुर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावे। अतः उक्त प्रार्थना पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 13.12.2022 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात कोई आपत्ति मान्य नही होगी।
आज दिनांक 10 माह 11 सन् 2022 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
प्रार्थीगण ने मृतक पूरणमल सैनी पुत्र स्व. श्री फूलचन्द सैनी के प्रार्थना पत्र में वर्णित बैंक खातों में जमा राशि प्राप्त करने बाबत् उत्तराधिकार प्रमाण पत्र चाहा है।
मोहर अदालत
आज्ञा से-वरिष्ठ मुंसरिम
जिला एवं सैशन न्यायालय
जयपुर महानगर प्रथम

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत-तृतीय,
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर-0141-4901853
आम जाहिर सूचना
राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा आवास संख्या- 9/L/445 इन्दिरा गांधी नगर, जगतपुरा, जयपुर क्षेत्रफल 78.75 वर्ग मीटर का आवंटन श्री गोविन्द सहाय शर्मा पुत्र श्री कल्याण सहाय शर्मा को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 4055 दिनांक 29.12.2009 जारी किया गया था। उनके द्वारा कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर अष्टम में दिनांक 10.05.2012 को उक्त आवास के संबंध में श्री भरत लाल शर्मा पुत्र श्री एस.आर. शर्मा को मुख्त्यारनामा आम नियुक्त किया गया। मुख्त्यारनामा आम धारक के द्वारा आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर-अष्टम में दिनांक 18.05.2012 को करवाया गया। तत्पश्चात मुख्त्यारनामा आम धारक श्री भरत लाल शर्मा पुत्र श्री एस.आर. शर्मा के द्वारा उक्त आवास का बेचान जरीये विक्रय पत्र के श्री हरिराम मदेरणा पुत्र श्री किशलीराम मदेरणा को कर, विक्रय पत्र का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर चतुर्थ में दिनांक 19.06.2012 को करवाया गया। तत्पश्चात श्री हरिराम मदेरणा पुत्र श्री किशलीराम मदेरणा के द्वारा उक्त आवास का बेचान जरीये विक्रय पत्र के श्री मधु जांगिड़ पत्नी श्री लोकेश कुमार शर्मा को कर, विक्रय पत्र का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर पंचम में दिनांक 23.02.2021 को करवाया गया। श्रीमती मधु जांगिड़ पत्नी श्री लोकेश कुमार के द्वारा मण्डल अभिलेख में उक्त आवास का हस्तान्तरण अपने पक्ष में करने का निवेदन किया गया है। अत: उक्त हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति/बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त आवेदनकर्ता- श्रीमती मधु जांगिड़ पत्नी श्री लोकेश कुमार शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। सम्पदा प्रबंधक- वृत तृतीय, रा.आ.मण्डल, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त, वृत्त द्वितीय
राजस्थान आवासन मण्डल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर,जयपुर
Email Id: dhejpr2.rhb@rajasthan.gov.in, Phone No. 0141-2782772
क्रमांक-DHC-II/1825 दिनांक-06/10/2022
जाहिर आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा आवास संख्या 119/98, मानसरोवर, जयपुर, क्षेत्रफल 107.80 वर्ग मीटर/वर्ग गज का आवंटन श्री रामनारायण श्रीवास्तव पुत्र श्री जगमोहन लाल को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 2931 दिनांक 27.10.1989 को जारी किया गया। इनके द्वारा उक्त आवास का भौतिक कब्जा दिनांक 27.01.1990 को प्राप्त कर लिया गया था। इसके पश्चात राजस्थान आवासन मण्डल के पत्र क्रमांक 1973 दिनांक 31.12.2003 के द्वारा श्रीमती कृष्णा अग्रवाल पत्नी स्व. श्री प्यारे लाल अग्रवाल के नाम नियमितिकरण पत्र जारी कर दिया गया। इनके द्वारा अपने स्वयं के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर में दिनांक 13.06.2013 को करवाया गया। तत्पश्चात श्रीमती कृष्णा अग्रवाल की मृत्यु दिनांक 27.09.2021 को हो जाने के कारण इनके पुत्र श्री धीरज अग्रवाल पुत्र स्व. श्री प्यारे लाल अग्रवाल ने मृत्यु पश्चात् नाम हस्तान्तरण सम्बन्धी प्रपत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास को अपने नाम हस्तान्तरण हेतु निवेदन किया है। श्री धीरज अग्रवाल पुत्र स्व. श्री प्यारे लाल अग्रवाल के द्वारा मण्डल अभिलेख में उक्त आवास का मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण अपने पक्ष में करने का निवेदन किया है। अत: उक्त आवास के हस्तान्तरण के संबंध में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 7 दिवस में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नही होने पर उक्त वर्णित व्यक्ति/आवेदक श्री धीरज अग्रवाल पुत्र स्व. श्री प्यारे लाल अग्रवाल के पक्ष में उक्त आवास के हस्तान्तरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। उक्त जाहिर आम सूचना उप आवासन आयुक्त महोदय से अनुमोदित है।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त, द्वितीय, जयपुर

प्रस्तावित गेस्ट फैकल्टी योजना रद्द

माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने गेस्ट फैकल्टी भर्ती के आदेश स्थगित किए

बीकानेर, (कासं)। राजस्थान में 93 हजार पदों पर होने वाली शिक्षक भर्ती को रद्द कर दिया गया है। सरकारी स्कूलों में खाली पदों पर गैस्ट फैकल्टी में ये शिक्षक लगाए जाने थे। माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल ने सोमवार को गेस्ट फैकल्टी भर्ती के आदेश स्थगित कर दिए हैं। ऐसे में ये भर्ती फिलहाल खटाई में पड़ गई है।

इधर, भर्ती रद्द होने का ऑर्डर सोशल मीडिया पर आते ही लोगों में कंफ्यूजन भी हो गया है। लोग सोच रहे हैं कि भर्ती रद्द की प्रक्रिया केवल अंग्रेजी माध्यम के महात्मा गांधी स्कूल के लिए है। ये गलत है। आदेश में अंग्रेजी माध्यम लिखा गया है। दरअसल, ऑर्डर अंग्रेजी माध्यम विभाग की तरफ मूव किया गया। इसलिए अंग्रेजी माध्यम लिखा गया है। ये ऑर्डर सभी के लिए जारी किया गया है।

दरअसल, राजस्थान की ब्यूरोक्रेसी की बड़ी लापरवाही की मार 93 हजार बेरोजगार युवाओं पर भारी पड़ी है। विद्या संबल योजना में स्कूलों में शिक्षकों के खाली पदों की भर्ती में आरक्षण का प्रोविजन ही नहीं रखा गया। एससी-एसटी संगठनों ने राज्यपाल तक शिकायत पहुंचाकर आपत्ति जताई। आरक्षण प्रावधान लागू नहीं करने पर मामला कोर्ट में जा सकता था। हाईलेवल की फटकार के बाद माध्यमिक शिक्षा निदेशक को भर्ती प्रक्रिया स्थगित करने का आदेश निकालना पड़ा। भर्ती स्थगित करने के आदेश में भी कारण नहीं बताया गया। ताकि शर्मिंदा नहीं होना पड़े।

16 नवंबर को फाइनल मेरिट लिस्ट निकाली जानी थी। इसके लिए 17 अक्टूबर 2022 और 4 नवंबर 2022 को संशोधित आदेश जारी किए गए थे। अब इसको रद्द करने से बेरोजगारों को धक्का लगा हैं।

सूत्रों ने बताया कि इस भर्ती में आरक्षण का प्रावधान नहीं रखने के कारण एससी-एसटी से जुड़े संगठनों ने गहलोत के समक्ष आपत्ति दर्ज कराई है। इसलिए इसे स्थगित करना पड़ा है। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से पहले होने जा रही इस बड़ी भर्ती को लेकर बसपा प्रदेशाध्यक्ष भगवान सिंह बाबा ने बताया कि हमने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और राज्यपाल कलराज मिश्र दोनों को ज्ञापन भेजे हैं।

- **भर्ती में एससी-एसटी के आरक्षण का प्रावधान नहीं किया गया था**
- **एससी-एसटी संगठनों ने सीएम व राज्यपाल को दर्ज कराई थी आपत्ति**

बसपा प्रदेशाध्यक्ष भगवान सिंह बाबा ने कहा कि हम भर्तियों के खिलाफ नहीं हैं। नौकरियां निकालने का हम स्वागत करते हैं। क्योंकि प्रदेश में बेरोजगारी बहुत ज्यादा है। एससी-एसटी के हक के हिसाब से आरक्षण का प्रावधान किया जाए।

शिक्षा विभाग ने पहले इन पदों पर रिटायर्ड शिक्षकों को लगाने के आदेश निकाले थे। रिटायर्ड शिक्षकों के रूचि नहीं लेने के कारण विद्या संबल योजना नियम में बदलाव करना पड़ा।

कई स्कूलों में स्टूडेंट्स को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि खाली पदों के कारण वहां कोर्स पूरा नहीं हो पा रहा है। प्रदेश में खाली चल रहे कुल पदों में से 13 हजार पद लेक्चरर के बताए जाते हैं। ग्रेड थर्ड टीचर्स के 49 हजार पद खाली पड़े हैं। पढ़ाई के साथ स्पोर्ट्स एक्टिविटीज भी स्कूलों में बिना पीटीआई नहीं हो पा रही क्योंकि 7 हजार पीटीआई के पद खाली है।

सरदारशहर के टिकट की झुंझुनूं में हुई चर्चा

बंद कमरे में बीजेपी नेताओं की हुई बैठक

झुंझुनूं, (निसं)। सरदारशहर उप चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने के लिए अब चार ही दिन शेष है। बीजेपी अपने उम्मीदवार का नाम अभी तक फाइनल नहीं कर पाई है। चुनाव मैदान में बीजेपी के उम्मीदवार के नाम को लेकर झुंझुनूं में बीजेपी के नेताओं के बीच चर्चा हुई। चुडैला में बंद कमरे में हुई चर्चा में केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल, भाजपा की प्रदेश सह प्रभारी विजया राहटकर, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां, उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़, प्रदेश महामंत्री संगठन चंद्रशेखर, चूरू सांसद राहुल कस्वां, पूर्व सांसद रामसिंह कस्वां समेत अन्य प्रमुख नेता शामिल हुए। करीब दो घंटे तक विभिन्न दौर की चली वार्ताओं में सबसे पहले केंद्रीय मंत्री अर्जुन मेघवाल, प्रदेश अध्यक्ष पूनियां, संगठन महामंत्री चंद्रशेखर, चूरू सांसद राहुल कस्वां, रामसिंह कस्वां और टिकट के दावेदार पूर्व विधायक अशोक पींचा के बीच वार्ता हुई। इसके बाद चूरू सांसद राहुल कस्वां, उनके पिता रामसिंह कस्वां और अशोक पींचा बातचीत कर कमरे से बाहर गए। इसी दरमियान झुंझुनूं से अपने आगामी कार्यक्रमों के लिए रवाना हो गए उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनियां ने वापिस बुलाया। राजेंद्र राठौड़ के साथ भी करीब एक घंटे तक चर्चा हुई। इसके बाद राजेंद्र राठौड़ को चर्चा में हिस्सा लेने के बाद लौट गए। राजेंद्र राठौड़ ने इस मौके पर कहा कि कई दौर की वार्ताएं टिकट के लिए हो गई है। जिनको नामों की घोषणा करनी है वो करेंगे।

- **कार्यकर्ताओं की राय, स्थानीय समीकरण और सर्वे पर हुई चर्चा**

सरदारशहर उपचुनाव के टिकट की चर्चा को लेकर प्रदेशाध्यक्ष पूनिया झुंझुनूं पहुंचे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने कहा कि कार्यकर्ताओं की राय, स्थानीय समीकरण और सर्वे के आधार पर भाजपा अंतिम नाम पर मुहर लगाने की स्थिति में आ गई है। प्रदेश प्रभारी व बीजेपी के आला नेताओं से बातचीत कर जल्द ही आज या कल में नाम की घोषणा की जाएगी। उन्होंने कहा कि यह तय है कि इस उप चुनाव को भाजपा मजबूती के साथ लड़ेगी और सभी एकमुखी होकर भाजपा को जिताने के लिए काम करेंगे।

सरदारशहर उप चुनाव में नामांकन की अंतिम तारीख 17 नवंबर है। ऐसे में बीजेपी को अब जल्द अपना कंडीडेट फाइनल करना होगा। भाजपा में पूर्व विधायक अशोक पिंचा, विधि प्रकोष्ठ के पूर्व सह-संयोजक शिवचंद साहू, पूर्व प्रधान सत्यनारायण सारण, पूर्व प्रधान सत्यनारायण सारण, सत्यनारायण झांझड़िया, गिरधारीलाल पारीक, प्रधान प्रतिनिधि मधुसूदन राजपुरोहित बीजेपी से टिकट के प्रमुख दावेदार हैं।

स्कूलों में आज से मिलेगा बच्चों को दूध

जोधपुर, (कासं)। शहर की सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले पहली से आठवीं कक्षा तक के 3 लाख 68 हजार बाल गोपालों को मंगलवार से प्रार्थना के बाद पीने को गरम दूध मिलेगा। बच्चों और टीचर्स को दूध गरम करने और गिलास साफ करने की जिम्मेदारी से मुक्त करने के लिए हर स्कूल को एक कुक कम हेल्पर रखकर उससे ये कार्य करवाने के लिए 500 रुपए प्रति स्कूल मिलेंगे। जोधपुर सहित प्रदेश के सभी मदरसों, सरकारी प्राथमिक, मिडिल, सेकंडरी व सीनियर सैकंडरी स्कूलों में पहली से पांचवीं कक्षा और छठी से आठवीं कक्षा के बालक-बालिकाओं को मिल्क पाउडर पिलाने की योजना मंगलवार से शुरू होगी।

विधायक के वाहन काफिले से दो लोग घायल

बामनवास, (निसं)। उपखंड मुख्यालय पर विधायक इंदिरा मीणा के वाहनों के काफिले की टक्कर से राजीव लोचन एवं बाबूलाल घायल हो गये। जैसे -तैसे मौके पर मौजूद लोगों एवं राहगीरों ने दोनों लोगों को राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर भर्ती कराया। जहां चिकित्सकों ने उनका उपचार किया। चर्चा रही कि विधायक ने इस घटना के बाद घायलों को अस्पताल पहुंचाना तो दूर की बात रही घायल के समाचार लेना भी मुनासिब नहीं समझा। घटना के बाद सीएचसी में भर्ती पीड़ितों से पूर्व प्रधान राजेंद्र एवं हिंदू सनातन मंच के बुद्धि पंडित आदि लोगों ने कुशलक्षेम पूछी।

- **गंभीर घायल होने पर अस्पताल में भर्ती हुए**
- **विधायक ने घटना के बाद घायलों के समाचार लेना भी मुनासिब नहीं समझा**

बामनवास सीएचसी में घायलों की कुशलक्षेम पूछते लोग।

पायलट आज टोंक में

टोंक, (निसं)। पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं टोंक विधायक सचिन पायलट मंगलवार को टोंक आएंगे और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आत्माराम गोयल के निधन पर निवास पर पहुंच कर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। कांग्रेस के निवर्तमान जिलाध्यक्ष लक्ष्मण चौधरी गाता ने बताया कि पूर्व उपमुख्यमंत्री पायलट 15 नवम्बर को प्रात: 9 बजे जयपुर से रवाना होकर 10.30 बजे टोंक पहुंच कर वरिष्ठ कांग्रेस नेता आत्माराम गोयल के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे और उसके बाद प्रात: 11 बजे ग्राम पंचायत छान में कालूराम बैरवा के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। इसके बाद साढे 11.30 बजे ग्राम पंचायत के ग्राम राधावल्लभपुरा, साढे 12.30 बजे ग्राम खरेडा, 1.30 बजे ग्राम पंचायत गणेती के ग्राम बीबोलाव एवं दोपहर 2 बजे ग्राम पंचायत गोपालपुरा में स्थानीय कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

17 नवंबर तक कर सकेंगे वन टाइम रजिस्ट्रेशन में संशोधन

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा वन टाइम रजिस्ट्रेशन में संशोधन की अवधि का विस्तार किया गया है। अब अभ्यर्थी 17 नवंबर 2022 को रात्रि 12 बजे तक वन टाइम रजिस्ट्रेशन की चार मुख्य प्रविष्टियों अभ्यर्थी का नाम, पिता का नाम, जन्म दिनांक एवं जेंडर को मूल दस्तावेजों के अनुसार सिंक्रोनाइज कर सकेंगे।

संयुक्त सचिव आशुतोष गुप्ता ने बताया कि आयोग द्वारा 5 नवंबर से 14 नवंबर 2022 तक उपरोक्त चार मुख्य प्रविष्टियों में संशोधन का अवसर दिया गया था। अभ्यर्थियों की सुविधार्थ आयोग द्वारा इसकी अवधि को बढ़ाया गया है। मूल दस्तावेजों के अनुसार वन टाइम रजिस्ट्रेशन की इन प्रविष्टियों को सिंक्रोनाइज करने के लिए ई-मित्र/ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से 500 रुपए का शुल्क देना होगा। इस संबंध में किसी भी प्रकार की तकनीकी कठिनाई होने पर ई-मेल से संपर्क किया जा सकता है। गुप्ता ने जानकारी दी कि वन टाइम रजिस्ट्रेशन में अभ्यर्थियों द्वारा संशोधित की जाने वाली प्रविष्टियों द्वारा आगामी माह से प्रस्तावित परीक्षाओं के आवेदन-पत्रों में ही संशोधन होगा। पूर्व में आयोजित की जा चुकी परीक्षाओं के आवेदन-पत्रों में इससे कोई संशोधन नहीं होगा। उन्होंने बताया कि वन टाइम रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में जनआधार/आधार के विकल्प का चुनाव करने पर सिस्टम द्वारा जनआधार/ आधार में दर्ज विवरण को स्वत: दर्ज किया जाता है।

महिलाओं ने पानी की टंकी पर चढ़ प्रदर्शन किया

मालपुरा, (निसं)। बीते एक महिने से पेयजल समस्या से जूझ रही डिग्गी गांव की महिलाओं ने सोमवार को जलदाय विभाग कार्यालय डिग्गी तथा पानी की टंकी पर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान महिलाएं हाथों में बरतन ले जलदाय विभाग कार्यालय पहुंची।

कल्याणजी मंदिर के पीछे की महिलाओं ने मौजूद अधिकारियों को अवगत करवाया कि मंदिर के पीछे जलदाय विभाग की पेयजल लाईनों में हुए रिसाव से तकरीबन एक दर्जन मकानों में आई दरारों की शिकायत करने पर कलेक्टर ने डिग्गी पहुंच मकानों का जायजा ले जलदाय विभाग के अधिकारियों को जमकर लताड़ पिलाते हुए तत्काल क्षतिग्रस्त पेयजल लाईन बदलने के निर्देश दिये गये थे।

जिस पर विभाग के अधिकारियों ने पेयजल आपूर्ति बंद कर दी थी। मामले को तकरीबन एक माह बीत जाने के बावजूद विभाग द्वारा पेयजल आपूर्ति सुचारू नहीं किये जाने से कॉलोनीवासियों को पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है। धर्मनगरी डिग्गी में नित्य पूजा अर्चना के लिए भी पानी नहीं मिलने से धार्मिक भावनाएं भी आहत हो रही हैं। दूर-दराज से पानी लाकर दैनिक कार्य किये जा रहे हैं। कार्यालय के सामने प्रदर्शन के दौरान ही आधा दर्जन से अधिक महिलाएं बरतन ले पानी की टंकी पर चढ़ गई तथा टंकी की सीढियों पर बैठ प्रदर्शन शुरू कर दिया।

मामले की जानकारी मिलते ही जेईएन व डिग्गी थाना पुलिस ने मौके पर पहुंच प्रदर्शन कर रही महिलाओं से समझाईश कर समस्या समाधान के लिए उपखण्ड प्रशासन व विभाग के उच्चाधिकारियों से मालपुरा मुख्यालय पर मिल समस्या समाधान की समझाईश व आश्वासन के बाद महिलाए टंकी से उतरी तथा प्रदर्शन समाप्त किया। तत्पश्चात प्रतिनिधिमंडल ने मालपुरा पहुंच विभाग के अधिकारियों को समस्या से अवगत करवा त्वरित समाधान की मांग की।

पानी की समस्या समाधान की मांग को लेकर डिग्गी में महिलाओं ने टंकी पर प्रदर्शन किया।

ट्रेन में बढ़ाया अतिरिक्त कोच

जोधपुर, (कासं)। रेलवे द्वारा अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए बीकानेर दादर बीकानेर रेल सेवा में 01 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। मंडल रेल प्रबंधक गीतिका पांडेय ने बताया कि गाडी संख्या 14707/14708, बीकानेर-दादर-बीकानेर रेलसेवा में बीकानेर से 16 से 30 नवंबर तक एवं दादर से 17 नवंबर से 01 दिसंबर तक 01 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

- **शयनयान श्रेणी में बढ़ाया एक कोच**

म्यूटेशन भरने के पटवारी ने लिए तीन हजार, गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में पुश्तैनी जमीन का म्यूटेशन भरने के एवज में रिश्वत लेते हुए एक पटवारी को एसीबी ने रंगे हाथों पकड़ा है। एसीबी मुख्यालय के निर्देश पर जोधपुर ग्रामीण इकाई ने सोमवार को कार्रवाई करते हुए सेतरावा तहसील के पटवारी जगदीश पालीवाल को तीन हजार रुपए रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया।

जगदीश पालीवाल जेठानिया में पटवारी के पद पर कार्यरत है। इसके पास सेतरावा तहसील के खियासरिया का अतिरिक्त कार्यभार है। इस मामले में एसीबी घर की जांच कर रही है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक भगवान लाल सोनी ने बताया कि एसीबी की जोधपुर ग्रामीण इकाई को परिवादी ने शिकायत दी कि उनकी पुश्तैनी जमीन का म्यूटेशन भरने की एवज में जगदीश पालीवाल, हाल पटवारी पटवार मण्डल जेठानिया, अतिरिक्त कार्यभार पटवार हल्का खिंयासरिया 3 हजार रुपए की रिश्वत मांगकर परेशान कर रहा है।

जिस पर एसीबी, जोधपुर के उप महानिरीक्षक पुलिस विष्णुकान्त के सुपरविजन में कार्रवाई की गई। परिवादी ने बताया कि उसकी सेतरवां में 19 खसरों में उसके सहित उसके 8 भाई-बहनों की जमीन है। पुश्तैनी जमीन का म्यूटेशन भरने के लिए एप्लाई किया था। उसने 22 सितम्बर को एप्लाई किया लेकिन काम नहीं हुआ। फिर पटवारी की ट्रांसफर हो गया। नए पटवारी जगदीश ने म्युटेशन के एवज में 3 हजार रुपए मांगे। इसकी शिकायत एसीबी में करने पर 9 तारीख को इसका सत्यापन कर आज गिरफ्तार किया गया।

मारवाड़ में धीरे-धीरे बढ़ने लगी सर्दी

जोधपुर, (कासं)। पश्चिम विक्षोभ की सक्रियता के बाद आए मौसमी बदलाव से अब मारवाड़ में सर्दी की चमक धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। सर्दी बढ़ने के साथ अब दिन के तापमान में पारा भी गिरने लगा है। धूप कमजोर पड़ने के साथ पारा में गिरावट देखी गई।

रात का पारा भी चार डिग्री तक गिरने से सर्दी जोर पकड़ने लगी है। सुबह के समय धुंध या कोहरा देखा जाने लगा है। शहर के न्यूनतम तापमान में इस सीजन में अब तापमान में गिरावट आई। रात का पारा 3.9 डिग्री गिरकर 13.8 डिग्री पहुंच गया। दिन का तापमान भी 30 डिग्री तक आ पहुंचा है। प्रदेश से पश्चिमी विक्षोभ गुजरने के बाद बादल छंट गए और उत्तरी-पूर्वी हवाएं सीधी चलने लगी। मौसम विभाग की मानें तो अब सर्दी की चमक बढ़ने लगेगी जो कि रबी फसल के उपयुक्त रहेगी।

बीड़ में लगी आग, मशक्कत के बाद पाया काबू

डीएफओ और वनकर्मियों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया।

मुकुंदगढ़, (निसं)। कंजर्वेशन रिजर्व घोषित बीड वन क्षेत्र में सोमवार दोपहर को अचानक आग लगने से हड़कंप मच गया। जानकारी के मुताबिक दोपहर 12 बजे के आस-पास समसपुर की तरफ बीड़ में आग लग गई थी। उसके बाद धीरे-धीरे आग की लपटें उठती गई। सूचना पर मौके पर पहुंचे झुंझुनूं डीएफओ और वनकर्मियों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया। बीड़ रेंज के फोरेस्टर अमित कुमार सैनी ने बताया कि बीड में आग लगने की सूचना मिली जिस पर वनकर्मियों और मजदूरों के साथ मौके पर पहुंचे तथा आग पर काफी हद तक काबू पा लिया। उसके बाद पहुंची झुंझुनूं एवं बगड़ की दमकलों ने आग बुझाने पर काबू पाया। इधर, डीएफओ राजेंद्र कुमार हुड्डा ने बताया कि अज्ञात कारणों से बीड़ में आग लग गई थी। सुखी घास होने के कारण आग बढ़ गई थी। हालांकि आग से किसी प्रकार के वन्य जीव जंतु के हानि होने की सूचना नहीं है।

राजेंद्र कुमार हुड्डा, डीएफओ, झुंझुनूं का कहना है कि बीड़ में अज्ञात कारणों से अचानक आग लग गई थी। जिसके बाद मौके पर पहुंचा। दमकल द्वारा आग पर काबू पा लिया। आगजनी से किसी प्रकार की हानि नहीं हुई

अमित कुमार सैनी, फोरेस्टर, बीड़ झुंझुनू का कहना है कि काम कर रहे मजदूरों के द्वारा सूचना मिली तो तुरंत वनकर्मियों के साथ मौके पर पहुंचे। स्थानीय लोगों तथा वनकर्मियों की मदद से आग पर काबू पा लिया।

श्याम बाबा पट बंद फिर भी पहुंच रहे श्याम भक्त

खाटूश्यामजी, (निसं)। खाटूश्यामजी में रविवार रात को श्याम बाबा का मंदिर बंद कर दिया गया है। सुंदर व सुगम व्यवस्था को लेकर बंद हुए मंदिर के बाद भी सोमवार को अल सुबह से श्याम भक्तों की तादाद दिखाई दी। मंदिर बंद होने के बाबजूद भी श्याम भक्त खाटूधाम पहुंचे और तोरणद्वार वह श्याम मंदिर के बाहर तक धोक लगाकर मन्नत मांगी। श्याम भक्त खाटूश्यामजी आने के बाद मंदिर के बाहर ही हाथ जोड़कर जा रहे हैं। आज से श्याम कुंड भी आगामी आदेश के लिए बंद कर दिया गया है। श्याम भक्तों ने कहा कि घर से निकल गये लेकिन आधे रास्ते में पहुंचते ही बंद की सूचना जारी हो गई।

श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा अल सुबह से श्याम भक्तों को पुन: गंतव्य को पहुंचने और व्यवस्था में सहयोग करने की उद्घोषणा होती रही। दिल्ली के विजेन्द्र सिंह ने बताया कि रविवार शाम दिल्ली से परिवार के साथ रवाना हो गए। दिल्ली से आधे रास्ते में आने के बाद मंदिर बंद होने की जानकारी मिली। इसके पश्चात पुन: दिल्ली जाने के बजाय खाटूश्यामजी आए और रात्रि को रुककर बाबा श्याम के बाहर ही धोक लगाकर वापस दिल्ली जा रहे हैं। इंदौर से आई प्रियंका ने बताया कि रींगस आने के बाद निशान लेकर आती हूं। रविवार रात्रि रींगस पहुंच गए लेकिन मंदिर बंद की घोषणा होते ही मायूस हुए।

जब सरकार वीक होती है, तभी पेपर लीक होता है : डॉ. सतीश पूनियां

संगठित नकल, लीक माफिया का सरगना कोई और नहीं बल्कि गहलोत ही हैं : पूनिया

झुंझुनूं, (निसं)। सरकार ने पेपर लीक होने के कारण वन रक्षक की एक परीक्षा को रद्द कर दिया है। जिसके बाद बीजेपी भी हमलावर हो गई है। बीजेपी के नेताओं ने सरकार पर आरोप लगाया है कि बिना राजनैतिक संरक्षण के लगातार परीक्षाओं के पेपर लीक नहीं हो सकते। झुंझुनूं में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने कहा कि सरकार वीक है। इसलिए ही पेपर लीक हो रहे हैं। प्रदेश की सरकार नौजवानों के साथ बड़ा पाप कर रही है।

उन्होंने कहा कि मां-बाप बडे अरमानों के साथ अपना पेट काटकर बच्चों को पढ़ाते हैं कि उनके बच्चों को सरकारी नौकरी मिल जाएगी। लेकिन यह सरकार 70 लाख युवाओं को परीक्षा दिलवाती है। एक लाख को नौकरी देने का ढिंढोरा पिटती है लेकिन 69 लाख युवाओं के अरमानों के बारे में कुछ नहीं सोचती।

सरकार ने यही पाप किसानों और अबलाओं के साथ भी किया है। पहले नौजवानों को बेरोजगारी भत्ते के नाम पर ठगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में प्रमाणिक तरीके से संगठित नकल, लीक माफिया पैदा हो गया है। इनके सरगना कोई और नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ही हैं। डॉ. पूनियां ने कहा कि सरकार ने नकल और पेपर माफियाओं को छूट दे रखी है। इससे जुडे माफियाओं को सरकार का संरक्षण है। सरकार ने जो कानून बनाया। उसके मुताबिक कार्रवाई नहीं की। बिना सरकार के हाथ के लगातार इस तरह के कांड नहीं होते और पेपर लीक नहीं होते। उन्होंने भाजयुमो से आव्हान किया है कि वे नौजवानों के बीच जाए और उनकी आवाज बने।

इधर, उप नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि केवल वन रक्षक भर्ती परीक्षा ही नहीं बल्कि सरकार के दर्जनों परीक्षाओं के पेपर लीक हुए है। नकल करवाई गई है। अब वन रक्षक भर्ती परीक्षा रद्द होना सरकार के मुंह पर तमाचा है और बेरोजगारों के साथ खिलवाड़। एक बार फिर साबित हो गया है कि इस सरकार में पेपर माफियाओं की जड़ें गहरी हैं। उन्होंने कहा कि पूरे परीक्षा सिस्टम के साथ पेपर माफिया जुड गए है। जो सरकार दावे कर रही है कि उन्होंने एक लाख नौकरियां दे दी है। अब इन सभी परीक्षाओं पर सवाल खडे हो गए है।

उन्होंने कहा कि प्रश्न पत्र हुबहू बाहर आ जाना। सरकार का सबसे बड़ा फेलियोर है। राठौड़ ने कहा कि जो लोग पूर्व की परीक्षाओं में लिप्त थे। उन्हें आज तक पकड़ा नहीं गया है। बाएं-दाएं से कुछ लोगों को पकड़ा, निलंबित किया और अब उन्हें फिर से बहाल कर दिया। इसलिए माफियाओं के हौंसले बुलंद हो गए है। कानून बनाना और पालना कराना। दोनों अलग बाते है। सरकार कानून की पालना कराने में फेल साबित हुई है। राठौड़ ने आरोप लगाया है कि परीक्षा के सिस्टम के साथ उच्च पदस्थ पर बैठे लगे लोग मिले हुए हैं। जिन्होंने परीक्षा की पवित्रता को नष्ट किया है।

- **वन रक्षक की भर्ती परीक्षा रद्द होने पर बीजेपी हुई हमलावर**
- **'प्रश्न पत्र हू-ब-हू बाहर आना सरकार की बड़ी नाकामी'**

वनरक्षक परीक्षा रद्द करने के बाद प्रदेशाध्यक्ष पूनिया ने प्रेसवार्ता कर सरकार को घेरा।

प्रोपर्टी डीलर की हत्या करने वाले दो बदमाश गिरफ्तार

आरोपियों से फरार अन्य बदमाशों के बारे में पूछताछ करने में जुटी करधनी पुलिस

■ बदमाशों ने सरेराह दिनदहाड़े सरियों और लाठी-डंडों से पीटकर की थी युवक की हत्या

जयपुर (कासं)। करधनी पुलिस ने प्रोपर्टी डीलर को सरे राह ताबड़तोड़ लाठी-डंडों से पीटकर मौत के घाट उतारने वाले दो बदमाशों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस पकड़े गए आरोपियों से पूछताछ कर अन्य बदमाशों के बारे में जानकारी जुटा रही हैं।

डीसीपी (पश्चिम) वंदिता राणा ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी बलदीप सिंह राठौड़ उर्फ सोनू मकराना नागौर हाल ग्रीन कुंज कॉलोनी नांगल जैसा बोहरा और विजय सिंह उर्फ सन्नी परबतसर नागौर हाल ग्रीन पार्क ई नांगल जैसा बोहरा करधनी का रहने वाला हैं। पुलिस इस मामले में फरार चल रहे अन्य बदमाशों की तलाश कर रही हैं।

एसीपी प्रमोद स्वामी ने बताया कि करधनी की निर्मल बिहार कॉलोनी में प्रोपर्टी डीलर विजेन्द्र सिंह को बुधवार को लाठी सरियों से लैस होकर आए बदमाशों ने सरे राह पीट-पीटकर घायल कर दिया था। जिस समय बदमाश मारपीट कर रहे थे उस दौरान एक महिला चिल्ला चिल्ला कर लोगों को पुलिस बुलाने की कह रहे थे। लेकिन लोग डर के मारे पुलिस को बुलाने की हिम्मत नहीं जुटा पाए। गंभीर रुप से घायल विजेन्द्र सिंह को पुलिस ने एसएमएस अस्पताल में भर्ती करवाया था जहां उपचार के दौरान देर रात उनकी मौत हो गई थी। इस मामले में नांगल जैसा बोहरा स्थित ग्रीन पार्क निवासी सत्येन्द्र सिंह ने जितेन्द्र हुलदानी, सागर सिंह, रविन्द्र खानड़ी सहित चार पांच अन्य लोगों के खिलाफ उसके भाई विजेन्द्र सिंह की हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया था। सत्येन्द्र ने बताया कि बुधवार शाम विजेन्द्र ने खुद पर हमला होने की सूचना दी। तीन हमलावरों का नाम लेते हुए कहा कि पहले फायरिंग की और फिर लाठी-सरियों से हमला कर दिया। वह मौके पर पहुंचा जब तक किसी ने विजेन्द्र की मदद नहीं की। लहूलुहान भाई को लेकर सत्येन्द्र अस्पताल पहुंचा, जहां देर रात उनकी उपचार के दौरान मौत हो गई थी।

करधनी थाना पुलिस ने प्रोपर्टी डीलर की हत्या के आरोप में दो बदमाशों को गिरफ्तार किया।

राजापार्क में सिख युवक के साथ मारपीट पर हंगामा

जयपुर (कासं)। राजापार्क में रविवार रात को एक युवक से मारपीट के विरोध में स्थानीय लोग व व्यापारियों ने विधायक कालीचरण सराफ के नेतृत्व में हनुमान ढाबा चौराहे पर धरना दिया। धरने पर बैठे लोगों का आरोप था कि क्षेत्र में देर रात से तड़के तक कई चाय की दुकानें खुली रहती हैं और इनमें कई दुकानों में गांजा व स्मैक का नशा भी परोसा जाता है। इससे समाजकंटकों को रातभर जमावड़ा लगा रहता है।

रविवार रात को भी समाजकंटकों ने गुरुनानकपुरा निवासी हरप्रीत पर कहासुनी के बाद हमला कर घायल कर दिया और फिर भाग गए। इसके विरोध में लोगों ने रात को गोविंद मार्ग भी जाम कर दिया था। क्षेत्र की दुकानें रात साढ़े 10 बजे बंद कराने की मांग को लेकर स्थानीय लोग व व्यापारी सोमवार सुबह फिर एकत्र हो गए और हनुमान ढाबा चौराहे पर धरना दिया। धरना स्थल पर विधायक कालीचरण सराफ, वर्तमान व पूर्व पार्षद, व्यापार मंडल अध्यक्ष सहित कई गणमान्य लोग भी पहुंचे। विधायक कालीचरण सराफ ने मौके पर पहुंचे अतिरिक्ति पुलिस आयुक्त कैलाशचंद विश्नोई से कहा कि रात 10.30 बजे क्षेत्र की सभी दुकानें बंद करवाई जाए। मादक पदार्थ बेचने वालों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई की जाए। हमला करने वालों को भी 7 दिन में गिरफ्तार किया जाए। बाजार में पुलिस गश्त व्यवस्था हो। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त विश्नोई ने आश्वासन दिया, तब लोग उठे।

राजस्थान विवि. में लाईब्रेरी के नए भवन का ताला तोड़ा

छात्रसंघ अध्यक्ष, महासचिव और एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने ने अलग-अलग प्रदर्शन किया

राजस्थान यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में छात्रसंघ अध्यक्ष निर्मल चौधरी के नेतृत्व में सद्बुद्धि यज्ञ किया।

जयपुर, (कासं)। राजस्थान विवि. की छात्र राजनीति एक बार फिर स्मार्ट लाइब्रेरी को लेकर गर्मा गई है। लाइब्रेरी के नए भवन का ताला तोड़कर सोमवार को विरोध प्रदर्शन किया गया।

सबसे पहले सोमवार को छात्रसंघ महासचिव अरविन्द जाजड़ा ने लाइब्रेरी भवन का ताला तोड़कर मुख्य गेट पर नारियल फोड़कर विरोध प्रदर्शन किया। इसके बाद छात्रसंघ अध्यक्ष निर्मल चौधरी छात्रों के साथ लाइब्रेरी भवन पहुंचे। निर्मल ने लाइब्रेरी भवन में मुख्यमंत्री की फोटो रखकर सद्बुद्धि यज्ञ किया। निर्मल ने यज्ञ के माध्यम से लाइब्रेरी भवन का उद्घाटन करने की मांग की। वहीं लाइब्रेरी भवन के उद्घाटन को लेकर एनएसयूआई के राहुल महला का विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर धरना तीसरे दिन भी जारी रहा।

गौरतलब है कि विश्वविद्यालय में 7 जुलाई 2016 को भाजपा सरकार में तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री कालीचरण सराफ और कुलपति जेपी सिंघल ने स्मार्ट लाइब्रेरी के भवन का भूमि पूजन करके कार्य का शिलान्यास किया था। लाइब्रेरी भवन को 9 महीने में बनाकर शुरू करने का वादा किया था, लेकिन 75 महीने से अधिक समय हो गया, इसके बाद भी विश्वविद्यालय लाइब्रेरी भवन के कार्य पूरा नहीं करवा पाया है। पिछले कुछ महीनों से छात्रों द्वारा नए भवन का कार्य पूरा करवाकर उसे पढ़ाई के लिए खोलने की मांग की जा रही है। इसके बावजूद विश्वविद्यालय लाइब्रेरी भवन में फर्नीचर सहित अन्य कार्य पूरा नहीं करवा पा रहा।

एलआईसी ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में स्टॉल लगाकर दी बीमा की जानकारी

जयपुर (कासं)। दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 41 वें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के स्टाल का उद्घाटन निगम के उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक दिनेश भगत ने किया। 14 दिनों तक चलने वाले व्यापार मेले में निगम के स्टॉल पर आने वाले आगुन्तकों को निगम की पॉलिसियों से संबंधित सभी जानकारियों के साथ-साथ निगम में एजेंट के रूप में अपना कैरियर बनाने संबंधित जानकारी भी दी जायेगी। साथ ही निगमन की ई-सर्विस एवं ऑनलाइन सुविधाओं की जानकारी भी उपलब्ध कराई जाएगी।

ज्ञात रहे कि इस वर्ष एलआईसी अपनी 66 वी वर्षगांठ मना रहा है। निगम ने हमेशा ही देश के एक प्रमुख वित्तीय संस्थान के रुप में सभ बीमा योग्य लोगों तक किफायती दरों पर जीवन बीमा निगम के संदेश को प्रचारित करने में अत्यधिक योगदान दिया है और बदलती जरुरतों के अनुसार बेहतरीन उत्पाद प्रदान किए हैं। इस क्रम में हाल ही में एलआईसी ने चार नई बीमा योजनाओं बीमा रत्न, धन संचय, धन वर्षा एवं न्यू पेंशन प्लस को शुरु किया है । ग्राहक पॉलिसियों से संबंधित सभी जानकारियों के लिए एलआईसी की बेवसाइट पर जाकर एलआईसी मित्र की सहायता ले सकते हैं, इसके अलावा 022-68276827 पर फोन करके भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। निगम ने कुशल तरीके से पॉलिसी सेवा की सर्विसिंग की सुविधा के लिए समय के साथ तालमेल रखते हुए नवीनतम तकनीकों को अपनाया है। पॉलिसीधारक अपने प्रीमियम का भुगतान विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से कर सकते हैं। डिजिटल पहल में ऑर्टिफिशयल इंटेलिजेंस को अपनाते हुए जीवन साक्ष्य नामक मोबाइल एप विकसित किया है जिससे पेंशन पॉलिसधारों को अस्तित्व प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने में सुविधा होगी।

नाहरगढ़ में विवाहिता की संदिग्ध हालत में मौत

जयपुर । नाहरगढ़ इलाके में विवाहिता की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई। महिला के पति और ससुराल पक्ष ने फंदे से मौत होने की जानकारी पुलिस को दी थी। घटना के बाद पुलिस ने मेडिकल बोर्ड से शव का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सौंप दिया। विमला के भाई 25 वर्षीय हजारी लाल मीणा ने बहन के पति सहित सात लोगों के खिलाफ नामजद रिपोर्ट नाहरगढ़ थाने में दर्ज कराई हैं। पुलिस ने मामले की गम्भीरता को देखते हुए मामला दर्ज कर लिया हैं। वहीं इस मामले की जांच एसीपी कोतवाली को दी गई हैं।

मृतका के भाई हजारी लाल मीणा ने बताया कि उसकी बहन का विवाह वर्ष 2018 में नाहरगढ्.इलाके में रहने वाले गिर्राज मीणा के साथ हुआ था। शादी के बाद से ही मेरी बहन के ससुराल वाले मेरी बहन को दहेज कम देने के ताने मारकर तथा और दहेज लाने के लिए तंग परेशान करने लग गये थे। मेरी बहन विमला मुझे व मेरे पिताजी तथा अन्य घरवालों को कई बार फोन करके बताती थी। उसकी सास कमली देवी पत्नी लल्लुराम, ननद रज्जु पत्नी ओमप्रकाश निवासी भट का बास तथा ननदोई ओमप्रकाश निवासी भट का बास व बुआ सासु लाली देवी व लाली देवी का पति या मेरी बहिन विमला का फुफेससुर निवासी खानियां आगरा रोड व उसका पति गिर्राज तथा ससुर लल्लूराम के साथ मिलकर दहेज के लिए तंग परेशान करते थे। यही नहीं कभी-कभार मारपीट भी किया करते थे। बारबार समझाने के बाद भी ये लोग मेरी बहन को मारने से बाज नहीं आये। पिछले 5-6 महीने पहले मेरी बहन की सास कमली, ससुर लल्लु, पति गिर्राज, बुआ सासू लाली व फुफेससुर निवासी खानिया व ननद रज्जु तथा ननदोई ओमप्रकाश निवासी भट का वास ने मिलकर मेरी बहन विमला के साथ दहेज की मांग को लेकर घर में बंद करके मारपीट की थी। मारपीट कर उसकी छोटी सी बच्ची के साथ उसे घर से बाहर निकाल दिया। करीब तीन महीने तक मेरी बहन विमला व भान्जी मेरे गांव मेरे घर पर ही रही। मगर वे लोग लेने के लिए नहीं आये। एक माह पहले गिर्राज को कुछ उपहार व पैसे दिये तो वह वापस ले गया। 12 तारीख को गिर्राज ने कहा कि विमला ने फांसी खा ली है।

सांड़ के हमले से युवक की मौत

जयपुर । राजधानी जयपुर में आवारा पशुओं के हमले से आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। रविवार शाम को भानपुर निवासी गिर्राज शर्मा की सांड़ की चपेट में आने से मौत हो गई। वे आमेर क्षेत्र में रामगढ़ मोड बस स्टैंड पर घर जाने के लिए खड़े थे। तभी पीछे से सांड़ ने आकर उन्हें टक्कर मारी और वो उछलकर दूर जाकर गिरे। वहां मौजूद लोगों ने पास के निजी अस्पताल में भर्ती कराया। यहां चिकित्सकों ने हालत देख वापस भेज दिया। कुछ लोग जवाहर सर्कल स्थित एक निजी अस्पताल में लेकर गए। जहां, डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। जयपुरिया अस्पताल में सोमवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। मृतक गिर्राज के जीजा रवि शर्मा ने बताया कि वो इससे पहले कभी जयपुर अकेला नहीं आया। इस बार ही अकेला आया था। घर में दो बेटे और दो बेटियां है।

सार-समाचार

बच्चों के साथ मनाया बाल दिवस

जयपुर । अभिलाषा वीमेन वेलफेयर सोसाइटी ने "प्रयास" संस्था के बच्चों के साथ बाल दिवस बड़े धूमधाम से मनाया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने अपने नृत्य और गायन कौशल का प्रदर्शन किया। कुछ बच्चों ने कविता पाठ किया तो कुछ ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर सोसाइटी की ओर से बच्चों को कॉपी-किताबें और पेंसिल भेंट की गई। बच्चों के खेलने के लिए संस्था को कैरम बोर्ड प्रदान किया गया। बाल दिवस पर उपहार पाकर बच्चे बड़े प्रसन्न दिखाई दिए। सोसाइटी की ओर से बच्चों को भोजन भी कराया गया। इस मौके पर सोसाइटी की अध्यक्ष डॉ.रमा माथुर, उपाध्यक्ष विजयलक्ष्मी, सचिव कल्पना माथुर, सांस्कृतिक सचिव जया कल्ला, कोषाध्यक्ष रेणु कुमावत, संयुक्त सचिव रिमझिम माथुर और भारती सहित कई सदस्य मौजूद थे।

विजेताओं को पुरूस्कृत किया

जयपुर । भारत सरकार की पहल 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत भारतीय शिल्प संस्थान (आईआईसीडी) ने स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों के लिये आज प्रात: 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक अपने प्रागंण में एक डिजाइन प्रतियोगिता आयोजन किया। इस प्रतियोगिता में 11वीं एवं 12वीं कक्षा के तकरीबन 150-160 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। यह सभी विद्यार्थी जयपुर के विभिन्न स्कुलों जैसे कि जयश्री पेरीवाल स्कुल, संत एडमंड स्कुल, अग्रसेन पब्लिक स्कूल, संस्कार स्कुल, नीरजा मोदी , सवाई भवानी सिंह स्कुल, बनस्थली स्कुल, द प्लेस स्कुल आदि से थे । यह डिजाइन प्रतियोगिता 'इण्डिया ऑफ माई ड्रीम' यानि 'मेरे सपनों का भारत' थीम पर आयोजित की गई । जिसमें युवा वर्ग ने एक सिरेमिक की प्लेट पर ड्रांइग, पेन्टिंग या 3डी के माध्यम से रचनात्मक चित्रिण किया। यह सिरेमिक प्लेट संस्थान द्वारा विद्यार्थियों को नि:शुल्क दी गई। संस्थान के संकाय सदस्यों के जूरी सदस्यों ने सभी विद्यार्थियों की डिजाइन को जांचा जिसके आधार पर पुरूस्कार दिये जो है : गाथा जैन, जयश्री पेरीवाल स्कूल, सुश्री लावन्या हाडा, बनस्थली स्कूल, कोस्तुभ देवी, संस्कार स्कुल।

जयपुर फोटोजर्नलिज्म सेमिनार कल

जयपुर । जयपुर फोटोजर्नलिज्म सेमिनार का 8वां संस्करण 16 नवंबर को 5 बाय ओयो, बाईस गोदाम सर्कल, जयपुर में आयोजित होने जा रहा है।सेमिनार में भाग लेने के लिए पत्रकारिता एवं फोटो पत्रकारिता का अनुभव रखने वाले विशेषज्ञ अपना अनुभव साँझा करेंगे। देश के विभिन्न हिस्सों के पत्रकारिता एवं जन संचार के छात्र और प्रोफेसर भी इस सेमिनार में शिरकत करेंगे। जिसका उद्देशय है की वे हार्डकोर फोटोजर्नलिज्म की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को सीख सके। इस सेमिनार को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य लोकतंत्र के चौथे स्तंभ यानी पत्रकारिता में नयी क्रांति लाना है। इस सेमिनार के मुख्य वक्ता संजय अवस्थी होंगे, जो इंटरनेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर माइग्रेशन (संयुक्त राष्ट्र प्रवासन एजेंसी) के कार्यालय प्रमुख हैं। प्रमुख वक्ता रोहित परिहार, प्रियंका जोधावत, मनोज माथुर, अयोध्या प्रसाद गौर, डॉ. मनोज लोढा, अजय चोपडा, हेमजीत मालू, पुरुषोत्तम दिवाकर होंगे। सेमिनार का आयोजन इमेजिन फोटोजर्नलिस्ट सोसाइटी द्वारा किया जा रहा है, जो देश भर से सर्वश्रेष्ठ फोटो जर्नलिज्म लाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं।

12 बीघा कृषि भूमि पर बसाई जा रही दो कॉलोनियां ध्वस्त

■ दहमीकलां में मणिपाल यूनिवर्सिटी के पीछे तेजस्वनी प्रथम व द्वितीय के नाम से काटी थी कॉलोनी

■ काश्तकार व बिल्डरों ने जमीन का न तो भू-रूपांतरण कराया और न ही जेडीए से कोई निर्माण स्वीकृति ली

जयपुर (कासं)। राजधानी जयपुर में काश्तकार और बिल्डर धड़ल्ले से कृषि भूमि पर अवैध कॉलोनियां काटकर बेच रहे हैं। सोमवार को जेडीए की प्रवर्तन टीम ने दहमीकलां में 12 बीघा कृषि भूमि पर बसाई गई दो अवैध कॉलोनियां तेजस्वनी प्रथम व द्वितीय को पूर्णत: ध्वस्त किया। काश्तकार और बिल्डर ने इस जमीन का न तो भू-रूपांतरण कराया और न ही कॉलोनी काटने की कोई परमिशन जेडीए प्रशासन से ली। मास्टर प्लान को ताक पर रखकर चोरीछिपे यहां प्लॉट्स काटकर अवैध निर्माण किये जा रहे थे। ग्रेवल रोड से लेकर बाउंड्रीवाल और कई निर्माण भी कर लिए थे।

जेडीए के मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन रघुवीर सैनी ने बताया कि दहमीकला में मणिपाल यूनिवर्सिटी के पीछे करीब 12 बीघा कृषि भूमि पर तेजस्वनी प्रथम व द्वितीय के नाम से दो अवैध कॉलोनियां बसाई जा रही थी। जैसे ही इसकी सूचना मिली तो जेडीए की टीम सोमवार सुबह मौके पर पहुंची जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से प्रारंभिक स्तर पर ही अवैध निर्माण ध्वस्त किया। ध्वस्तीकरण में खर्च हुई रकम काश्तकार से वसूली जायेगी, जिसके लिए नोटिस थमा दिया है। इसके अलावा सिरसी रोड पर बिंदायका के पास ग्राम पिण्डलोई मे गैर अनुमोदित आवासीय योजना स्वपन लोक में बिना जेडीए की अनुमति व स्वीकृति के बिल्डिंग बायलॉज का गंभीर उल्लघन कर रातोंरात 6 अवैध विला बना लिये गये थे, जिन्हें भी ध्वस्त कराया है।

घर से 661 किलो तांबा चोरी हुआ

जयपुर (कासं)। महेश नगर इलाके में कुछ बदमाशों ने स्कूटर रिक्शा से 7 लाख रुपए का 661 किलो कॉपर (तांबा) चोरी कर लिया। यह पूरी वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई। पीड़ित कुणाल भार्गव ने महेश नगर थाने में अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया हैं। कुणाल भार्गव ने बताया कि वह 12 कृष्णा नगर गोपालपुरा बाइपास पर रहता हैं, उसका कॉपर का काम हैं। वह कुछ सामान तो वह दुकान में रखता है। वहीं, कुछ सामान दुकान के पास वाली कमान के गेट के अंदर गैलरी में रखता हैं। बदमाश मकान के बाहर के गेट का ताला तोड़कर गैलरी में 16 बंडल ले गए। इन बंडलों का वजन 661 किलो है। जिसकी बाजार कीमत करीब 7 लाख रुपए हैं। पुलिस ने सीसीटीवी देख कर एफआईआर दर्ज कर ली। महेश नगर थाना पुलिस ने बताया की स्कूटर रिक्शा में आकर बदमाशों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया हैं। यह घटना गत 12 नवंबर की रात की है। वारदात में करीब चार लोग शामिल हैं, जिसमें एक महिला भी हैं। पुलिस ने आसपास लगे हुए सीसीटीवी से और साफ फुटेज खंगालना शुरू कर दिया हैं, गैंग के हुलिये के आधार पर बदमाशों की तलाश जारी है।

एसएमएस अस्पताल में नर्सिंग ऑफिसर्स का विरोध-प्रदर्शन

जयपुर, (कासं)। राजधानी के सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज प्रशासन की ओर से आई एच एम एस पोर्टल के माध्यम से अस्पताल में आने वाले मरीजों के सभी कार्य केवल नर्सिंग ऑफिसर्स की एस एस ओ आईडी से ऑनलाइन किये जाने के एक तरफा निर्णय तथा चिकित्सकों को सभी जिम्मेदारियों से मुक्त रखने से नाराज नर्सिंग ऑफिसर्स ने सवाई मानसिंह अस्पताल के मुख्य द्वार पर दो घंटे गेट मीटिंग कर विरोध प्रदर्शन किया।

राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष बलदेव सिंह चौधरी ने बताया कि मेडिकल कॉलेज प्रशासन ने बगैर तैयारी के जल्दबाजी में आई एच एम एस पोर्टल प्रारम्भ किया है। इस दौरान जवाबदेही नर्सिंग ऑफिसर्स पर थोपने का प्रयास किया है। वहीं चिकित्सकों पर किसी भी तरह की जवाबदेही निर्धारित नहीं की गई है।

कार्यकारिणी सदस्य राजेश शर्मा ने बताया कि आज की गेट मीटिंग को नर्सेज के वरिष्ठ नेता प्यारेलाल चौधरी, राकेश सिंह, बलराम चतुर्वेदी, खुशी राम मीणा, महिपाल सामोता, सुनीता बेनीवाल, महेश शर्मा, हेमराज गुप्ता, धर्मपाल सिंह, दीपक चौधरी, मनोज दुब्बी व राजेश योगी सहित कई लोगों ने संबोधित किया।

संयोजक रोशन लाल यादव ने बताया कि विरोध प्रदर्शन के बावजूद मेडिकल कॉलेज प्रशासन द्वारा समस्या के हल के लिए नर्सिंग ऑफिसर्स से किसी भी तरह का संवाद नहीं किया गया है।

वहीं मेडिकल कॉलेज प्रशासन के निर्णय के विरोध में मंगलवार को भी एसएमएस अस्पताल के मुख्य द्वार पर दो घंटे गेट मीटिंग कर विरोध जताया जाएगा।

स्थापना दिवस पर पौधारोपण

जयपुर । नेहरू युवा केंद्र संगठन ने सोमवार को 50वां स्थापना दिवस मनाया। भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के स्वायत्तशासी संस्था नेहरू युवा केंद्र संगठन के 50 वें स्थापना दिवस पर जयपुर केंद्र ने मुरलीपुरा व विद्याधर नगर स्थित भारतीय खेल प्राधिकरण के खेल स्टेडियम में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर एथलेटिक्स कोच शैलेंद्र सिंह ने सभी खिलाड़ियों एवं युवा मंडल के सदस्यों से कहा की पर्यावरण को साफ-सुथरा व संतुलित बनाए रखने में पेड़-पौधों का विशेष योगदान है। ग्रामीण युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाग लेने और उनके व्यक्तित्व एवं कौशल विकास के उद्देश्य से नेहरू युवा केन्दों की 1972 में आज ही के दिन स्थापना की गई थी।

द्रव्यवती नदी में घुसे युवक को बचाया

जयपुर । द्रव्यवती नदी में सोमवार सुबह एक युवक के डूबने की सूचना पर इलाके में हडकम्प मंच गया। मौके पर पहुंचे लोगों को पुलिस कंट्रोल रूम को घटना की जानकारी दी। पुलिस कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के बाद सिविल डिफेंस की टीम को रवाना किया गया। सिविल डिफेंस के भीम सिंह ने द्रव्यवती नदी में घुस कर युवक को बाहर निकाला। युवक मानसिक रूप से बीमार बताया जा रहा हैं। युवक के सिर पर भी पानी में गिरने से चोट लगी। भीमसिंह ने युवक को बाहर निकालने का प्रयास किया लेकिन वह पानी में डूबता जा रहा था। अगर सिविल डिफेंस की टीम मौके पर सही समय पर नहीं पहुंचती तो उसकी मौत हो सकती थी।

शराब के नशे में युवक की हत्या करने वाला गिरफ्तार

जयपुर (कासं)। हरमाड़ा पुलिस ने शराब पीकर एक युवक को मौत के घाट उतारने के मामले में हत्यारे को दबोच लिया। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी ने मृतक के अलावा अन्य लोगों के साथ भी मारपीट की थी।

डीसीपी (पश्चिम) वन्दिता राणा ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी सुखवेन्द्र चौहान (32) पुत्र हरिवंश सिंह इटावा यूपी हाल संगम कॉलोनी रोड नम्बर 14 हरमाड़ा का रहने वाला हैं। कांस्टेबल दयाराम को मुखबिर ने सूचना दी थी कि मृतक की हत्या उसके पास ही रहने वाले साथी सुखवेन्द्र चौहान ने की थी। इस पर पुलिस ने आरोपी सुखवेन्द्र सिंह को दस्तयाब किया गया। जिसने वहां पर सो रहे एक अन्य व्यक्ति गोपालगंज बिहार निवासी अरविन्द सिंह के साथ भी मारपीट कर रुपए छीन लिए थे। घटना का खुलासा होने के बाद टीम ने मृतक की शिनाख्तगी के प्रयास किए। पुलिस ने मृतक की पहचान कोटा ग्रामीण हाल हरमाड़ा निवासी सुरेश उर्फ कालू प्रजापत (35) के रुप में हुई थी। पुलिस ने पहचान कर घरवालों को बुलाया। सुरेश के भाई बजरंग ने इस संबंध में हत्या का मामला दर्ज करवाया था। पुलिस ने मृतक सुरेश उर्फ कालू का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाया था। हरमाड़ा पुलिस को 7 नवंबर को सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति की लाश रोड नम्बर 14 पुलिया के पास चौखटी पर पड़ी है।

कार की टक्कर से स्कूटी सवार मरा

जयपुर (कासं)। चित्रकूट इलाके में तेज रफ्तार कार की टक्कर से एक स्कूटी सवार व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस ने बताया बजरंग वाटिका, भांकरोटा निवासी महेंद्र सिंह 11 नवंबर की शाम करीब 6 बजे विजय द्वार होते हुए स्कूटी से घर की तरफ आ रहा था। इस दौरान गांधी पथ पुलिया के पास एक तेज रफ़्तार कार ने स्कूटी को टक्कर मार दी। हादसे में गंभीर घायल महेंद्र सिंह को एक निजी अस्पताल में ले जाया गया, जहां चिकत्सकों ने सवाई मान सिंह हॉस्पिटल रेफर कर दिया। यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया। पुलिस कार चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच में जुटी है।

Entrepreneurs' Day

When you think about it, the world is crammed with great products that most people tend to take for granted now, but that were once non-existent. That is, until they were somehow dreamed up by a budding and creative entrepreneur. From the postage stamp to the jet engine, from the cheeseburger to the microchip, radical inventions by brilliant minds have changed the way we live our lives and the way our futures are shaped. In recognition of these people, it is now possible to celebrate Entrepreneurs' Day.

#CHILDREN'S DAY

A New Record in Safeguarding Children

An initiative taken under CII-Young Indians 'Project Masoom', as many as 7278 children together participated in a child safeguarding session in Jaipur on the occasion of Children's Day. This was also an attempt to break the existing Guinness World Record for the largest number of students attending a child safeguarding lesson at a single venue.

Tusharika Singh
Freelancer writer and city blogger

This Children's Day, the Pink City might have created history. As many as 7278 children between the age group of 6 years to 16 years participated together in a child safeguarding lesson at the Neerja Modi School in Jaipur. The event was an initiative of Confederation of Indian Industries and the Jaipur Chapter of Young Indians to sensitize the students about Good Touch and Bad Touch and break the existing Guinness World Record for the largest number of students attending a child safeguarding

lesson at a single venue. This particular record is currently of 4002 students and was made by the Hindustan International School in Chennai in 2019.

Project Masoom

The initiative was taken under the Project Masoom of Young Indians. Yi Project MASOOM was conceived to keep children safe by creating awareness on child safety amongst young children, parents, teachers etc. The Masoom project was launched nationally by Kailash Satyarthi, Recipient of the Nobel Peace Prize & Founder, Bachpan Bachao Andolan in 2015. The objective of Yi's engagement on this project is to spread awareness on Child Sexual Abuse by conducting workshops with primary school teachers, visiting schools to teach children about safe and unsafe touch, sensitize the parents about it and to spread awareness to the public through rallies and campaigns.

Safe Touch and Unsafe Touch

The training session began with an ice breaking session with the children wherein games were played and songs were sung. Later, with the help of films and visual presentations, trainers and subject experts, Apurva Kaushik and Nisha Jain Grover made the students aware on significant topics such as negative and positive emotions, personal and private space, what are one's private parts, safe touch and unsafe touch what should a child do when someone tries to touch their private parts or makes them touch his/her private parts, child helpline number 1098, POCSO Act, etc. In an interactive session, they also told the students about the circle of trust which includes their parents, siblings, grandparents and teachers and how they should not be apprehensive about reaching this circle if someone tries to touch them inappropriately.

Challenging to safeguard children in digital age

Telling more about the objective of this event, Chairman, CII Rajasthan & Managing Director, Man Structurals Pvt Ltd, Gaurav Rungta said that in this digital age where technology has taken over, children have become more vulnerable and it has become even more challenging to safeguard them. Young Indians which is an integral part of the CII is actively working on the ecosystem for the prevention of Child Sexual Abuse (CSA) in the country through awareness sessions, capacity building, training programmes and advocacy initiatives.

The Chief Guest on the occasion was Secretary- Social Justice & Empowerment Department, Government of Rajasthan, Dr Samit Sharma. In his address to the students, he said that children should remember three things if someone tries to touch them inappropriately -- 'No', 'Go' and 'Tell'. He said that children should scream and shout and run away from the abuser as well as seek help and tell parents and teachers about this.

Students from various schools including Neerja Modi School, Shree Maheshwari Sr. Sec. School, Prem Niketan School, MPS Jawahar Nagar, JVP International School, Government Upper Primary School Jhotwara, Jagriti Balika Sadan School C Scheme, Government Girls Sr. Sec. School, etc. participated in the session to make the World Record. The auditors from GWR were also present on this occasion.

In his euphoria, he never felt the sly hand that had slipped in and out of his pocket in the twinkling of an eye. But he realised what had happened when, after a hearty meal at a café, he fumbled for his purse and found it missing. For a moment he wondered whether he had forgotten the purse in the prison. Then, distinctly recollecting having pocketed it when he collected his prison earnings, he frantically searched all his pockets.

#STORY

Full Circle

N.N. Sachitanand
Senior journalist

The guard opened the cell door, beckoned to Janak Singh and said curtly, "Jailor Sahib is calling you."

For an apprehensive moment, Janak wondered what misdemeanour he had committed. He knew he was nearing the end of his sentence and did not want to get into the bad books of the 4 authorities at this juncture.

"Come on, come on," urged the guard impatiently. "What are you waiting for?"

Janak Singh snapped out of his reverie and shuffled out of his cell. The jailor was a stern-looking, grizzle-haired person. However, he greeted the prisoner with a smile this time.

"Janak," he said, "you must be wondering why I have called you. Well, it is to give you a piece of good news. Because of your good behaviour, the Government is pleased to remit your sentence by two months. So, you will be set free tomorrow morning."

Janak Singh was nonplussed and speechless for a while. And then a wave of exultation washed over him.

Out In The Living

Free! He was going to be free after three long, interminable years. Free of these cold confining walls, of that hard stone bed, of the insipid food that one could hardly swallow, of the coarse jail-mates who were constantly coming to blows. By tomorrow, he would be out in the living, breathing world peopled by real human beings.

"Well, have you nothing to say?" the sharp voice of the jailor broke in on his welter of thoughts.

"I-I don't know what to say, sir," stammered Janak Singh.

The jailor smiled understandingly and said, "I know your feelings, Janak. However, what I want to know is your future programme. Have you any home to go to, any relative?"

Janak Singh hung his head and said, "No, sir, I have nobody. I have not yet given any thought to what I am going to do outside – most probably, I will look for a job."

"Hmm – you know, Janak, it will not be easy for you, an ex-jailbird, to get a job. But I have taken a liking to you from what I have noticed of your behaviour here. I know you would not like to go back to a life of crime."

"No, sir, definitely not," said Janak fervently.

And it was true. He had never intended to become a carrier for the smugglers. But, after stepping out of the orphanage, he had failed to secure a proper job and had been tempted into criminal activity by an acquaintance who always seemed to have a lot of money.

But Janak had been caught with the contraband on his very second round and jailed for three years. Secretly, he was relieved, as the unlawful activity, the constant hiding from the police and the company of criminals had always been distasteful to him.

"I want to help you keep out of criminal occupations," said the jailor. "Here is the address of a person I know who might be able to help you get a job. There is a small note I have written to him about you. Do go and contact him. Incidentally, you have some money coming to you as your earnings from the jail workshop. That should sustain you for a month."

"Thank you, sir," said Janak effusively, "thank you very much for your kindness."

"No, no, Janak, don't thank me. The only thanks I want is that you keep out of mischief that might land you back here."

'The Jailor Sahib need not have emphasised my keeping out of mischief,' thought Janak as he stepped out into the free world the next day. 'I am thoroughly sick of prison life and have no intention of landing back there.'

Drawing a deep breath he stared with pleasure at the things around him. Ah! What a relief it was to sniff the fresh breeze after that dank, lifeless, stale odour of prison! What a feast of colour the outside world was compared to the drab greys and blacks of the prison walks and uniforms. How wonderful to see faces with bloom on their cheeks, smiles on their lips and sparkle in their eyes , instead of the sullen visages of his fellow-prisoners !

He was free, free to do what he pleased. No more the daunting prospect of back-breaking labour at the stone quarry, no more jumping to the harsh commands of the guards , no more sticking to restrictive schedules.

No, sir, he would be mad to give the law any opportunity to put him back in that hell-hole. From now on, it was the straight and narrow path for him.

> No, sir, he would be mad to give the law any opportunity to put him back in that hell-hole. From now on, it was the straight and narrow path for him.

For a few hours Janak Singh wandered around in a rosy haze, just getting used to the feel of freedom. Often, he bumped into persons in his preoccupation and had to apologise. But even the apologies, given voluntarily, felt good when he recalled the cringing obsequiousness with which he had to treat the prison guards and convict leaders.

A Rude Shock

In his euphoria, he never felt the sly hand that had slipped in and out of his pocket in the twinkling of an eye. But he realised what had happened when, after a hearty meal at a café, he fumbled for his purse and found it missing. For a moment he wondered whether he had forgotten the purse in the prison. Then, distinctly recollecting having pocketed it when he collected his prison earnings, he frantically searched all his pockets.

With a sinking heart he realized that he had been pickpocketed. Not only were his jail earnings gone but also the all-important letter of introduction to the prospective employer, given by the jailor.

Somehow he managed to find enough money in another pocket to pay off the café bill. Shattered, he stumbled out of the restaurant. The taste of the food he had eaten turned bitter. The sun had lost its warmth and the world its charm. What should he do now, was the question that echoed and re-echoed in his mind.

Without the introductory letter, he would not be able to approach the person the jailor had suggested. And, with his money all gone, he could not now be complacent about employment. He had to get back to the jail, distasteful as it was, and ask the jailor for another letter.

When Janak arrived at the jail gate, he was panting and exhausted. In his desperate anxiety, he had practically run the distance back. But a rude shock awaited him there.

"The Jailor Sahib is not here," informed the sentry curtly. "He left for home today on leave. He will not be back for another month."

Dejectedly, Janak Singh trudged back to the city. He had to get a job, any job, till the jailor returned and he could get a duplicate letter of recommendation.

Late in the evening that day, as he squatted footsore and weary in the city park, he faced the fact that getting a job was going to be a miracle. Everywhere he had met with either a curt refusal or a kind advice to come and try his luck after a few days.

"Business is dull," said a wholesaler. "I have already got more coolies than I need for my warehouse.

"Sorry, we cannot afford a servant these days," said a housewife.

A building contractor shook his head and said, "How can I offer you work when I myself am not getting any?"

A restaurant manager asked him if he had any experience in cooking or waiting on tables. He promptly lost interest when Janak replied in the negative.

No Vacancy was a prominent sign in front of all the offices and factory gates. A lean and hungry - looking man who was loitering in front of the gate of one of the factory gates remarked hopelessly, "They are laying off even the regular workers. What is the hope for the likes of us?"

As night descended, the park attendant came along and roughly informed Janak, "It is closing time now. You will have to go out."

Surprised and disconcerted to know that he could not sleep the night on a park bench, Janak hesitantly trudged out.

The last few coins he had jingled in his pocket. Deep hunger assailed him. Deliberately, he had not eaten anything the whole day so that he could spend all his time job-hunting.

From a wayside vendor he now bought some peanuts. After eating them, he drank water from a municipal tap. Then began the nightmarish hunt for a sleeping place. He discovered that even a big city like this did not have shelter for a simple destitute like him. It was very late in the night when he found an empty area of pavement which was not claimed as his regular bed by another destitute.

Wearily, he stretched out on the stony pavement. For some time, his very fatigue made him immune to the discomforts of his bed. But, eventually, the pointed edges and sharp corners of the stones had their say. The strong stench of urine from the wall assailed his nostrils. He huddled into a foetal position and tried to compose himself to sleep but could manage only fitful dozes.

In the late hours of the night, there arose in his mind the image of his smooth stone bed in prison and the warm, coarse blanket he was provided there. A twinge of longing for the prison cell coursed through him.

The next day was almost a repetition of the first, except that at the end, he had no money left even for a handful of peanuts. The day-long lack of nourishment, the fatiguing fruitless search for employment, the mental depression - all combined to give him painful cramps in the stomach as he huddled on his pavement slab that night.

Light showers forced him, along with a horde of other homeless souls, to crowd ineffectively under the shelter of a bus stop nearby. Often, during that miserable and interminable night, he recalled the snug and dry warmth of his prison cell.

The Last Straw

By noon the next day, he was utterly exhausted. He sank down in a heap in front of a restaurant, his stomach howling for food. With dulled perception, he watched the scene before him.

A waiter came out with a pail of leftovers and emptied it in a side alley. Immediately, a pack of ravenous women and children, clad in tatters, threw themselves at the garbage, snatching at the remnants of food in it. Near the restaurant door, an emaciated woman clutched a grubby, crying infant and rattled hopefully a dirty tin plate containing some coins. Most of the customer ignored or cursed her. But a few flung a coin or two into her plate.

For some time, Janak watched this without reacting. Then, all of a sudden, the gnawing hunger in his stomach generated an idea in his brain - an idea that became a compulsive obsession.

Slowly, he rose to his feet, shuffled towards another restaurant and stood near its entrance. As a customer came out, Janak's hands went out in a supplicating gesture and his mouth uttered a piteous appeal.

Janak Singh had never imagined that one day he would become a beggar. But he knew that without sustenance, he would never be able to trudge the streets for a job. So, he begged.

A couple of hours later, his humiliation was complete and his hunger remained unquenched. His palms were still empty and his ears were ringing with curses and insults, the likes which he had not heard even from his prison guards.

The last straw was when another, ill-clad, unkempt, lame creature hobbled up to him and said fiercely, "This is my corner. How dare you intrude into my territory? Get away before I call the local don who is sure to beat you up."

Janak Singh gazed askance at him but refused to budge. The lame beggar hobbled off and within a few minutes, returned with two tough-looking characters in tow. Without much ado, one of the toughs grabbed hold of Janak and hustled him into a side alley. The other one gave two blows to his stomach.

Janak collapsed on the ground. Through the dizziness of a near faint, he heard one of the goons threatening - "If you dare show your face again in our territory, much worse will happen to you."

Janak Singh did not count the hours as he lay there defeated and dejected. It was quite dark when he felt fit enough to get up and walk away. By now hunger had grown into a permanent dull ache in his stomach and lightness in his head.

It would be meal time in jail, he surmised. Visions of the food supplied there rose in his mind. In jail, the food had seemed tasteless and insipid. But now, his longed for it with every fibre of his being.

As the thought came to him, he halted and glanced around. He was in a posh shopping neighbourhood with wares displayed in huge show-windows.

Food, shelter and a bed - that was what he needed. Suddenly, he knew how he could get them all.

"I am sorry, Jailor Sahib," he said to himself as he reached down, lifted a stone from the road and threw it at a lighted store window. As an alarm went off, he waited patiently for the Police to turn up.

writetoarbit@rashtradoot.com

> It would be meal time in jail, he surmised. Visions of the food supplied there rose in his mind. In jail, the food had seemed tasteless and insipid. But now, his longed for it with every fibre of his being. As the thought came to him, he halted and glanced around. He was in a posh shopping neighbourhood with wares displayed in huge show-windows. Food, shelter and a bed - that was what he needed. Suddenly, he knew how he could get them all. "I am sorry, Jailor Sahib," he said to himself.

#PARENTING

Good Sleep For Mental Health

For parents who cannot allot more time in their schedule for sleep, the research team recommends avoiding eating large meals and drinking caffeine close to bedtime. This lets the body know that it is time to wind down.

Getting enough sleep plays an important role in the mental health-and life satisfaction-of new and established parents, research finds.

The research team analysed sleep, physical activity, mental health, and life satisfaction in couples. Their findings, published in the journal Sleep Health, indicated meeting sleep guidelines was associated with better mental health and, in turn, life satisfaction of parents of new-borns. Additionally, they observed positive mental health changes in women, especially for first-time mothers, but no changes were seen for men regardless of parental status.

"Given the well-known decreases in physical activity for most couples with the transition to parenthood and our findings in this study that most parents were not meeting the recommended sleep hours, targeted approaches that adapt intervention dosages to the changing physical activity and sleep needs of couples throughout the perinatal and postpartum periods may be a useful intervention strategy to improve, and ideally sustain, long-term mental health in parents," explains Danielle Symons Downs, professor of kinesiology and obstetrics and gynaecology and associate director of the Social Science Research Institute at Penn State.

For parents who cannot allot more time in their schedule for sleep, the research team recommends avoiding eating large meals and drinking caffeine close to bedtime. This lets the body know that it is time to wind down.

"The study showed that physical activity had a negligible impact on mental health of parents. However, getting the recommended sleep hours was associated with better mental health for parents," says senior author Alison Divine, a lecturer at the University of Leeds.

"Although it varied, most parents were below recommended sleep hours by approximately one hour. Small improvements in sleep hours could have significant impact for parents' mental health. This indicates that an intervention prioritizing sleep health education for new parents could make a more positive impact on their quality of life."

THE WALL

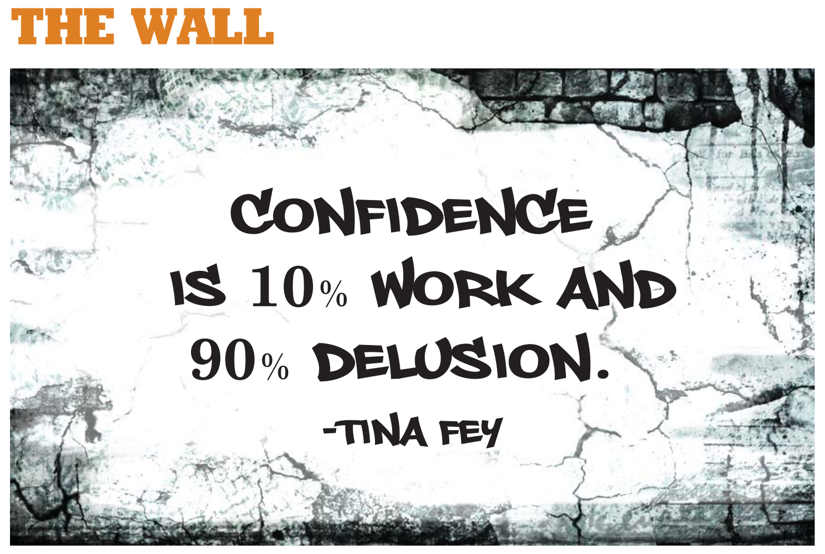

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

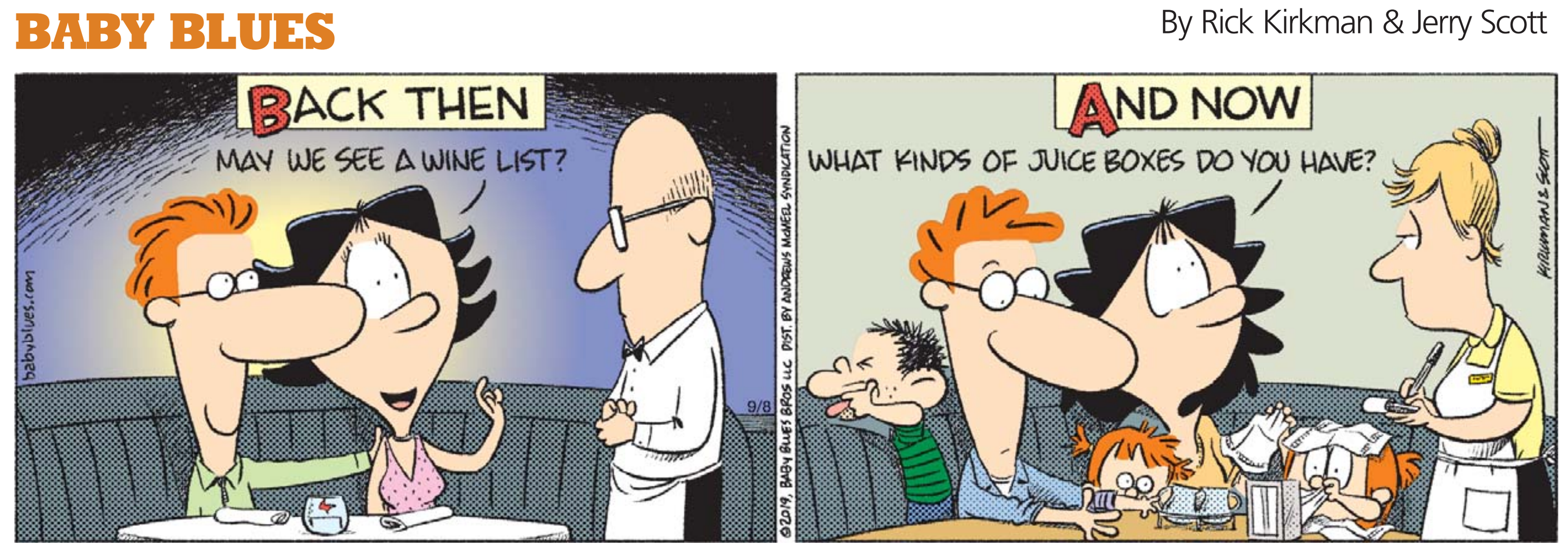

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

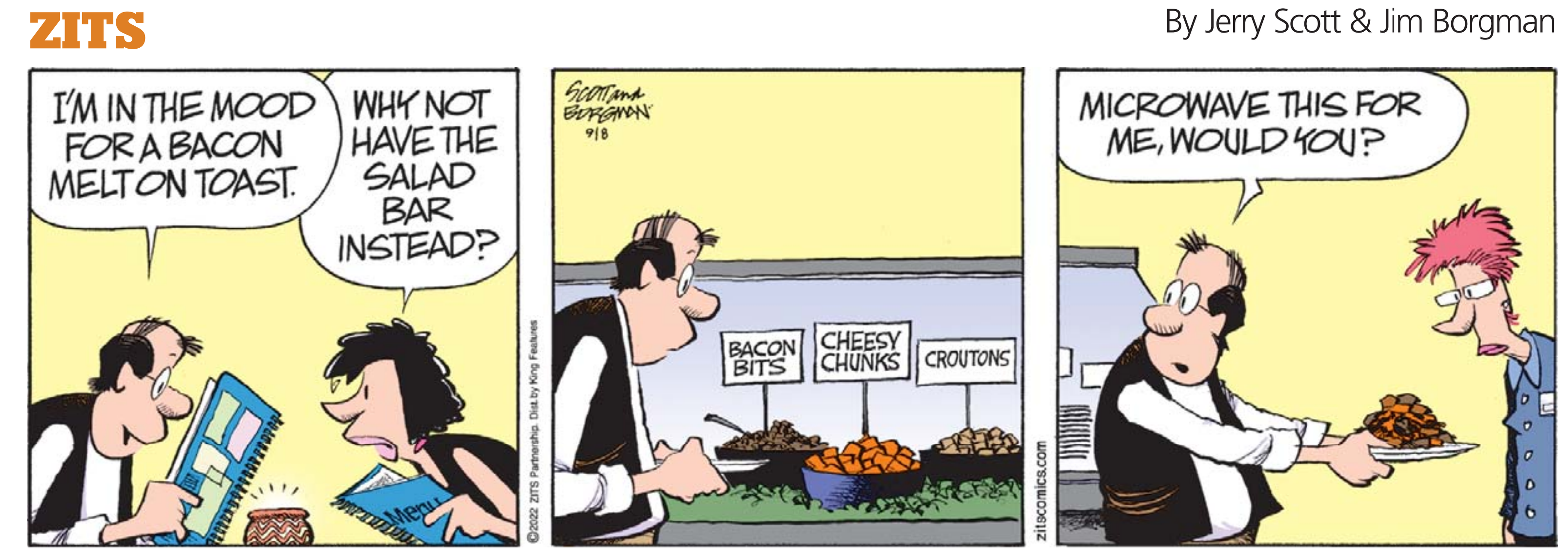

बैंक ऑफ बड़ौदा में हुई छह लाख 73 हजार की लूट का पर्दाफाश

तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया

सवाई माधोपुर, (निस) । जिला मुख्यालय पर गत दिनों आलनपुर स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा में हुई बैंक डकैती की वारदात का सवाई माधोपुर पुलिस ने खुलासा करते हुए तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार करने में बड़ी सफलता प्राप्त की है।

सवाई माधोपुर पुलिस अधीक्षक सुनील बिश्नोई ने जानकारी देते हुए बताया कि गत 21 अक्टूबर को बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा आलनपुर में ये तीन हथियारबंद बदमाश बैंक से 6 लाख 73000 हजार रुपये लूटकर फरार हो गए थे । बैंक लूट की घटना को लेकर सवाई माधोपुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हुमांशु शर्मा के नेतृत्व में विशेष टीम का गठन किया । पुलिस द्वारा शहर के सीसीटीवी कैमरा रिकॉर्डिंग, टोल नाके, चालन शुदा अपराधियों आदि का रिकॉर्ड चेक किया गया । गहन छानबीन एवं जांच के पश्चात आखिरकार पुलिस ने तीन

पुलिस ने आलनपुर बीओबी बैंक में लूट करने वाले बदमाशों को गिरफ्तार किया।

आरोपियों को धर दबोचा। पुलिस ने जुगनू बावरी, दिलीप बावरी तथा श्याम बावरी को गिरफ्तार किया है।

तीनों आरोपी जिला मुख्यालय स्थित हम्मीर पुल कच्ची बस्ती के निवासी हैं। पुलिस ने तीनों आरोपियों

■ **तीनों आरोपी जिला मुख्यालय स्थित हम्मीर पुल कच्ची बस्ती के निवासी हैं**

को दौसा जिले के मंडावरी हाईवे पर किशनपुरा गांव से घेरा देकर पकड़ा है। इन आरोपियों की तलाश में पुलिस ने रींगस ,जयपुर, भरतपुर, टोंक, दिल्ली, गाजियाबाद, रूद्रपुर उत्तराखंड आदि में भी खाक छानी। इसके बाद पुलिस ने आखिरकार तीनों आरोपियों को धर दबोचा। पुलिस के अनुसार बैंक लूट की घटना में शामिल घटना के वक्त रैकी करने वाले आरोपी अभी फरार हैं । जिनकी धरपकड़ के लिए भी लगातार पुलिस प्रयास कर रही है।

बनेड़ा पुलिस ने ब्लाइंड मर्डर का खुलासा किया, पांच गिरफ्तार

आरोपियों के खिलाफ कई थानों में संगीन धाराओं में मुकदमे दर्ज

बनेड़ा थाना पुलिस ने मर्डर केस के आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के बनेडा थाना क्षेत्र में हुए ब्लाइंड मर्डर केस का पुलिस ने खुलासा करते हुए 5 आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।

बनेडा थानाधिकारी राजेंद्र ताडा ने प्रेस वार्ता में बताया कि क्षेत्र के सालरिया ग्राम पंचायत के श्रीजी खेडा गांव में अगस्त महीने में चोरों द्वारा उत्पात मचाते हुए दो-तीन घरों में चोरी की थी। इसमें तीसरे घर में देर रात्रि को चोर घुसे। इस दौरान घर में बाप-बेटी सो रहे थे चोर सरियो- हथियारों आदि से लैस थे। चोरों ने घर में सो रही गृहस्वामी की बेटी के कमर में पहना करौंदा (करंगती) खोल दी। इस दौरान बेटी की नींद खुल जाने से शोर मचाया। पिता लादू लाल खारोल भी नींद से जाग गए। पिता ने चोरों से संघर्ष किया। इस दौरान चोरों ने पिता लादू लाल खारोल के सिर में सरिए से वार कर दिया और अंधेरे का फायदा उठाकर भाग गए।

हमले में गंभीर घायल लादू लाल का चिकित्सालय में लगभग 5-7 दिनों तक इलाज चला और इलाज के दौरान मौत हो गई। थाना अधिकारी ने बताया कि हत्या के मामले में मुकदमा दर्ज हुआ। मामला बहुत ही पेचीदा था। जिला पुलिस अधीक्षक के आदेशानुसार एडिशनल एसपी के निर्देशन में टीम का गठन हुआ। घटना के दौरान चोरों द्वारा कोई सबूत नहीं छोडे जाने के कारण मामला काफी पेचीदा था। मुखबिर और साइबर टीम के सतत प्रयास द्वारा टीम की मेहनत रंग लाई। इस दौरान सूचना मिली की एक व्यक्ति मांडल में कोई कार्यक्रम में उपस्थित है जो इस मामले से संबंधित हो सकता है।

जानकारी मिलते ही पुलिस तुरंत पहुंची और युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ करते हुए गहन छानबीन की। पडताल के बाद दो युवक मंडल के और तीन युवक चित्तौडगढ के कुल पांच जनों को हत्या और लूट के मामले में गिरफ्तार किया गया, जिन्हें बापर्दा रखा गया। पुलिस गिरफ्त में आए आरोपियों में प्रकाश, अनिल, नारायण, राकेश और पप्पू कंजर है, जिनमे पप्पू के अलावा अन्य सभी आरोपियों के खिलाफ प्रदेश के कई थानों में संगीन धाराओं में मुकदमे दर्ज है।

नशीले पदार्थ बेचने पर पंचों ने लगाया 51 हजार का जुर्माना

हिण्डौन सिटी, (का.सं.)। गढ़ीवांधबा गांवडा मीना में 5 गांवों के पंच- पटेलों की बैठक हुई। जिसमें समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने के बारे में चर्चा करते हुए कई नियम बनाए गए। बैठक में बनाए गए नियमों में पहला नियम जुआ, सट्टा, शराब, स्मैक व चरस आदि नशीले पदार्थों पर पाबंदी रहेगी। अगर कोई व्यक्ति नशीली पदार्थों को बेचता पकड़ा गया तो 51 हजार व गांव में नशे में घूमते हुए मिला तो 11 सौ रुपए का जुर्माना होगा। दूसरा नियम दिन की बारात रहेगी। तीसरा नियम जन्मदिवस पर पूर्ण पाबंदी रहेगी। चौथा नियम लडकी देखने परिवार के अधिकतम दो व्यक्ति ही जाएंगे और सगाई की रस्म बेटा वाले के घर पर ही संपन्न होगी।

पांचवां नियम टीका पर पूर्ण पाबंदी रहेगी। छठवां नियम ल ग्न में दो बेस होंगे। सातवां नियम भात में 3 बेस, नारियल पतासे बंद, आठवां नियम दूल्हे की निकासी पर आतिशबाजी बंद, नवां नियम शादी में वीडियोग्राफी बंद, डेकोरेशन बंद, 10 वां नियम तीये की बैठक में अधिकतम पांच व्यक्ति ही जाएंगे। संस्कार में एक धोती, नुक्ता प्रथा पूर्णता बंद 11 वां नियम जामणा में दो व्यक्ति दो बेस, 11 सौ रुपए अधिकतम। 12 वां नियम महिला सुड्डा दंगल बंद। 13 वां नियम बारात में महिलाओं का जाना बंद। छुट्टन मीणा, राम रूप मीणा, हजारी पटेल, बाबू पटेल, मुंशी पटेल, पदम पटेल, बहादुर सिंह, रामप्रसाद मीणा, हजारी, सूरदास, रामनाथ पटेल, हुकम मास्टर, मदोरी मास्टर व रामलाल मीणा आदि उपस्थित थे।

युवक ने फांसी का फंदा लगाया

मसूदा, (निसं)। मसूदा थाना क्षेत्र के ग्राम सूरजपुरा में सोमवार को एक युवक ने बबूल के पेड़ पर फांसी के फंदे से लटक कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। मृतक के भाई हरलाल ने बताया कि वह अपने खेत पर मोटर बंद करने के लिए गया था। तभी उसने अपने भाई को फंदे से लटक कर देख होश उड़ गए। तत्पश्चात परिजनों व गांव वाले को सूचना दी। मौके पर जमा भीड़ ने सरपंच व मसूदा पुलिस को सूचना दी।

मसूदा सीआई दिनेश कुमार जीवनानी मय जाप्ते के मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को नीचे उतार कर मसूदा मोर्चरी में रखवाया गया जहां परिजनों की मौजूदगी में शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। वही पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। फिलहाल आत्महत्या के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया।

एएनएम के बाड़मेर ट्रांसफर पर हाई कोर्ट की रोक

झुंझुनूं, (निसं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने चिड़ावा ब्लॉक के उप स्वास्थ्य केंद्र बृजलालपुरा में कार्यरत एएनएम के बायतू बाड़मेर ट्रांसफर करने के मामले में रोक लगाते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

मामले के अनुसार चिकित्सा एवं स्वास्थ्य निदेशालय जयपुर द्वारा 17 अगस्त 2022 के आदेश के उप केंद्र बृजलालपुरा में कार्यरत एएनएम उबिता कुमारी का जिले से लंबीदूरी पर बायतु बाड़मेर के उप केंद्र पर ट्रांसफर कर दिया। जिससे व्यथित होकर अधिकरण के समक्ष अपील दायर की। सुनवाई के बाद अधिकरण से राहत नहीं मिलने पर प्रार्थिया ने एडवोकेट संजय महला व सुनिता महला के जरिए हाईकोर्ट में रिट याचिका दायर कर स्वास्थ्य विभाग के ट्रांसफर आदेश को चुनौती दी।

बहस में एडवोकेट संजय महला व सुनिता महला ने कहा कि निदेशालय से जारी ट्रांसफर आदेश से अपीलार्थी प्रभावित है। आदेश विवादास्पद, नियम विरुद्ध, राजनैतिक दुर्भावनापूर्ण व बिना मस्तिष्क लागू किए 600 किमी लंबी दूरी पर बाड़मेर जिले में किया गया है। बहस में न्यायालय से लंबी दूरी पर किए गए ट्रांसफर आदेश पर प्रार्थियां के संबंध में रोक लगाने की विनम्र प्रार्थना की। मामले की सुनवाई कर रहे न्यायाधीश इन्द्रजीत सिंह ने याचिका में उठाए गए बिंदुओं पर व प्रस्तुत रिकॉर्ड के अवलोकन के बाद प्रार्थिया के ट्रांसफर पर रोक लगाते हुए यथावत रखे जाने के आदेश जारी किए।

'युवाओं की मेहनत पर फिरा पानी'

अजमेर, (कास)। वनरक्षक भर्ती परीक्षा से पूर्व लीक हुए पेपर पर विधायक भदेल ने कांग्रेस सरकार को घेरते हुए कहा कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा से पूर्व आंसर शीट सोशल मीडिया पर वायरल होने पर दूसरी पारी का पेपर निरस्त होना गहलोत सरकार की नाकामी का उदाहरण है और समूचे परीक्षा तंत्र पर सवालिया निशान है।

फूड फेस्टिवल मनाया

मावली, (निसं)। बाल दिवस के अवसर पर स्थानीय विद्यालय अलोकदीप में फूड फेस्टिवल मनाया गया। स्थानीय सरपंच द्वारा इसका भूपेंद्र ने इसका उद्घाटन किया ,इस अवसर पर वार्डपंच ऋषि खत्री, मनीष विजयवर्गीय, स्कूल प्रबंधक किरण बाला विजयवर्गीय, अभिभावकों में प्रदीप वैष्णव ,रवि सोनी, इकबाल हुसेन, महेश जी खत्री , सुशील जैन, राजेन्द्र जैन इत्यादि अन्य मौजूद थे, प्रधानाध्यापिका श्वेता खत्री , ममता श्रीमाली एवम अन्य सभी स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की। इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों में सहभागिता और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देते है। अन्य स्टाफ सदस्य दिनेश पालीवाल, निर्मला मीना, गायत्री श्रीमाली, राहुल, रजनी राव, चंदा लोहार, सूरज राव, हेमलता, पुष्पा सभी उपस्थित थे।

देलवाड़ा थाने के स्वागत कक्ष का लोकार्पण

राजसमंद, (निसं)। विधायक मद से पुलिस थाने में बने नए स्वागत कक्ष का लोकार्पण विधानसभा अध्यक्ष व विधायक डॉ सीपी जोशी ने मोली खोलकर व लोकार्पण पट्टिका का अनावरण कर किया।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी ने डॉ जोशी का स्वागत करते हुए कहा कि पुलिस थाने में जब कोई व्यक्ति पहुंचे तो, उसे निडर होकर आना चाहिए दोनों पक्षों की सुनने के बाद कानूनी कार्रवाई के लिए यह कक्ष बनाया गया है। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष हरिसिंह राठौड, पूर्व जिलाध्यक्ष देवकीनंदन गुर्जर, देलवाडा प्रधान कसनी गमेती, उप प्रधान रामेश्वरलाल खटीक, समाजसेवी फतेहलाल गमेती, सरपंच मांगीलाल कटारिया, उपसरपंच प्रदीप पालीवाल, एएसपी शिवलाल बैरवा, डिएसपी छगन पुरोहित, तहसीलदार हुकुम कवर, बिडिओ सविता टी, थानाधिकारी उदयलाल गमेती सहित जनप्रतिनिधि व गणमान्य नागरिक मौजूद थे।

विधायक मद से बने स्वागत कक्ष का विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने लोकार्पण किया।

लोकार्पण के पश्चात डॉ सीपी जोशी ने थाने के निकट चल रहे हैं पंचायत समिति भवन के निर्माण कार्य की जानकारी प्राप्त की और निर्माण कार्य कर रहे ठेकेदार कैलाश श्रीमाली को शीघ्र और समय पर कार्य पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने विकास अधिकारी सविता टी को भी मॉनिटरिंग कर कार्य की गुणवत्ता की और ध्यान देने को कहा।

एलआईसी के एजेंट्स आज हड़ताल रखेंगे

झुंझुनूं, (निसं)। मंगलवार को देशभर के भारतीय जीवन बीमा निगम के अभिकर्ता अपनी विभिन्न मांगों को लेकर एक दिन की हडताल पर रहेंगे। मंगलवार को झुंझुनूं की सभी शाखाओं मुख्य शाखा, सीएलआईए शाखा झुंझुनूं, नवलगढ़ एसओ व उदयपुरवाटी एसओ के सभी अभिकर्ता पूरे दिन हडताल पर रहकर अपनी अपनी शाखाओं के सामने सुबह साढे नौ बजे से शाम पांच बजे तक धरने व प्रदर्शन पर रहेंगे।

लाइफ इंश्योरेंस एजेंट्स फैडरेशन ऑफ इंडिया झुंझुनूं शाखा के सचिव जगदीशसिंह नांद ने बताया की मंगलवार को किसी भी शाखा के अभिकर्ताओं द्वारा नया बीमा कार्य, रिनिवल जमा, प्रीमियम पोर्टल, आनंदा आदि किसी भी प्रकार की बीमा सेवाएं नहीं की जाएंगी। झुंझुनूं के अध्यक्ष राजकुमार ढाका ने बताया कि भारतीय जीवन बीमा निगम का अभिकर्ता कई दिनों से भारतीय जीवन बीमा निगम उपभोक्ताओं व अपने हक की लड़ाई लड़ रहा है।

राहुल की भारत जोड़ो यात्रा का पुरजोर विरोध करेगा गुर्जर समाज : बैंसला

झुंझुनूं, (निसं)। गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति अध्यक्ष विजय सिंह बैंसला ने कहा कि राजस्थान सरकार के साथ हुए समझौते के मामलों का अभी तक निस्तारण नहीं होने पर राहुल गांधी की भारत जोडो यात्रा का राजस्थान में पुरजोर विरोध किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चार साल पहले राजस्थान सरकार और संघर्ष समिति के साथ हुए दो समझौते में क्रियान्वयन के बाद 233 को नौकरी देने, 13 हजार देवनारायण छात्रवृत्ति पेंडिंग, मुकदमों का निस्तारण, गुरुकुल विद्यालयों की अव्यवस्था जैसे मामले अभी भी पेंडिंग चल रहें हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार तत्काल इस पर कोई संज्ञान नहीं लेती है तो अब तीन दिसंबर को प्रदेश में होने वाली राहुल गांधी की भारत जोडो का पुरा गुर्जर समाज पूरजोर विरोध करेगा। यह बात उन्होंने रविवार को झुंझुनूं के उदावास गांव के देवनारायण मंदिर में गुर्जर

■ **उदावास में गुर्जर महानायक कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला की प्रतिमा का अनावरण, आरक्षण संघर्ष समिति अध्यक्ष विजय सिंह बैंसला झुंझुनूं पहुंचे**

महानायक कर्नल किरोडी सिंह बैंसला की प्रतिमा अनावरण समारोह को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए कहीं। इस अवसर पर समाज के लोगों माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर एडवोकेट अत्तर सिंह, एडवोकेट हनुमान सिंह, राजपाल सिंह भी मंचस्थ रहें। कार्यक्रम का संचालन दिनेश धाभाई एवं तेजपाल धाभाई द्वारा किया गया। इस दौरान गुर्जर अधिकारी कल्याण परिषद के अध्यक्ष भोलाराम गुर्जर, प्रवक्ता नितिन धाभाई, देवसेना जिलाध्यक्ष धर्मपाल गुर्जर, तहसील अध्यक्ष सुल्तान गुर्जर, विवेकसिंह, डॉ. रामकुमार सिराधना, हरि सिंह, भानूप्रकाश, बन्नाराम, लक्ष्मण राम, महेंद्र नून, सुरेश नून, महंत बच्चनाराम, कैप्टन सुभाष गुर्जर, सूबेदार फूलाराम एवं अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

नेतागिरी को समाज में दिजिए विजय सिंह बैंसला ने कहा कि जो लोग मुझे एक दूसरी पार्टी का एजेंट बताते हैं। मैं उनसे कहना चाहूंगा कि राजनीति के साथ तो सभी खडे रहते हैं। बल्कि समाज के साथ खड़ा होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि नेतागिरी को समाज में दिजिए ना कि नेतागिरी के लिए समाज का इस्तेमाल करें।

शिक्षा का दिया संदेश :- समिति अध्यक्ष विजय सिंह बैंसला ने समारोह में समाज में महिलाओं को प्राथमिकता और शिक्षा में भागीदारी का संदेश दिया। तथा युवाओं को नशे एवं सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का संदेश दिया।

जिले के तीन संस्थान लक्ष्य सर्टिफाइड

झुंझुनूं, (निसं)। जिले के बीडीके अस्पताल के लेबर रूम सहित तीन संस्थान लक्ष्य सर्टिफिकेशन मिला। जिसकी बदौलत तीनो संस्थानों को तीन साल में 42 लाख रुपए प्रोत्साहन स्वरूप मिलेंगे। जिन्हें विकास कार्यों में खर्च किया जा सकेगा।

■ **प्रोत्साहन स्वरूप तीन साल में मिलेंगे 42 लाख रुपये**

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजकुमार डांगी ने बताया कि सुरक्षित संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए, लेबर रूप की सुविधाएं को बेहतर व निर्धारित मानकों के अनुरूप बनाने पर लक्ष्य कार्यक्रम के तहत चिकित्सा संस्थाओं को एसेसमेंट के बाद चयन पर प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती हैं। इसके तहत सोमवार को जारी एसेसमेंट परिणाम में बीडीके अस्पताल को 6 लाख रुपए, उप जिला अस्पताल नवलगढ़ को 4 लाख रुपए और सीएचसी चिड़ावा को 4 लाख रुपए प्रतिवर्ष तीन साल तक दिए जाने के लिए चयन किया गया है। सीएमएचओ डॉ. डांगी तीनो अस्पताल के प्रभारियों और उनके स्टाफ को बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित की है।

रेलवे ट्रैक को क्षति पहुंचाने की भर्त्सना

डूंगरपुर, (निसं)। चेंबर ऑफ कॉमर्स डूंगरपुर के अध्यक्ष केके गुप्ता ने एक प्रेस विज्ञिप्त जारी कर बताया कि उदयपुर अहमदाबाद वाया डूंगरपुर रेलवे लाइन जो आमान परिवर्तन के बाद देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असारवा अहमदाबाद से हरी झंडी दिखाकर इसका शुभारंभ किया था। इस रेल के ट्रैक को उदयपुर जिले अंतर्गत केवड़ा की नाल में ओढ़ा में बने एक पुल पर विस्फोटक सामग्री का उपयोग कर उड़ा देने की साजिश रची गई है। साजिश से रेल की पटरी टूट गई और साथ ही स्लीपर में लगी लोहे की प्लेट भी उखड़ कर बाहर आ गई। गांव के जागरूक युवाओं द्वारा समय रहते इसकी सूचना प्रशासन को दी गई अन्यथा एक बहुत बड़ा रेल हादसा हो सकता था जो इस नए ट्रैक के लिए कलंक भी साबित हो सकता था।

गुप्ता ने बताया कि यह किसी शरारती तत्व द्वारा की गई कोई बदमाशी नहीं है वरन इसे एक विकास विरोधी एक गतिविधि कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। यह ऐसे लोगो का काम भी हो सकता है जिनकी व्यापारिक गतिविधियों मे रेल आने से प्रतिकूल प्रभाव पडा हो। सरकार द्वारा करोड़ों रुपए खर्च करके आमजन के लिए विकास की योजनाएं चलाई जाती हैं साथ ही समय पर पूर्ति करते हुए इसे आमजन हितार्थ प्रारंभ किया जाता है और ऐसे में विकास और देश विरोधी तत्वों द्वारा एसी घटनाओं को अंजाम दिया जाता है तो आमजन भी इससे भयभीत होता है तथा उस में असुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है क्योकि, रेल के साथ में हजारों जनमानस की भावनाएं जुडी है की रेल द्वारा एक संस्था सुगम साधन उन्हें प्राप्त हुआ है। जिसके माध्यम से वे अपने नगर डूंगरपुर से देशभर के अन्य स्थानों की यात्रा सस्ती दर पर कर सकते हैं साथ ही रेलवे मंत्रालय की कार्यकुशलता के बदौलत लोगों में पिछले 8 वर्षो में रेल मंत्रालय के प्रति विश्वास का भाव भी उत्पन्न हुआ है।

गुप्ता ने विशेष रूप से उल्लेख करते हुए बताया कि अहमदाबाद डूंगरपुर उदयपुर रेल आमान परिवर्तन कार्य पूर्ण होने के बाद इस परियोजना को गति देने की मंशा रखते हुए डूंगरपुर से उदयपुर रेल शुरू करने के लिए चेम्बर ऑफ कॉमर्स द्वारा प्रधानमंत्री और रेल मंत्री के नाम लगभग दो लाख पोस्ट कार्ड लिखने का अभियान चलाया गया था। चेंबर ऑफ कॉमर्स प्रधानमंत्री एवं रेल मंत्रालय से यह मांग रखता है कि इस निंदनीय घटनाक्रम की सीबीआई स्तर पर जांच कराई जाए ताकि ऐसी मानसिकता वाले साजिशकर्ताओं को जल्द से जल्द पकडऩे में सफलता प्राप्त हो।

दुष्कर्म के आरोपी पिता को कारावास

डूंगरपुर, (निसं)। पॉस्को कोर्ट ने 3 साल की मासूम बेटी के साथ रेप करने वाले आरोपी बाप को उम्र केद की सजा सुनाई हैं। कोर्ट ने आरोपी कर 1.50लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया हैं। सरकारी वकील योगेश जोशी ने बताया की 11 अगस्त 2022 को पीडिता के माँ ने वरदा थाने में रिपोर्ट दी।

■ **आरोपी ने तीन साल की मासूम से किया था दुष्कर्म**

रिपोर्ट में बताया कि रक्षा बंधन के दिन अपने बच्चों और पति को घर छोडकर भाई के घर राखीं बाधने गई थी। जब व वापस घर लौटी तो 3 साल की मासूम बेटी आप बीती अपनी माँ को बताई। वही नाबालिग ने यह भी बताया कि पापा पहले भी 2 बार रेप उसके साथ किया हैं। पीडिता की रिपोर्ट पर पुलिस ने मामला दर्ज आरोपी पिता गिरफ्तार किया। जिसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉस्को कोर्ट में चालन पेश किया। इधर, सोमवार को पॉस्को कोर्ट ने मामले की आखिरी सुनवाई करते हुए आरोपी पिता को दोषी करार देते हुए उम्र केद की सजा और 1.50लाख रुपये के जुर्माने का फैसला सुनाया हैं।

ओ.बी.सी. आरक्षण विसंगति को लेकर भारतीय किसान यूनियन ने ज्ञापन सौंपा

प्रदेश में 27 की जगह अन्य पिछडा वर्ग को 21 प्रतिशत मिल रहा आरक्षण

सादुलपुर, (निसं)। भारतीय किसान यूनियनचख्चूरू नें भूतपूर्व सैनिकों का राज्य सेवाओं में आमेलन नियमों को तार्किक बनाने के लिए जिलाध्यक्ष रामरतन सिहाग के नेतृत्व में मुख्यमंत्री राजस्थान को जिला कलेक्टर के माध्यम से ज्ञापन सौंपा है।

जिलाध्यक्ष रामरतन सिहाग ने बताया कि भूतपूर्व सैनिकों का 12.5 प्रतिशत, 15 प्रतिशत एवं 5 प्रतिशत आमेलन को होरिजेन्टल किए जाने के कारण अन्य पिछडा वर्ग को सेवाओं में नियुक्तियां की गुजाईश करीब-करीब समाप्त हो गई है। इस हेतु सरकार द्वारा गत सरकार के इस विसंगति युक्त नियमों में संशोधन कर अन्य पिछडा वर्ग के युवाओं के अंधकार में होते हुए भविष्य को बचाने का काम करें।

पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर हनुमानाराम ईसराण ने बताया कि केंद्र में अन्य पिछडा वर्ग का आरक्षण 27 प्रतिशत है, जबकि राजस्थान में अन्य पिछडा वर्ग का आरक्षण 21 प्रतिशत ही है जो पहले से कम है तथा उसमें भी जब रिक्तियाँ तय होती है तो अन्य पिछडा

ओ.बी.सी. आरक्षण विसंगति को दूर करने की मांग को लेकर मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर चूरू को ज्ञापन सौंपते भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी।

वर्ग की रिक्तियाँ कम करके 15 प्रतिशत ही तक ही सीमित कर दी जाती है, तथा गत सरकार के इस निर्णय के कारण अन्य पिछडा वर्ग के युवा नौकरियों से वंचित हो रहे हैं जो सरासर अन्याय है। वहीं बाल कल्याण समिति चूरू की सदस्या शर्मीला पूनिया ने बताया कि सरकार अन्य पिछडा वर्ग के युवाओं के साथ हो रहे अन्याय को रोके। ज्ञापन देने वालों में अमरसिंह दनेवा, राजेन्द्र बुडानिया, देवकरण फगेडिया, शिशपाल बुडानिया, गंगाराम कडवासरा, एडवोकेट इन्द्राजसिंह, एडवोकेट नरेन्द्र सिहाग, एडवोकेट साँवरमल स्वामी, जगदीश कस्वाँ, अभिषेक सिहाग, संजय, धर्मेन्द्र, राजेन्द्र, रामकुमार, लक्ष्मण भाम्बू, ओम खींचड, शीशराम, रणधीर, राधेश्याम, सुरेन्द्र, योगेश ढाका व आशाराम न्यौल सहित सैकडों किसान व युवाओं की उपस्थिति शामिल थे।

संक्षिप्त

खेलना इकाई कार्यकारिणी का गठन

पावटा, (निसं)। आज हमारा समाज सबसे पिछड़े हुए समाज में शामिल होने के कगार पर पहुंच गया है। समाज को एकजुट होने की जरूरत है। उक्त बात तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा राजेश शर्मा की अध्यक्षता में ग्राम खेलना में ब्राह्मण समाज खेलना इकाई कार्यकारिणी के गठन अवसर पर तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा अध्यक्ष राजेश शर्मा ने उपस्थित विप्र समाज के बन्धुओं के बीच कही। ब्राह्मण समाज खेलना इकाई कार्यकारिणी का गठन करते हुए नवनियुक्त पदाधिकारियों में संरक्षक पद पर पंडित द्वारकेश शास्त्री, अध्यक्ष पद पर सुरेश पाराशर, महामंत्री पद पर विष्णु टीलावत, संगठन मंत्री राजेंद्र की टीलावत को मनोनीत किया गया। नवनियुक्त कार्यकारणी को तहसील ब्राह्मण महासभा पावटा पदाधिकारियों ने समाज के हित में कार्य करने की बात कही।

नवोदय विद्यालय में बालदिवस मनाया

खैरथल, (किसं)। स्थानीय जवाहर नवोदय विद्यालय में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन को बालदिवस समारोह के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में सुबह आठ बजे विद्यालय के बहुद्देश्यीय हॉल में उनके चित्र के सम्मुख श्रद्धासुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। प्राचार्य के.के.जोशी ने चाचा नेहरू के जीवन पर प्रकाश डाला। टी जी टी हिंदी सुरेश पंवार ने बताया कि शाम को विद्यालय के खेल मैदान में विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। खेलों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और बाल दिवस समारोह का भरपूर लुफ्त उठाया।

पेड़ से गिरे बुजुर्ग की मौत

श्रीमाधोपुर, (निसं)। थाना इलाके के गांव अरणियां में बकरियों के लिए खेजड़ी की लूंग छांगते समय पेड़ से फिसलकर गिरने से एक बुजुर्ग की मौत हो गई। घायल अवस्था में परिजन बुजुर्ग को लेकर श्रीमाधोपुर सीएचसी पहुंचे जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के अनुसार मृतक अरनियां की ढाणी बलजी वाली निवासी श्योबक्स यादव (66) पुत्र रूड़ाराम है।

बच्चों को मिठाई वितरित की

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। भूरथल के नंद घरों पर बाल दिवस बड़म हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी बच्चों को भामाशाह सरोज बडगूजर के द्वारा चॉकलेट और लड्डू बांटे गए। इस दौरान उपस्थित ग्राम साथिन अनीता बडगूजर, वार्ड पंच दीपक बुनकर, बच्चों के अभिभावक, नंदघर स्टाफ, कलस्टर कोऑर्डिनेटर खुशबू कुमावत मौजूद थी।

ऑटोमेटिक बैग मशीन का उद्घाटन

अलवर, (निसं)। नगर परिषद सभापति घनश्याम गुर्जर और आयुक्त धर्मपाल जाट ने इस मशीन का घंटाघर पर उद्घाटन किया। नगर परिषद सभापति घनश्याम गुर्जर ने बताया कि पॉलीथिन से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण और गंभीर बीमारियों को देखते हुए यह मशीन आमजन के लिए बेहद लाभदायक रहेगी। जिसमें 5 का सिक्का डालने पर कपडे का थैला निकलेगा।

बालिका को 1 दिन का प्रिंसिपल बनाया

उनियारा, (निसं)। बाल दिवस के अवसर पर जिला सहित उपखंड स्तर के सरकारी स्कूलों व निजी स्कूलों में बाल दिवस पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा बाल मेले आयोजित किए गए।

उनियारा के स्वामी विवेकानंद मॉडल स्कूल में बालिका को 1 दिन का प्रिंसिपल बनाकर विद्यालय का इंचार्ज बनाया गया। विद्यालय के प्रिंसिपल राम सिंह मीणा ने बताया कि विद्यालय के प्रतिभाशाली अल्फिया नाज को बाल दिवस पर विद्यालय में 1 दिन का प्रिंसिपल बनाकर विद्यालय प्रिंसिपल की सीट पर बैठाया गया। इस दौरान विद्यालय अध्यापक चांदमल, मधुसूदन, हेमंत ,मीठा लाल मीणा ,रूपसिंह मीणा ,भेरूलाल, अध्यापिका ताजवर, आरती वह धनराज मीणा सहित विद्यालय के अध्यापको ने भी बाल दिवस पर बालकों को पूर्ण अधिकार दिए गए। वही निजी विद्यालय सेंटर बराला इंग्लिश स्कूल में बच्चों ने बाल मेला लगाकर बाल दिवस रूप मे देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित चाचा जवाहरलाल नेहरू का मनाया जन्मदिन मनाया। साथ ही बाल मेला लगाया, मेले में स्टाल लगाकर कई तरह के व्यंजन के काउंटर सजाये।

नगरपालिका प्रशासन ने सख्ती से अस्थाई अतिक्रमण हटाया

खाटूश्यामजी, (निसं)। कस्बे में नगरपालिका प्रशासन द्वारा उपखंड अधिकारी प्रतिभा वर्मा व अधिशाषी अधिकारी विशाल यादव के नेतृत्व में मंदिर दर्शन मार्ग से अस्थाई अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की गई।

नगरपालिका प्रशासन ने मेला मजिस्ट्रेट कार्यालय से कार्रवाई शुरू कर रींगस रोड़ पर दुकानों के लगे तिरपाल, टीन शेड इत्यादि को तोड़ना शुरु किया तो सम्पूर्ण बाजार में हड़कंप मच गया। नगरपालिका द्वारा पहली बार फोल्डिंग तिरपाल को हटाने की कार्रवाई की जिसके चलते व्यापारियों ने स्वयं ही

■ कार्रवाई से सम्पूर्ण बाजार में हड़कम्प मच गया

खाटूश्यामजी कस्बे में नगरपालिका प्रशासन ने मंदिर दर्शन मार्ग से अस्थाई अतिक्रमण हटाये।

तिरपाल खोलने लगे और अनेक लोग समय पर तिरपाल नहीं हटा सके उनके तिरपाल जेसीबी से फाड़ दिए गए।कस्बे की पंचायती धर्मशाला के पास तो तिरपाल फाड़ने चक्कर में दुकान का शटर ही साथ आ गया। वहीं नगरपालिका ने दो-तीन जगह दुकानों पर लगी एसीबी भी उखाड़ फेंक दी। नगरपालिका प्रशासन द्वारा की गई इस कार्रवाई का दुकानदारों ने व्यापक विरोध भी किया लेकिन पुलिस जाब्ता के चलते व उपखंड अधिकारी प्रतिभा वर्मा की सख्ती के चलते विरोध काम नहीं आया।

वहीं बाजार में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान काफी संख्या में भीड़ एकत्रित हो गई जिसको हटाने के लिए पुलिस थानाधिकारी सुभाष यादव को मशक्कत करनी पड़ी और भीड़ को भगाने का लगातार प्रयास करते रहे। कार्रवाई में एसबीआई बैंक के सामने, होटल श्याम, पूराना बस स्टैंड, मंदिर मार्ग,श्याम कुंड रास्ता सहित दर्शन मार्ग का अतिक्रमण हटाया गया।

अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के बाद उपखंड अधिकारी प्रतिभा वर्मा ने बताया कि जिला कलेक्टर डॉ अमित यादव की बैठक में अतिक्रमण हटाने के आदेश हुए थे। अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की दौरान कनिष्ठ अभियंता दिनेश कुमार चांदा, स्वास्थ्य निरीक्षक वीरेन्द्र सिंह चंदेलिया सहित पुलिसकर्मी व नगरपालिका के कर्मचारी मौजूद रहे।

दुकानदारों का विरोध का तर्क: व्यापारियों का तर्क था कि फोल्डिंग तिरपाल धुप से बचने के लिए छाया के लिए लगाते हैं तथा फोल्ड किया जाता है। नगरपालिका द्वारा नाली के बाहर का अतिक्रमण हटाया जाना जायज है लेकिन छतों पर लगे तिरपाल को हटाना गलत है। वहीं होटल सवामणी के प्रबंधक अंकित अग्रवाल ने बताया कि नगरपालिका द्वारा मंदिर के मुख्य दर्शन मार्ग में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई को अंजाम दिया जा रहा था।इसके बाद सिर्फ एक गली विशेष में तथा एक ही दुकान विशेष को हटाने की गलत कार्रवाई करने का आरोप लगाया।

'बच्चों के खास थे चाचा नेहरू'

लालसोट, (निसं)। उपखंड मुख्यालय स्थित नगर पालिका में बाल दिवस को संबोधित करते हुए नगर पालिका के चेयरमैन रक्षा मिश्र ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री एवं बालक के राष्ट्रीय चाचा नेहरू के नाम से खुद की पहचान बनाने वाले जवाहरलाल नेहरु बालकों को योग्यता एवं दूरदर्शिता देने के चलते विशेष पहचान रखे थे।

चेयरमैन मिश्र ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री का बच्चों से विशेष लगाव का ही परिणाम रहा कि उनका जन्म दिवस बाल दिवस के रूप में पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है। नगर पालिका परिसर में आयोजित बाल दिवस के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य एवं स्वायत्त शासन संस्था के प्रदेश उपाध्यक्ष पूर्व चेयरमैन दिनेश मिश्रा ने कहा कि चाचा नेहरू भारत के पूर्व प्रधानमंत्री होने के साथ धड़क परिवार से ताल्लुक रखने के बाद भी धरातली महत्व एवं बालक को को देश का भविष्य मांनने के साथ योग्यता एवं दूरदर्शिता की पर रखने वाले व्यक्तित्व से परिपूर्ण थे। पीसीसी सदस्य पूर्व चेयरमैन मिश्र द्वारा चाचा नेहरू के जीवन एवं उनके व्यक्तित्व को लेकर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम को अधिशासी अधिकारी सीमा चौधरी, कनिष्ठ अभियंता सुरेश शर्मा, मनोनीत पार्षद जीतू बडाया, प्रकाश चंद शर्मा आदि द्वारा भी पूर्व प्रधानमंत्री चाचा नेहरू की जीवनी पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद पूर्व प्रधानमंत्री चाचा नेहरू के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर गुलाब के पुष्प अर्पित किए गए।

सार-समाचार

नन्हे-मुन्नों ने बाल दिवस मनाया

देवली, (निसं)। 14 नवंबर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती पर स्कूलों में बाल दिवस मनाया गया। इस मौके पर कई स्कूलों में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए। बाल दिवस के अवसर पर शहर के विजन इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल के नन्हे मुन्ने बालक में एक अलग ही उत्साह दिखाई दिया। यहां बाल दिवस पर मेले का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें स्कूल के नन्हे मुन्ने बालक बालिकाओं सहित अभिभावकों ने स्कूल परिसर में विभिन्न प्रकार के अनोखे खेल आयोजित किए इसी प्रकार परिसर में बाल मेला आयोजित भी लगाया गया। जिसमें अन्य प्रकार की स्टाले लगाई गई । यहां पर स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावक बच्चों का सहयोग करते दिखाई दिए और कई प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों की बिक्री की। इस मौके पर स्कूल के प्रधानाचार्य विनय कुमार जैन ने पंडित जवाहरलाल नेहरू (चाचा नेहरू) की जयंती पर छात्र छात्राओं को बाल दिवस का महत्व बताया।

नेहरू की प्रतिमा अनावरण किया

अलवर, (निसं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने बहादुरपुर में नवसृजित नगर पालिका का कार्य का शुभारम्भ कराया। बहादुरपुर में क्रमोन्नत सीएचसी के भवन का शिलान्यास किया एवं बाल दिवस के अवसर पर पं. जवाहर लाल नेहरू उद्यान के सौन्दर्यकरण कार्य व प्रतिमा का अनावरण किया। मंत्री जूली ने प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कहा कि पं. नेहरू दूरदृष्टा और महान विचारक होने के साथ आधुनिक भारत के निर्माता थे। उन्होंने कहा कि नवसृजित नगर पालिका बहादुरपुर के गठन से यहां के निवासियों की पुरानी मांग मुख्यमंत्राी श्री अशोक गहलोत ने पूरी की है। उन्होंने कहा कि आगामी छह माह में नगर पालिका के कार्यों से यहां बदलाव दृष्टिगोचर होगा। उन्होंने नगर पालिका के प्रथम चैयरमेन के रूप में मनोनीत संजय कुमार गर्ग व मनोनीत पार्षदगणों को कार्यालय में कार्य ग्रहण कराया। मंत्राी ने चैयरमेन को पेन भेंट किया।

हर्ष उल्लास के साथ मनाया बालदिवस

चौमूं/कालाडेरा, (निसं)। कालाडेरा में राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय एवं राजकीय प्राथमिक संस्कृत विद्यालय की सभी संस्थाओं में संगठित रूप से बाल दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें बच्चों द्वारा बाल मेले का आयोजन बड़े ही भव्य तरीके से किया गया जिसमें बच्चों द्वारा तरह-तरह के स्टॉल लगाई गई और बच्चों द्वारा तरह-तरह की झांकियां भी निकाली गई। जिसमें मेरी बेटी फाउंडेशन की महिला प्रकोष्ठ प्रभारी बिंदु शर्मा द्वारा प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। वहीं युवा जन कल्याण संस्था के द्वारा बच्चों को फल वितरित किए गए। इस दौरान प्रधानाचार्य हेमन्त चतुर्वेदी, बालिका उच्च प्राथमिक के प्रधानाचार्य रामसहाय कुमावत, प्राथमिक विद्यालय के संस्था प्रधान उपेन्द्र कुमार शर्मा सहीत तीनों संस्थाओं का समस्त स्टाफ एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

बाड़मेर मथुरा ट्रेन के ठहराव पर ट्रेन चालक का स्वागत किया

राजगढ़, (निसं)। राजगढ़ कस्बे के रेलवे स्टेशन पर सोमवार प्रात: बाड़मेर मथुरा ट्रेन के ठहराव पर भाजपाइयों ने चालक का माल्यार्पण एवं साफा से स्वागत किया। राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ विधानसभा क्षेत्र में संभावित भाजपा प्रत्याशियों की मौजूदगी में ट्रेन के ठहराव पर लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। इधर राजगढ़ में ट्रेन के ठहराव पर लोगों ने खुशी व्यक्त की है। बाड़मेर से मथुरा जाने वाली ट्रेन अपने निर्धारित समय से करीब 50 मिनट विलंब से राजगढ़ पहुंची। इस दौरान काफी संख्या में लोगों का हुजूम जमा रहा। भाजपा के विजय समर्थ लाल मीणा, बन्नाराम मीणा, सुनीता मीणा, शिवलाल मीणा, ओमप्रकाश घेसल्या, एवंरेणी के पूर्व प्रधान देवकरण मीणा भी ट्रेन का स्वागत करने राजगढ़ पहुंचे। इस अवसर पर भाजपा के मंडल अध्यक्ष राहुल दीक्षित के नेतृत्व में प्रधानमंत्री, रेल मंत्री एवं सांसद के नारे लगाए एवं जोश खरोश के साथ कार्यक्रम को ऊंचाइयां प्रदान की।

एसडीएम ने ग्रामीणों की दो घंटे समस्याएं सुनी

किशनगढ़ बास, (निसं)। पंचायत समिति सभागार में एसडीएम गंगाधर मीणा ने बिजली पानी सड़क आदि विभागों के अधिकारियों के साथ 11 से 1 बजे तक बेठकर लोगों की समस्याएं सुनी और फरियाद लेकर पहुंचे ग्रामीणों के सामने अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए तुरंत समाधान किए जाने के लिए कहा।

एसडीएम गंगाधर मीणा ने बताया कि जिला कलेक्टर डॉ जितेंद्र सोनी के आदेशों की पालना में उपखंड स्तरीय जनसुनवाई कैंप पंचायत समिति सभागार में 11 से 1 बजे तक लगाया गया। इस दौरान शिविर में बिजली पानी सड़क आदि विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। 2 घंटे तक चले शिविर में बिजली पानी सड़क आदि की समस्या लेकर पहुंचे ग्रामीणों की शिकायत पर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए और तुरंत समाधान किए जाने के लिए संबंधित अधिकारी को पाबंद करते हुए परिवाद का निस्तारण कर कार्यालय को रिपोर्ट करने के निर्देश दिए हैं। शिविर में गांव

■ पानी, बिजली, सड़क आदि विभागों के अधिकारी मौजूद रहे

तरवाला से पहुंचे बिशन सिंह ने बताया तरवाला से मीरका बसई सड़क पर डामरीकरण का कार्य विभाग नहीं करा रहा है इसी गांव के लीलाराम की शिकायत थी तरवाला से सेव खेड़ा सड़क पर डामरीकरण नहीं हुआ है। एसडीएम ने जब परिवादी की शिकायत पर पीडब्ल्यूडी अभियंता हितेश गुप्ता से जवाब मांगा तो अधिकारी ने बताया निविदा प्रक्रियाधीन है शीघ्र ही डामरीकरण का कार्य कराया जाएगा। पेयजल लाइन लीकेज की शिकायत लेकर आए बंबोरा निवासी रामरतन आर्य, गांव इस्माइलपुर निवासी रामलाल जाटव एवं घासोली निवासी राधेश्याम गुर्जर की शिकायत थी पाइपलाइन लंबे समय से लीकेज है व्यर्थ पानी बह रहा है। कर्मचारियों को कई बार कहने पर भी सुनवाई नहीं हो रही है।

चाचा नेहरू के जन्मदिन पर बाल मेला सहित कई कार्यक्रम हुए

पावटा, (निसं)। पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु की जयंती के उपलक्ष्य में सोमवार को स्कूलों में बालदिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान बाल मेले, जागरुकता रैली सहित अन्य आयोजन हुए।

इसी क्रम में गुलमोहर चिल्ड्रन एकेडमी सहित स्कूलों में बाल मेले सहित अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। गुलमोहर चिल्ड्रन एकेडमी में मेले का शुभारंभ मां सरस्वती का पूजन कर पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु के चित्र पर माल्यार्पण कर नगरपालिका चेयरमैन प्रतिनिधि निर्मल पंसारी, विद्यालय डायरेक्टर विजय कुमार चौधरी प्रधानाचार्य विक्रम सिंह राठौड द्वारा फीता काटकर किया गया। मेले का आयोजन स्कूल विद्यालय डायरेक्टर विजय कुमार चौधरी प्रधानाचार्य विक्रम सिंह राठौड एवं स्टाफ द्वारा किया गया। जिसमें बच्चों द्वारा चाट, पकौडी, मिठाई

स्कूलों में बालदिवस का आयोजन किया गया।

एवं फास्ट फूड आदि व्यंजनों के स्टाल लगाए गए। मेले में मिक्की माउस, राउण्ड झूला सहित विभिन्न प्रकार के खेल भी रहे। मेले में बच्चों के लिए मुख्य आकर्षण का केन्द्र घुडसवारी रही। अतिथियों ने बाल मेले में हर स्टाल पर पहुंचकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। छात्रों ने भारत की एकता का संदेश दिया। वही इस मौके पर नगरपालिका चेयरमेन प्रतिनिधि निर्मल पंसारी ने कहा कि किसी भी देश के भविष्य की नींव उसके देश के बच्चे होते हैं। जितना उन्हें हम आज मजबूत करेंगे उतना ही आगे चलकर वह अपने बेहतर भविष्य का निर्माण करेंगे। वही एम एम पब्लिक स्कूल में स्कूल चेयरमैन मनोज कुमार मित्तल के सानिध्य में चाचा नेहरूजी के जन्मदिवस को बाल दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालिका स्नेहिल बेदी के निर्देशन में छात्र छात्राओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुतियां दी गयी।

व्यापारी पिता-पुत्र के साथ हुई डकैती का पर्दाफाश

पावटा, (निसं)। पावटा कस्बे में व्यापारी पिता-पुत्र के साथ हुई डकैती की वारदात का पर्दाफाश करते हुए प्रागपुरा थाना पुलिस ने डकैती की वारदात को अंजाम देने वाले मुख्य सरगना को गिरफ्तार किया है।

प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह यादव ने बताया कि गिरफ्तार किए गया अनिल उर्फ लीला गुर्जर पुत्र दाताराम गुर्जर उम्र 22 साल निवासी बालको की ढाणी गोपालपुरा थाना कोटपुतली ने अपने साथियों के साथ मिलकर डकैती की वारदात को अंजाम दिया था। जिला पुलिस अधीक्षक जयपुर ग्रामीण मनीष

■ प्रागपुरा पुलिस ने मुख्य सरगना गिरफ्तार किया

अग्रवाल ने बताया कि पावटा शहर में लगातार हो रही लूट, डकैती की वारदात को गम्भीरता एवं चुनौती पूर्ण लेते हुए मामले का खुलासा करने के लिए एएसपी कोटपुतली विद्याप्रकाश, पुलिस उपाधीक्षक विराटनगर संजीव चौधरी एवं प्रागपुरा थानाधिकारी किरण सिंह यादव के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया।

जिस पर गठित पुलिस टीम ने अलग-अलग कार्यप्रणाली के आधारों पर अपराधियों की खोजबीन शुरू की। जिसमें अलग-अलग टीम द्वारा अलग-अलग जगह मुकीम रहकर संदिग्ध बदमाशों की पतारसी एवं चिंहित कर बदमाशों द्वारा अलग-अलग हुलिया बनाने पर वारदात को अंजाम देने वाले बदमाशों का पीछा कर उनकी पहचान कर वारदात का खुलासा करते हुए मुख्य सरगना अनिल उर्फ लीला गुर्जर पुत्र दाताराम गुर्जर उम्र 22 साल निवासी बालको की ढाणी गोपालपुरा थाना कोटपुतली को इलाका थाना पाटन डाबला जिला सीकर से धर दबोचा।

बाड़मेर-मथुरा ट्रेन को सांसद ने हरी झंडी दिखाई

गोविंदगढ़/अलवर, (निसं)। सोमवार को अलवर-मथुरा रेलखंड पर नई संचालित होने वाली बाड़मेर मथुरा ट्रेन का शुभारंभ हो गया, जिससे क्षेत्रवासियों में खुशी की लहर छा गई।

गौरतलब है कि 20489/90 बाड़मेर-जयपुर ट्रेन का मथुरा तक विस्तार 3 नवंबर को स्वीकृत हुआ था जिसका सोमवार को शुभारंभ हो चुका है। इसी उपलक्ष्य में अलवर सांसद बाबा बालकनाथ योगी ट्रेन में सवार होकर अलवर से गोविंदगढ़ आए, उनके आगमन को देखते हुए कस्बे वासियों ने गोविंदगढ़ रेलवे स्टेशन पर स्वागत कार्यक्रम रखा था। जहां उन्होंने गोविंदगढ़ रेलवे स्टेशन पर ट्रेन को हरी झंडी दिखा कर आगे के लिए रवाना किया। इसी मौके पर लोको पायलट व गार्ड के स्टाफ को माला व साफा पहनाया गया। सांसद बालक नाथ द्वारा कहा गया कि गोविंदगढ़ के सभी पत्रकारों द्वारा लगातार एक्सप्रेस ट्रेन के ठहराव की खबर समय-समय पर प्रकाशित की गई थी इसके लिए सभी पत्रकारों को आभार। सांसद बालकनाथ व भाजपा नेता सुखवंत सिंह, एडीआरएम मुदित चंद्रा तथा अन्य अधिकारियों को गुलदस्ता व धन्यवाद पत्र देकर सभी का आभार प्रकट किया। इस दौरान भाजपा नेता सुखवंत सिंह, भाजपा अध्यक्ष संजय नरूका, पूर्व जिला प्रमुख रमन गुलाटी, प्रधान रसमन गोपाल, स्टेशन अधीक्षक जीपी मीना, आदि मौजूद रहे।

उत्तर पश्चिम रेलवे — **अधिसूचना**

सं.: 02/2022 दिनांक 14.11.2022

जयपुर मंडल के बांदीकुई, प्र.का. जयपुर, फुलेरा की स्वास्थ्य इकाईयों में सामान्य ड्यूटी चिकित्सा प्रेक्टिशनर के पद को पूर्ण कालिक संविदा के आधार पर भरने हेतु तत्काल साक्षात्कार।

उत्तर पश्चिम रेलवे के जयपुर मंडल पर चिकित्सा विभाग में सामान्य ड्यूटी चिकित्सा प्रेक्टीशनर के कुल 04 पद (अनारक्षित=02, ओबीसी=01, अनु.जाति=01) को पूर्ण कालिक संविदा के आधार पर भरने हेतु इच्छुक एवं पात्र उम्मीदवार तत्काल साक्षात्कार हेतु दि. 21.11.2022 को प्रातः 10.00 बजे मंडल कार्मिक अधिकारी, मंडल कार्यालय, उपरे, जयपुर को रिपोर्ट करें।

विस्तृत विवरण के लिए वेबसाइट "nwr.indianrailways.gov.in" पर जाए। 941-CQ/22

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें

SHRI BHAWANI NIKETAN SHIKSHA SAMITI
Sikar Road, Jaipur # 0141-2230183 email : sbnss.job@gmail.com
REQUIRES
Shri Bhawani Niketan Law College
Principal - 01 Qualification LL.M., Ph.D. with 10 year teaching experience. **Asst. Prof. (Law)** - 12 Qualification LL.M., NET/SET/ SLET / Ph.D. Candidates may apply with relevant documents till 21 Nov., 2022 by Hand / email.
Gulab Singh Mertia, Secretary

कार्यालय नगर पालिका मण्डल श्रीमाधोपुर (सीकर) राज.

क्रमांकः नपाश्रीमा/2022-23/4563-64 दिनांक-14/11/2022

आपत्ति आमंत्रण-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका श्रीमाधोपुर में निम्न तालिका अनुसार पट्टा नामान्तरण की पत्रावली पर आपत्ति आमंत्रित की जाती है:-

क्र.सं.	नाम पत्रावली	क्षेत्रफल	पत्रावली का प्रकार
1.	श्री सीताराम अग्रवाल पुत्र श्री गुलाबचन्द अग्रवाल वार्ड नं. 03 मुरली मनोहर मन्दिर के पास श्रीमाधोपुर	136.00 वर्गगज	आवासीय पट्टा नामान्तरण

जिस किसी व्यक्ति को आपत्ति हो 03 दिवस में कार्यालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति मय दस्तावेज स्वयं की आईडी जिस पर स्वयं के मोबाईल नम्बर अंकित हो व्यक्तिगत उपस्थित होकर प्रस्तुत करे। अन्यथा बाद मियाद विचार नही किया जावेगा।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका श्रीमाधोपुर

कार्यालय ग्राम पंचायत लोहरवाडा एवं तिगरिया पंचायत समिति गोविन्दगढ, जयपुर

क्रमांक-ग्रा.प.लो./2022/122 दिनांक-14.11.2022

निविदा सूचना संख्या /2022-23

पंचायत समिति गोविन्दगढ़ के अधीनस्थ ग्राम पंचायतों लोहरवाड़ा एवं तिगरिया में वित्तीय वर्ष 2022-23 में राज्य वित्त आयोग/एफ.एफ.सी. मद में स्वीकृत दो कार्यो/संकर्म हेतु आफलाईन निविदाएं राजस्थान लोक उपापन पारदर्शिता नियम 2013 एवं राजस्थान पंचायती राज नियम 1996 के नियम 181 (2) के अनुसार करवाने हेतु समक्ष श्रेणी में पंजीकृत प्रतिष्ठानों/संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में आमन्त्रित की जाती है। निविदा से सम्बन्धित विस्तृत विवरण sppp.rajasthan.gov.in से upload/download की व देखी जा सकती है।

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत लोहरवाडा
पंचायत समिति गोविन्दगढ

ईआरसीपी परियोजना को केवल गहलोत सरकार लागू कर सकती है: परसादी

मंडावरी/लालसोट, (निसं)। स्थानीय विधायक व प्रदेश के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा ने नव क्रमोन्नत स्वास्थ्य केंद्र के उद्घाटन एवं विकास कार्यों के निर्माण के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि ईआरसीपी परियोजना को प्रदेश में केवल गहलोत सरकार ही लागू कर सकती है। वहीं गहलोत सरकार जल्द ही प्रदेश को ईआरसीपी की सौगात दिलाएगी।

चिकित्सा मंत्री मीणा ने ईआरसीपी परियोजना को लेकर कांग्रेस सरकार को घेरने वालों पर पलटवार करते हुए कहा इस परियोजना को संकट में डालने वाले यही लोग थे और यह चाहते नहीं है कि पूरा प्रदेश इस परियोजना से जुड़े। पूर्व में भाजपा द्वारा ही इस परियोजना का खाका इस तरह बिगाड़ के रख दिया कि यह राजनीतिक फुटबॉल बन गई है। चिकित्सा मंत्री मीणा ने कहा कि गहलोत सरकार इस परियोजना को राष्ट्रीय परियोजना कराना चाहती है एवं उसके लिए लगातार प्रयासरत है।

श्रीमा ग्राम में नव क्रमोन्नत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का चिकित्सा मंत्री परसादी लाल मीणा ने फीता काटकर उद्घाटन किया।

चिकित्सा मंत्री मीणा ने कहा कि लालसोट विधानसभा क्षेत्र सहित पूरे दौसा जिले को ईसरदा पेयजल परियोजना से जल्द ही लाभान्वित कर दिया जाएगा। कार्यक्रम को पंचायत समिति के प्रधान एडवोकेट नाथू लाल मीणा, ब्लॉक अध्यक्ष जगदीश राडा, पूर्व पीसीसी सदस्य रामविलास खेमावास आदि द्वारा भी संबोधित किया गया। चिकित्सा मंत्री मीना द्वारा महारिया में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन, शिवसिंहपुरा में विधायक कोष से बने

■ 'पूर्व में भाजपा द्वारा ही इस परियोजना का खाका इस तरह बिगाड़ के रख दिया कि यह राजनीतिक फुटबॉल बन गई है

कक्षा कक्ष का लोकार्पण, मटलाना ग्राम में नवीन उप स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन एवं श्रीमा ग्राम में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का उद्घाटन किया।

ग्रामीण की मांग पर चिकित्सा मंत्री ने शिवसिंहपुरा राजकीय विद्यालय में चारदीवारी एवं एक बड़े होल निर्माण करने की घोषणा भी की गई। कार्यक्रम के दौरान बीसीएमएचओ धीरज शर्मा, सरपंच रूपमती देवी मीणा, एडवोकेट रघु मीणा, हेमराज मीणा, दिलखुश मीणा श्रीमां, पूर्व प्रधान गंगा सहाय बैरवा, जीतू बिनोरी, इरफान खान, कमलेश लोटन आदि कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

बाल अधिकार सप्ताह का शुभारम्भ

अलवर, (निसं)। प्रशिक्षु आईएएस रिया डाबी की अध्यक्षता में राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह अलवर में मिशन वात्सल्य के तहत 14 से 20 नवम्बर तक मनाए जाने वाले बाल अधिकार सप्ताह का शुभारम्भ पं. जवाहर लाल नेहरू के चित्रा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। प्रशिक्षु आईएएस ने पं. जवाहर लाल नेहरू के जीवन चरित्रा पर प्रकाश डाला। किशोर न्याय बोर्ड अलवर की प्रिंसिपल मजिस्टेऊट दीपिका सिंह ने बच्चों को मन लगाकर पढाई करने एवं सकारात्मक व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया। अतिथियों द्वारा बाल संरक्षण इकाई अलवर की ओर से बाल अधिकार एवं संरक्षण विषय पर तैयार करवाये गए जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। साथ ही जिला बाल संरक्षण इकाई अलवर की ओर से एक्शन एड यूनिसेफ के सहयोग से बाल विवाह मुक्त अलवर की थीम के पोस्टर का विमोचन किया जिसे बाल संरक्षण के क्षेत्रा में कार्यरत राजीय एवं गैर राजकीय संस्थानों में जागरूकता हेतु प्रदर्शित किया जाएगा।

संक्षिप्त

नेहरू का जन्मदिन मनाया

फुलेरा, (निसं)। कस्बे के गणगौरी बाजार स्थित कांग्रेस कार्यालय पर सोमवार को प्रात: 11:15 बजे भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस के रूप में नगर पालिका अध्यक्षा संगीता अग्रवाल की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान सभी कार्यकर्ताओं ने नेहरू के छायाचित्र पर पुष्पमाला पहनाकर श्रद्धा सुमन अर्पित कर पुष्पांजलि दी। तत्पश्चात वहीं कार्यक्रम मे पालिकाध्यक्षा अग्रवाल ने नेहरू की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके विचारों को अपने जीवन में उतारकर अनुकरण करने के लिए कहा। इस अवसर पर संगठन महामन्त्री अब्दुल लतीफ कुरेशी, प्रवक्ता शैलेन्द्र शर्मा, सचिव आसिफ अली, हंसराज चौधरी, पांचू लाल बरवड, कैलाश पंवार, रईस मंसूरी, युसूफ खान सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बेटी के जन्मदिन पर रक्तदान किया

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल के ब्लड बैंक में स्थानीय जय भीम रक्तकोष समिति के बैनर तले कस्बे के लक्ष्मी नगर गोपालपुरा रोड़ निवासी अध्यापक चिरंजी लाल आर्य ने अपनी बेटी भावना आर्य के जन्मदिन पर स्वैच्छिक रक्तदान किया। इस दौरान समाजिक कार्यकर्ता नित्येंद्र मानव ने अध्यापक चिरंजी लाल आर्य की सराहना की। सतीश हाडिया ने बताया कि इस समय डेंगू का प्रकोप बढ़ रहा है। जिसमे प्लेटलेट्स व रक्त की जरूरत पड़ रही है, हमें सदा रक्तदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस दौरान समिति अध्यक्ष विजय कुमार आर्य, पार्षद उमेश आर्य, छात्रसंघ अध्यक्ष अतुल खारडिया, बलवंत मीना, मनोज बुनकर, भूपसिंह, श्रीराम, धर्मवीर व नेपाल सहित अन्य लोग मौजूद थे।

युवक लापता, मामला दर्ज कराया

खैरथल, (निसं)। शादियों में पगड़ी बांधने का काम करने वाले स्थानीय दांतला निवासी युवक रणजीत सिंह के छह दिन बाद भी नहीं लौटने पर उसके पिता ने पुलिस में मामला दर्ज करा कर तलाशने की गुहार लगाई है। दांतला निवासी दीवान सिंह पुत्र नानक सिंह ने खैरथल थाना पुलिस में गुमशुदगी दर्ज कराई है कि उसका बेटा रणजीत 9 नवंबर को दोपहर डेढ़ बजे किसी शादी में पगड़ी बांधने की कह कर निकला था जो सुबह घर नहीं लौटा तो उसके मोबाइल फोन पर संपर्क किया किन्तु मोबाइल फोन स्विच ऑफ मिलने से संपर्क नहीं होने पर तलाश शुरू की। सभी जगह तलाशने के बाद भी उसका पता नहीं चल रहा है।

चाचा नेहरू को याद किया

बहरोड़/ नीमराना, (निसं)। बहरोड़ के राजकीय गंगा पुस्तकालय में बच्चों के चाचा नेहरू तथा आधुनिक भारत के निर्माता व स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की याद में बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उनके छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता पंडित पप्पू राम शर्मा, संचालक पंडित अशोक बोहरा ने किया तथा पुस्तकालय अध्यक्ष दिनेश शर्मा, आयोजक ऋतु , व्यवस्थापक सुरेश चंद्र, कुमारी राधा, फैजान, राजेश, राकेश व मोहित सहित अनेक छात्र छात्राओं व पाठकों ने विचार रखे।

आयुक्त ने मुख्य बाजारों का दौरा किया

टोंक, (निसं)। नगर परिषद आयुक्त अनिता खींचड ने टोंक शहर के मुख्य बाजार को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए दौरा किया और दुकानदारों को दुकानों के अंदर ही सामान रखकर व्यापार करने के निर्देश दिए, साथ ही साथ चल रहे दस्ते को मुख्य बाजार में थडी थैलो वालों को भी हटाने के लिए निर्देश दिए। सोमवार को नगर परिषद आयुक्त अनिता खींचड ने नगर परिषद के राजस्व अधिकारी भरतलाल मीणा, विशाल साहू, सलीम भाई, यातायात प्रभारी भंवरलाल, यातायात कर्मी कुलदीप सिंह सिनसिनवार, व्यापार महासंघ के अध्यक्ष मनीष बंसल, महामंत्री आनंद वर्धन बंम के साथ शहर के पुराने सब्जी मंडी रोड से बाजार को अतिक्रमण मुक्त कराने के लिए दौरे की शुरुआत की और घंटाघर चौराहे के आसपास लगे ठेले, माला बेचने वालों को रोड के पास से हटाकर अन्यत्र बैठने के लिए कहा और इसके बाद मुख्य बाजार का दौरा करते हुए बाजार में निरीक्षण किया और मुख्य बाजार में दुकानों के बाहर फूटपाथ लगाएं सामान को हटाने के निर्देश दिए।

पेयजल समस्या से परेशान ग्रामीणों ने पंचायत के ताला लगाया

नारायणपुर, (निसं)। क्षेत्र में अमूमन गर्मियों के दिनों में पेयजल की किल्लत होती है, लेकिन जिम्मेदारों की लापरवाही के चलते उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत चतरपुरा में इनदिनों ग्रामीणों को पीने की पानी की बूंद-बूंद को तरसना पड़ रहा है।

सोमवार को युवा नेता राकेश दायमा के नेतृत्व में दर्जनों ग्रामीण व महिलाओं ने ग्राम पंचायत कार्यालय पहुंचकर पंचायत भवन के मुख्य गेट पर ताला लगाकर करीब 2 घंटे प्रशासन

■ सरपंच को समस्या से कई बार अवगत कराने के बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है

और ग्राम पंचायत के खिलाफ नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया ।

इस दौरान महिला बिमला, अनीता, कपूरी, पांची देवी ने बताया कि पिछले 2 वर्ष से वार्ड नंबर 1, 2, 3, 9 में पीने के पानी की बूंद-बूंद के लिए तरस रहे हैं। ग्राम पंचायत सरपंच को समस्या से कई बार अवगत कराने के बाद स्थिति जस की तस बनी हुई है । इससे वार्ड के लोगो में ग्राम पंचायत के प्रति रोष बना हुआ है ।

इस दौरान सरपंच नीरज कुमार को आक्रोशित ग्रामीण, महिलाओं ने काफी समय से समस्या का समाधान नही होने पर खरी-खोटी सुनाई । सुचना पर नारायणपुर जलदाय विभाग के सहायक अभियंता युवराज सैनी प्रदर्शन स्थल पहुंचकर ग्रामीणों को समझाईस की और 15 दिन में ग्राम पंचायत के साथ मिलकर ग्रामीणों को पेयजल की समस्या का समाधान की बात कही । इसके बाद ग्रामीण माने और ग्राम पंचायत का ताला खोला ।

इस मौके ओमपाल सिंह, छोटू राम, संदीप चौधरी, नवल मीणा, प्रहलाद गुर्जर, शम्भूदयाल मीणा, किशन मीणा, विक्रम बलाई, अशोक सैन, बबली वर्मा, सुआ लाल, मोहन लाल मोर्य, बाबूलाल मीणा, मनोज जांगिड, सत्यनारायण शर्मा, बद्री बलाई, ज्ञानचंद सैनी, लीलाराम सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे ।

नारायणपुर में पेयजल समस्या को लेकर महिलाओं और ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया।

राठ विकास बोर्ड के गठन की मांग

बहरोड़/ नीमराना, (निसं)। बहरोड़ कस्बे के कचहरी रोड पर स्थित अहीर धर्मशाला में सोमवार को राठ क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों तथा सामाजिक संगठनों की आयोजित बैठक में अहीर कल्याण बोर्ड तथा राठ विकास बोर्ड के गठन की मांग पर एकमत होकर उपखंड अधिकारी बहरोड़ को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान संयोजक किसान नेता बस्तीराम यादव, कांग्रेस नेता डॉ. रामचंद्र यादव तथा अलवर यादव महासभा जिलाध्यक्ष भारत यादव, जिला पार्षद संजय यादव, भाजपा नेता सुरेश यादव, नीलम यादव, राजाराम यादव एडवोकेट, पार्षद प्रदीप यादव कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष बहरोड़, अवधेश यादव, दिनेश यादव, सोताज सिंह, जोगिंदर यादव, कंवर सिंह यादव, अशोक यादव, जगराम, महेंद्र सिंह यादव, सुल्तान सिंह यादव, पंचायत समिति सदस्य अमर सिंह, सुरेंद्र, विक्रम, युवा नेता मोहित, मुकेश, परविंदर, अजय, तथा बानसूर से अहीर रेजिमेंट के संयोजक इत्यादि सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में क्षेत्रिय लोगों सहित सभी ने राठ विकास बोर्ड एवं अहीर कल्याण बोर्ड के गठन हेतु राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री के नाम उक्त बोर्डों के गठन हेतु बहरोड़ उपखंड अधिकारी सचिन यादव को ज्ञापन सौंपकर पुरजोर मांग उठाई।

अभ्यार्थियों को चयन पत्र वितरित किए

टोंक, (निसं)। जिला परिषद टोंक द्वारा सोमवार को पंचायती राज विभाग में कनिष्ठ लिपिक सीधी भर्ती 2013 के प्रतीक्षा सूची से चयनित 26 में से 21 अभ्यर्थियों को चयन पत्र वितरित किए गए।

इस दौरान जिला परिषद कार्यालय में जिला प्रमुख सरोज बंसल एवं अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुरारी लाल शर्मा द्वारा चयनित कनिष्ठ लिपिक अभ्यर्थियों का माला पहनाकर मुंह मीठा करवा कर चयन पत्र सौंपे गए तथा ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करने का संदेश दिया गया। पंचायती राज कनिष्ठ लिपिक सीधी भर्ती 2013 के चयनित अभ्यर्थी कविता शर्मा, सीमा चौधरी, कविता भाखरी, कमलेश गौतम, सुमन यादव, सोनू यादव, अनामिका राठौड, सुमन कुमारी, सुमन देवी कुमावत, दीपिका शर्मा, कौसर सुल्ताना, रतन लाल मीणा, महिपाल मीणा, पूरण मल मीणा, दामोदर मीणा, ममता बाई मीणा, पुष्पेंद्र कुमार मीणा, राजू देवी मीणा, करमा बाई मीणा, आशा मीणा, गायत्री सिंहल को पंचायत समिति आवंटित करने के बाद चयन पत्र सौंपे गए।

पढ़ाई को बोझ समझे बिना लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ें: ऋषभ मंडल

कोटपूतली, (निसं)। कस्बे के दिल्ली जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित द राजस्थान स्कूल में बाल दिवस के उपलक्ष्य में सोमवार को बाल मेले का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि एसडीएम ऋषभ मंडल ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं। उन्होंने कहा कि पढ़ाई को बोझ समझे बिना अपनी रुचि के अनुसार लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ना चाहिए। दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर प्रत्येक लक्ष्य को

■ द राजस्थान स्कूल में बाल मेले का आयोजन

प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने इतने भव्य स्तर पर बाल मेले का आयोजन करने के लिए विद्यालय प्रशासन की सराहना की। अध्यक्षता विद्यालय के निदेशक मधुर सिंह यादव ने की। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को संस्कारवान शिक्षा उपलब्ध करना प्रत्येक शिक्षक का दायित्व है। बच्चों का भविष्य शिक्षकों के हाथ में होता है एवं देश का भविष्य बच्चों के हाथ में है। देश की युवा पीढ़ी पढ़ लिखकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अर्जित करेगी तभी देश प्रगति करेगा। प्रधानाचार्या शालिनी चौधरी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को इस भव्य मेले के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। मेले के दौरान विभिन्न प्रकार झूले लगाए गए, जिन पर विद्यार्थियो एवं अभिभावकों की जमकर भीड़ उमड़ी। मेले में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए विभिन्न व्यंजनों की भी स्टॉल लगाई गई, जिन पर सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों ने व्यंजनों का लुत्फ उठाया। सीबीएसई परीक्षा में विद्यालय टॉप करने वाले छात्र तनिष्क अग्रवाल को चेयरमैन अवार्ड से सम्मानित किया गया। अतिथियों ने उसे 21 हजार रुपये का नगद पुरुस्कार देकर सम्मानित किया।

एसडीएम ऋषभ मंडल ने बाल मेले का फीता काटकर उद्घाटन किया।

'खतरे में नेहरू की वैचारिक विरासत'

अलवर, (निसं)। यह वक्त की आवाज है, मिलकर चलो। ये जिंदगी का राग है, मिलकर चलो' की पंक्तियों के साथ राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर एवं जेएनयू के पूर्व छात्र डॉ.रमेश बैरवा ने आज भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जयंती के अवसर पर ऑनलाइन व्याख्यान देते हुए कहा कि नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। जेल भी गए थे।

किसान, मजदूर, छात्र, युवा संगठनों में पदाधिकारी रहकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष की अलख जगाई थी। 1917 की रूसी समाजवादी क्रांति एवं सोवियत संघ के नियोजित विकास के मॉडल से प्रभावित होकर आजाद भारत में नियोजित आर्थिक विकास का मॉडल अपनाया। सरकारी क्षेत्र को मजबूत किया। 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया, ग्लिम्पसेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री,यूनिटी ऑफ इंडिया, एन ऑटोबायोग्राफी,लेटर्स ऑफ फादर टू हिज डॉटर, जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत कर एवं विभिन्न महत्वपूर्ण समितियों के जरिए संविधान निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समाजवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक और तार्किक नजरिया, स्वतंत्र विदेश नीति नेहरू की वैचारिक विरासत के आधारभूत विचार हैं।

लेकिन मौजूदा दौर में गिने-चुने चहेते पूंजीपतियों के हित में समाजवाद को कमजोर करने वाली क्रोनी केपिटलिज्म की विषमता और बेरोजगारी बढ़ाने वाली अर्थनीति, नफरत और हिंसा की सांप्रदायिक राजनीति, राजनीति में तेजी से बढ़ती निरंकुशता, संस्कृति की आड़ में पाखंड और कर्मकांड को बढ़ावा देने वाली विज्ञान विरोधी मानसिकता, स्वतंत्र विदेश नीति का तेजी से कमजोर किया जाना नेहरू की वैचारिक विरासत के लिए प्रमुख चुनौती बन चुके हैं।

जागरुकता अभियान लगाया

सांभरझील, (निसं)। यहां राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला जयपुर के निर्देशानुसार एवं तालुका विधिक सेवा समिति, अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्र.स.1 सांभर के मार्गदर्शन में पोक्सो पीड़ित बालक बालिकाओं हेतु पोस्को अधिनियम से संबंधित मामलों के पीड़ित बच्चों को विधिक सहायता उपलब्ध कराने व आमजन को जागरूक करने हेतु कार्यक्रम का आयोजन राजकीय प्रवेशिका संस्कृत (माध्यमिक) विधालय में पैरा लिगल वोलेंटियर की तरफ से जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। तालुका विधिक सेवा समिति सांभर लेक के प्रभारी ने बताया कि पोस्को अधिनियम, से संबंधित जागरूकता हेतु विभिन्न ग्राम पंचायत के विधालयो में विधिक चेतना शिविर के तहत जागरूक करते हुए विभिन्न कानूनी सलाह एवं अधिकारों से अवगत कराया गया।

एक दर्जन उम्मीदवारों ने पर्चा दाखिल किये

लालसोट, (निसं)। नगर पालिका के वार्ड नंबर 30 के पार्षद रामफूल सैनी उर्फ फुलाराम के लंबी बीमारी के बाद निधन से रिक्त हुए पार्षद पद के लिए सोमवार को आवेदन के अंतिम दिन एक दर्जन उम्मीदवारों द्वारा पार्षद पद के लिए आवेदन दिये।

रिटर्निंग कार्यालय की मीडिया प्रकोष्ठ प्रभारी कमलेश गौतम ने बताया कि सोमवार को वार्ड 30 के रिक्त पद पर हो रहे उप चुनाव के लिए रिटर्निंग अधिकारी एसडीएम बृजेंद्र सिंह के समक्ष भाजपा व कांग्रेस सही निर्दलीय एक दर्जन के करीब उम्मीदवारों द्वारा नामांकन दाखिल कर दावेदारी प्रस्तुत की गई। रिक्त पड़े पार्षद पद के लिए नामांकन के अंतिम दिन कांग्रेस पार्टी से कमलेश सैनी एवं भारतीय जनता पार्टी से श्रीनारायण सैनी द्वारा अधिकृत प्रत्याशी के रूप में नामांकन दाखिल किया गया।

■ रिक्त पड़े पार्षद पद के लिए आवेदन के साथ बजी चुनावी रणभेरी

कांग्रेस व भाजपा दोनों पार्टियों के प्रत्याशियों द्वारा डमी फार्म भी दिए गए हैं। निर्दलीय तौर पर सुनीता सैनी, नारायण, कमलेश सैनी, शंभू लाल सैनी, दाखा देवी, गोपाल ने नामांकन दाखिल किए हैं। रिटर्निंग अधिकारी बृजेंद्र सिंह ने बताया कि नाम निर्देशन पत्रों की जांच आज 15 नवंबर मंगलवार को की जाएगी एवं नाम वापसी 17 नवंबर तक हो सकेगी वहीं निर्दलीय प्रत्याशियों को चुनाव चिन्ह आवंटन 18 नवंबर को किया जाएगा। रिक्त पार्षद पद के उप चुनाव का मतदान 25 नवंबर को होगा एवं मतगणना 27 नवंबर को की जाएगा।

बीसलपुर बांध की नहरों में पानी छोड़ने की मांग

टोंक, (निसं)। बीसलपुर बांध की दांयी व बांयी नहरों में 20 नवम्बर से पूर्व पानी छोड़ने की मांग किसानों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर की है।

भारतीय किसान संघ के पूर्व तहसील अध्यक्ष एवं अहीर महासभा के पूर्व जिलाध्यक्ष रामसहाय यादव, मो.शाहिद, रमेश मीणा, गंगाधर मीणा, पोलू, पोखर, शंकर लाल आदि ने जिला

■ 20 नवम्बर से पहले पानी नहीं छोड़ने पर आंदोलन की चेतावनी दी

कलेक्टर को दिए ज्ञापन में बताया कि बीसलपुर बांध की दांयी व बांयी नहरों में सफाई का कार्य बहुत ही धीमी गति से किया जा रहा है, इससे किसानों को मिलने वाला पानी समय पर नहीं मिल पाता है। नहरों की सफाई सही समय पर नहीं होने के कारण किसानों को देरी से पानी मिलता है। अभी किसानों को 20 नवम्बर से पूर्व गेहूं की फसल बोने के लिए पानी अत्यधिक आवश्यकता हो रही हैं, क्योकि गेंहू की बुवाई के लिए पूर्व में पलाव करना पडता है। जिस कारण पानी चाहिए। बीसलपुर बांध की बांयी व दांयी नहर के पानी को 20 नवम्बर से पूर्व छोडा जाएं, जिससे किसान अपनी गेंहू व जौ, अन्य बोई जाने फसल का समय पर पलाव कर बुवाई कर सके। 20 नवम्बर के बाद से किसानों को सरसों की फसल के लिए सिंचाई के पानी का आवश्यकता होगी। इस कारण नहरो की तुरंत सफाई कर 20 नवम्बर से पहले पानी छोडा जाएं, अन्यथा किसानों को आंदोलन करना पड़ेगा।

बीसलपुर बांध की दांयी व बांयी नहरों में 20 नवम्बर से पूर्व पानी छोड़ने की मांग को लेकर किसानों ने कलेक्टर को ज्ञापन दिया।

अंबेडकर शिक्षक संघ ने खुशी जताई

अलवर, (निसं)। विद्या संबल योजना, अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती प्रक्रिया को स्थगित करने पर दलित शोषण मुक्ति मंच एवं राजस्थान अंबेडकर शिक्षक संघ ने खुशी जताई है। 15 नवंबर को शाम 5 बजे अंबेडकर सर्किल पर संघर्ष की जीत का जश्न मनाया जाएगा।

दलित शोषण मुक्ति मंच के जिला सह संयोजक श्यामसुंदर जाटव एवं राजस्थान अंबेडकर शिक्षक संघ के संभाग अध्यक्ष रामचरण वर्मा ने बताया है कि दलित शोषण मुक्ति मंच एवं राजस्थान अंबेडकर शिक्षक संघ के संयुक्त नेतृत्व में विद्या संबल योजना, अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग को आरक्षण देने की मांग के लिए पिछले दिनों सघन अभियान चलाकर 7 नवम्बर को अलवर के अंबेडकर सर्किल पर विशाल आक्रोश प्रदर्शन किया गया था। प्रदर्शन में आक्रोश व्यक्त किया था कि आरक्षण का प्रावधान कर शिक्षकों की स्थाई भर्ती की जाए। गेस्ट फैकल्टी में 93000 एवं अंग्रेजी माध्यम संविदा सहायक शिक्षक भर्ती में 10000 शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया जारी थी जिसमें अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के लिए आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं था।

सार-समाचार

बच्चों ने कई कार्यक्रम आयोजित किये

श्रीमाधोपुर, (निसं)। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिवस पर 14 नवंबर को महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय श्रीमाधोपुर में बाल मेले का आयोजन किया गया। बाल मेले में बच्चों ने उत्साह के साथ विभिन्न प्रकार के फूड स्टॉल्स, गेम्स एवं अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया। बच्चों का खासकर उत्साह फूड स्टॉल्स की ओर रहा। मेले का उद्घाटन महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के ब्लॉक नोडल प्रभारी विनोद कुमार शर्मा के द्वारा किया गया । संस्था प्रधान प्राचार्य रमाकांत शर्मा ने बताया कि विद्यार्थियों ने बाल मेले के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लिया एवं अपने हुनर का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर अभिभावकों ने भी अपना उत्साह दिखाया एवं अपने बच्चों का सहयोग किया। महात्मा गांधी राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय श्रीमाधोपुर के 2 छात्रों का लॉन टेनिस प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर भी चयन किया हुआ है ।इस अवसर पर रमाकांत शर्मा प्राचार्य ने विद्यार्थियों को धन्यवाद देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

जोनल बैठक का हुआ आयोजन

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय दुग्ध वितरण केंद्र पर सोमवार को जोनल बैठक का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि आरसी डीपी सीएमडी सुषमा अरोड़ा, जयपुर डेयरी एमडी कुलराज मीणा व जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनिया का माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। आरसीडी पीसीएमडी सुषमा अरोड़ा ने कहा कि दुग्ध की मात्रा बढ़ेगी तो पशुपालकों को अन्य सुविधाएं में विस्तार होगा। केंद्र को डेढ़ लाख लीटर दूध का लक्ष्य निर्धारित किया गया जो कि जो इस समय 6 हजार लीटर है। जयपुर डेयरी अध्यक्ष ओमप्रकाश पूनिया ने कहा कि दुग्ध मात्रा बढने से पशुपालकों को जो सुविधाएं चाहिए वह दी जाएंगी। दुग्ध औसतन केंद्र के प्रभारी घनश्याम कारोलिया व कोऑर्डिनेटर रामलाल ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान मिंटू सिंह, गोपाल जाट, भुरामल यादव, राम नारायण शर्मा, रामअवतार मीणा, श्रवण रावत, राम लाल यादव, भगवान सहाय व गंगाराम सहित अन्य लोग मौजुद थे।

सिलाई सेन्टर शुरू

किशनगढ़बास, (निसं)। ग्राम दोगडा में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग और स्पैक्ट्रा संस्था के संयुक्त तत्वावधान में ग्रामीण महिलाओं के लिए सिलाई सेन्टर का शुभारम्भ महिला एवं बाल विकास अधिकारी सावित्री अरोड़ा व ब्लॉक अतिरिक्त महिला एवं बाल विकास अधिकारी बीना गुप्ता ने किया। इस दौरान महिलाओ को कौशल विकाश एवं आजीविका बढ़ाने हेतु प्रेरित किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ के दौरान सरपंच गफ्फार खान ने संस्था की प्रशंसा करते हुए सिलाई सेन्टर खोलने का स्वागत किया एवं संस्था के द्वारा की जा रही पहल की सराहना की। संस्था के कार्यक्रम प्रबंधक सतीश रावत ने बताया की नवजीवन योजना के अन्तर्गत 77 दिवस सिलाई ट्रेनिंग सेंटर चलेगा और ग्रामीण महिलाओ को कौशल विकास आजीविका बढ़ाने के गुर सुखाए जाएंगे। उद्घाटन कार्यक्रम मे संस्था से गुलाब शर्मा एवं हुकम चन्द एवं वार्ड पंच, आंगनवाड़ी वर्कर एवं प्रशिक्षण लेने वाली 25 महिलाये उपस्थित रही।

बाल दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया

चाकसू, (निसं)। सोमवार को विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर बाल दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया। कस्बे के निमोडिया रोड स्थित शिक्षण संस्थान अपनत्व फ्यूचर जोन एकेडमी सेकेंडरी स्कूल के प्रांगण में बाल दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के चित्र पर पुष्प माल्यार्पण कर नमन किया। इसके बाद स्कूली बच्चों ने बाल दिवस से संबंधित गीत, कविता ,नृत्य, सामूहिक नृत्य आदि रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए। स्कूल की प्रधानाध्यापिका सुनैना कंवर राजावत ने बताया कि बाल दिवस की अवसर पर बच्चों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक भवानी सिंह चौहान समेत सभी शिक्षक शिक्षिकाएं व छात्र उपस्थित थे।

प्रकृति सैनी ने नाम रोशन किया

फुलेरा, (निसं)। कस्बे के न्यू कॉलोनी निवासी वरिष्ठ समाजसेवी रामजी लाल सैनी की पौत्री प्रकृति सैनी ने विनायक विद्यापीठ सीनियर सेकेंडरी स्कूल सांगानेर जयपुर द्वारा आयोजित जिला स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में तीरंदाजी में भाग लेकर फुलेरा का प्रतिनिधित्व किया। जिसमें जिला स्तर पर अपनी उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रकृति ने प्रथम स्थान हासिल करते हुए फुलेरा क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। गौरतलब है कि प्रकृति ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने परिजनों, शाला प्रधान और कोच मयंक श्रीवास्तव को दिया है। प्रकृति के दादाजी रामजीलाल सैनी ने जानकारी देते हुए बताया कि बेटी प्रकृति अब राज्य स्तर पर तीरंदाजी प्रतियोगिता में जयपुर जिले का प्रतिनिधित्व करेगी, जो कि प्रतापगढ़ में आयोजित होगी।

राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता शुरू

मालपुरा, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लावा में सोमवार को शिक्षा विभागीय राज्य स्तरीय 17 वर्ष हॉकी प्रतियोगिता का शुभारम्भ हुआ। सोमवार को हुए लीग मैचों में हनुमानगढ़ ने जनजाति एकेडमी उदयपुर को 5-0 से पराजित किया। गंगानगर व धौलपुर के बीच मुकाबला बराबर रहा। चितौड ने डुंगरपुर को 5-0, भरतपुर ने प्रतापगढ को 3-0 से, टोंक ने उदयपुर को 4-0 से, शारदुल बीकानेर ने बांसवाडा को 10-0 से, सीकर ने झुंझुनु को 6-1 से, भीलवाडा ने जयपुर द्वितीय को 2-1 से, जयपुर प्रथम ने जैसलमेर को 4-0 से, अजमेर ने जोधपुर को 1-0 से, जालौर ने बांरा को 2-0 से,पाली ने अलवर को 1-0 से चूरू ने कोटा को 4-0 से, राजसमन्द ने कोटा को 3-1 से,डूंगरपुर ने बूंदी को 6-0 से,अलवर ने बाडमेर को 3-0 से , राजसमन्द ने बांसवाडा को 6-0 से पराजित किया।

कॉलेज में रक्तदान शिविर लगाया

चाकसू, (निसं)। सोमवार को कस्बे के कस्तूरी देवी कॉलेज में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि विधायक वेद प्रकाश सोलंकी ने कहा कि प्रत्येक युवाओं को रक्तदान करना चाहिए, जिससे कई लोगों को जीवनदान मिलता है एवं कई परिवारों के चिराग बुझने से बचते हैं। शिविर में विधायक द्वारा सभी रक्तदाताओं को हेलमेट व प्रसस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया शिविर संयोजक एवं कॉलेज निदेशक सुमित शर्मा ने बताया कि यूनिवर्सल ब्लड सेंटर के चिकित्सकीय टीम के सहयोग से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया ब्लड बैंक प्रभारी प्रेम राज मीणा के नेतृत्व में ब्लड टीम द्वारा रक्तदान शिविर में पूर्ण सहयोग से 80 यूनिट ब्लड एकत्र किया गया है।

भाई-बहिन से प्रताड़ना के दो गिरफ्तार

मालपुरा, (निसं)। लाम्बाहरिसिंह थाना क्षेत्र भोपलावजी मंदिर के पास हुए जातिय पंचायत व जंगल में भाई-बहिन को बंधक बना मारपीट कर वीडियो वायरल करने के मामले में पीड़ित कालू की ओर से दर्ज करवाई नामजद प्राथमिकी में कार्यवाही करते हुए थानाधिकारी भागीरथ सिंह व उनकी टीम ने नामजद दो आरोपी नवरतन मोग्या निवासी मदनपुरा की ढाणी तन झिरोता थाना बोराडा व संतरा पत्नी पारस मोग्या निवासी भोपलावजी की ढाणी तन कांटोली को गिरफतार किया गया। थानाधिकारी ने बताया कि उक्त प्रकरण में पूर्व में 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। जो कि न्यायिक अभिरक्षा में चल रहे हैं।

यदि मैं चयन समिति का अध्यक्ष होता तो फिर कहता कि हार्दिक पांडया को विश्वकप 2024 के लिये कप्तान होना चाहिये। मैं सीधे तौर पर यह फैसला करता।

- के. श्रीकांत

पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता, टी-20 विश्वकप में भारत की हार पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶

आदिल राशिद

आदिल राशिद अपने दमदार प्रदर्शन से इंग्लैंड को टी20 विश्व कप चैम्पियन बनाने में अहम भूमिका निभाई के बाद कोच्चि में 23 दिसंबर को होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी नीलामी में फ्रेंचाइजी टीमों की नजर में होंगे। राशिद ने भारत के खिलाफ सेमीफाइनल और पाकिस्तान के खिलाफ फाइनल में यादगार प्रदर्शन किया। उन्होंने इन मैचों में सूर्यकुमार यादव और बाबर आजम जैसे अहम बल्लेबाजों के विकेट चटकाये। वह अतीत में इंडियन प्रीमियर लीग में पंजाब किंग्स का प्रतिनिधित्व कर चुके है।

क्या आप जानते हैं ?... स्वीटजरलैंड (1954) में हुए पांचवें विश्वकप फुटबॉल में खेले गये 26 मैचों में रिकॉर्ड तोड़ 140 गोल हुए। औसत 5.38 गोल प्रति मैच।

शरत कमल को 30 नवम्बर को मिलेगा खेल रत्न

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। टेबल टेनिस खिलाड़ी अचंता शरत कमल को 30 नवंबर को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वर्ष 2022 के लिये मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार प्रदान करेंगी।

शरत इस साल खेलरत्न पाने वाले अकेले खिलाड़ी हैं जबकि 25 खिलाड़ियों को अर्जुन पुरस्कार दिया जायेगा जिनमें बैडमिंटन खिलाड़ी लक्ष्य सेन, एच एस प्रणय, महिला मुक्केबाज निकहत जरीन, एथलीट एल्डौस पॉल, अविनाश साबले शामिल हैं। विजेताओं को राष्ट्रपति भवन में आयोजित विशेष समारोह में पुरस्कार दिये जायेंगे।

जीवनजोत सिंह तेजा (तीरंदाजी), मोहम्मद अली कमर (मुक्केबाजी), सुमा शिरूर (पैरा निशानेबाजी) और सुजीत मान (कुश्ती) को द्रोणाचार्य पुरस्कार दिया जायेगा जबकि भारतीय कप्तान रोहित शर्मा के बचपन के कोच दिनेश लाड (क्रिकेट) , बिमल घोष (फुटबॉल) और राज सिंह (कुश्ती) को आजीवन योगदान वर्ग में यह पुरस्कार मिलेगा । अश्विनी अकुंजी (एथलेटिक्स), धरमवीर सिंह (हॉकी), बी सी सुरेश (कबड्डी) और नीर महादुर गुरंग (पैरा एथलेटिक्स) को ध्यानचंद आजीवन योगदान पुरस्कार मिलेगा।

विजेताओं की सूची : मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार : अचंता शरत कमल

अर्जुन पुरस्कार : सीमा पूनिया (एथलेटिक्स), एल्डौस पॉल (एथलेटिक्स), अविनाश साबले (एथलेटिक्स), लक्ष्य सेन (बैडमिंटन), एच एस प्रणय (बैडमिंटन), अमित (मुक्केबाजी), निकहत जरीन (मुक्केबाजी), भक्ति कुलकर्णी (शतरंज), आर प्रज्ञानानंदा (शतरंज), दीप ठोस इक्का (हॉकी), सुशीला देवी (जूडो), साक्षी कुमारी (कबड्डी), नयन मोनी सैकिया (लॉनबॉल), सागर ओव्हालकर (मलखम्ब), इलावेनिल वालारिवन (निशानेबाजी), ओमप्रकाश मिठारवाल (निशानेबाजी), श्रीजा अकुला (टेबल टेनिस), विकास ठाकुर (भारोत्तोलन), अंशु (कुश्ती), सरिता (कुश्ती), परवीन (वुशू), मानसी जोशी (पैरा बैडमिंटन), तरूण ढिल्लो (पैरा बैडमिंटन), स्वप्निल पाटिल (पैरा तैराकी), जर्लिन अनिका जे (बधिर बैडमिंटन)

द्रोणाचार्य पुरस्कार (नियमित श्रेणी में कोचों के लिये) : जीवनजोत सिंह तेजा (तीरंदाजी), मोहम्मद अली कमर (मुक्केबाजी), सुमा शिरूर (पैरा निशानेबाजी) और सुजीत मान (कुश्ती)

लाइफटाइम श्रेणी : दिनेश लाड (क्रिकेट), बिमल घोष (फुटबॉल), राज सिंह (कुश्ती)

ध्यानचंद लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार : अश्विनी अकुंजी (एथलेटिक्स), धरमवीर सिंह (हॉकी), बी सी सुरेश (कबड्डी), नीर बहादुर गुरंग (पैरा एथलेटिक्स)

राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार : ट्रांस स्टेडिया इंटरप्राइजेस प्राइवेट लिमिटेड, कलिंगा सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, लद्दाख स्की और स्नोबोर्ड संघ मौलाना अबुल कलाम आजा ट्रॉफी : गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी , अमृतसर।

पुणेरी पलटन ने बंगाल वॉरियर्स को 43-27 से हराया

पुणे, 14 नवंबर। पुणेरी पलटन ने प्रो कबड्डी लीग (पीकेएल) मैच में सोमवार को यहां दमदार प्रदर्शन करते हुए बंगाल वॉरियर्स को 43-27 से हराया। पुणे की टीम के लिए आकाश शिंदे (10 अंक), असलम इनामदार (नौ अंक) और मोहित गोयत (आठ अंक) की तिकड़ी ने शानदार खेल दिखाया। इस दौरान इनामदार ने सत्र में अपने 100 अंक पूरे किये। पुणेरी पलटन ने शानदार आगाज करते हुए 11-1 की बढ़त कायम की। मध्यांतर के समय टीम 24-13 से आगे थी। बंगाल की टीम ने दूसरे हाफ बेहतर प्रदर्शन किया लेकिन यह पुणेरी पलटन को टक्कर देने के लिए काफी नहीं था।

एशियाई एयरगन चैम्पियनशिप के एयर राइफल मिश्रित टीम स्पर्धाओं में भारत का दबदबा

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। भारतीय एयर राइफल निशानेबाजों ने कोरिया के डेगू में 15वीं एशियाई एयरगन चैंपियनशिप में अपना दबदबा कायम रखते हुए प्रतियोगिता के चौथे दिन जूनियर और सीनियर मिश्रित टीम स्पर्धाओं में शीर्ष दो स्थान हासिल किये। मेहुली घोष और अर्जुन बबूता ने हमवतन किरण अंकुश जाधव और इलावेनिल वलारिवन के खिलाफ सीनियर वर्ग का स्वर्ण पदक मैच 16-10 से जीता, जबकि दिव्यांश सिंह पंवार और रमिता की जोड़ी ने जूनियर स्पर्धा में श्री कार्तिक सबरी राज रविशंकर और नैन्सी को 17-11 से मात दी। मेहुली और अर्जुन की जोड़ी 631 के स्कोर के साथ क्वालीफिकेशन में शीर्ष पर थी, जबकि किरण और इलावेनिल 630.9 अंक के साथ दूसरे स्थान पर थे। भारतीय निशानेबाजों ने प्रतियोगिता में अब तक 12 स्वर्ण पदक जीत लिये हैं।

केंकरे ने सुदेवा को हराकर आई-लीग की शुरुआत की

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। केंकरे फुटबॉल क्लब ने आई-लीग 2022-23 के अपने पहले मुकाबले में सोमवार को सुदेवा दिल्ली एफसी को 2-1 से हराकर टूर्नामेंट में अपना खाता खोला। केंकरे के विंगर अजफर नूरानी को टीम के लिए दूसरा गोल करने और पहले में सहायता प्रदान करने के लिए हीरो ऑफ द मैच घोषित किया गया। हीरो आई-लीग में खेलने वाले दिल्ली के एकमात्र क्लब सुदेवा ने घरेलू मैदान राजधानी मॉडल टाउन स्थित छत्रसाल स्टेडियम में तेज-तर्रार शुरुआत जरूर की लेकिन मुम्बई के केंकरे एफसी ने उसका संतुलित ढंग से जवाब दिया और शुरुआती बढ़त हासिल की। अहमद फैज खान मैच के 12वें मिनट में केंकरे को 1-0 की बढ़त दिलाई। फैज ने अजफर नूरानी के क्रॉस पर बॉक्स के सेंटर से राइट फुटर शॉट लगाकर यह गोल दागा। दो मिनट के स्टॉपेज टाइम के दौरान 451वें मिनट में बासित अहमद भट के हैडर ने मेजबान टीम को राहत पहुंचाई। दाहिने फ्लैंक से आर. लाव्मनसांगजुआला के हवाई क्रॉस को बासित ने हैडर किया और बॉल केंकरे के गोलकीपर पदम छेत्री को छकाते हुए गोललाइन के पार पहुंच गई।

संधू 21वें स्थान पर, ओग्लेट्री ने खिताब जीता

काहिरा, 14 नवंबर। भारत के अजितेष संधू एक अंडर 69 के स्कोर के साथ 15 लाख डॉलर ईनामी राशि की इंटरनेशनल गोल्फ सीरिज में संयुक्त 21वें स्थान पर रहे। संधू का स्कोर सात अंडर 283 था। एसएसपी चौरसिया तीन अंडर 277 के स्कोर के साथ संयुक्त 41वें स्थान पर रहे जबकि विराज मडप्पा संयुक्त 51वें और गगनजीत भुल्लर संयुक्त 61वें स्थान पर रहे। एंडी ओग्लेट्री ने आठ अंडर 62 के स्कोर के साथ खिताब जीता। यह पेशेवर रैंक में उनका पहला खिताब है।

आरसीए ने कहा पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा होंगे नए मुख्य चुनाव अधिकारी

जयपुर, 14 नवंबर। आरसीए चुनाव पर लगी रोक से जुडे मामले में हाईकोर्ट में आरसीए की ओर से जवाब पेश किया गया है। आरसीए की ओर से कहा गया कि पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त सुनील अरोडा को मुख्य चुनाव बनाया जा रहा है। वहीं पूर्व में नियुक्त पूर्व आईएएस रामलुभाया ने इस पद से इस्तीफा दे दिया है। इसलिए जिला क्रिकेट संघों की ओर से दायर याचिकाएं सारहीन हो गई हैं। वहीं याचिकाकर्ताओं के अधिवक्ता अभिनव शर्मा के जूनियर ने कहा कि अधिवक्ता शर्मा पारिवारिक कारणों के चलते उपस्थित नहीं हुए हैं। ऐसे में मामले की सुनवाई टाली जाए। इस पर जस्टिस इन्द्रजीत सिंह ने दौसा जिला संघ व अन्य की याचिकाओं पर सुनवाई 18 नवंबर को तय की है। सुनवाई के दौरान आरसीए की ओर से अधिवक्ता प्रतीक कासलीवाल ने कहा कि पूर्व मुख्य चुनाव अधिकारी रामलुभाया के भाई बीमार हो गए हैं। इसलिए वे यूएसए गई हैं और इसलिए अपने पद से इस्तीफा दिया है। ऐसे में आरसीए की गत 9 नवंबर को हुई बैठक में सुनील अरोडा को नया चुनाव अधिकारी बनाया गया है। दरअसल जिला क्रिकेट संघों ने पूर्व आईएएस व प्रदेश के जिलों के पुनर्गठन के लिए बनी हाई पावर कमेटी के चेयरमैन रामलुभाया को आरसीए का मुख्य चुनाव अधिकारी बनाने को चुनौती दी है। संघों का कहना है कि रामलुभाया के मुख्य चुनाव अधिकारी बनाए जाने से आरसीए के निष्पक्ष चुनाव नहीं हो पाएंगे। वे जिस कमेटी के चेयरमैन है उसका नियंत्रण सीएम के पास है और सीएम के बेटे इस चुनाव में अध्यक्ष पद प्रत्याशी हैं। एकलपीठ ने 29 सितंबर को आदेश जारी कर आरसीए के 30 सितंबर को होने वाले चुनाव पर अंतरिम रोक लगा दी थी। यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक भी गया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी अंतरिम रोक बरकरार रखते हुए मामला एकलपीठ के पास तय करने के लिए भेज दिया था।

एशियाई चैम्पियनशिप स्वर्ण से फॉर्म हासिल करने में मदद मिलेगी : लवलीना

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। भारत की स्टार मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन ने सोमवार को एशियाई चैम्पियनशिप में मिले स्वर्ण को 'काफी महत्वपूर्ण' बताते हुए कहा कि नये भारवर्ग में अपने पहले टूर्नामेंट से उसे खोया फॉर्म हासिल करने में मदद मिलेगी। लवलीना तोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने के बाद से खराब फॉर्म से जूझ रही थी। उन्होंने पेरिस ओलंपिक को ध्यान में रखकर भारवर्ग 69 से 75 किलो कर लिया। जोर्डन के अम्माम में एशियाई चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली लवलीना ने स्वदेश लौटने के बाद कहा ,"यह स्वर्ण मेरे लिये काफी मायने रखता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। इससे मेरा आत्मविश्वास बढेगा।"

उन्होंने कहा ," यह नये भारवर्ग में मेरी पहली चैम्पियनशिप थी और मैने स्वर्ण जीता। मुझे पता है कि मैं सही दिशा में जा रही हूं। मैं फॉर्म हासिल कर रही हूं और सही समय पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश में हूं। यह जीत काफी मायने रखती है।" लवलीना ने कहा ," मैने पिछले साल ओलंपिक में कांस्य पदक जीता था।

मैं हर चैम्पियनशिप में अच्छे प्रदर्शन की कोशिश में हूं। मेरा पहला लक्ष्य अगले साल दिल्ली में होने वाली विश्व चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतना है। इसके बाद पेरिस ओलंपिक में पदक जीतना भी लक्ष्य है।" भारत ने एशियाई चैम्पियनशिप में चार स्वर्ण, दो रजत और छह कांस्य पदक जीते। चारों स्वर्ण महिला मुक्केबाजों ने जीते।

आईपीएल से इतर विदेशी लीग में नहीं खेलना भी भारत की हार का कारण : सैमी

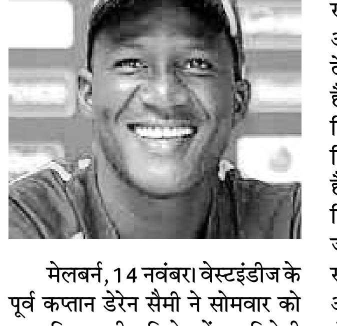

मेलबर्न, 14 नवंबर। वेस्टइंडीज के पूर्व कप्तान डेरेन सैमी ने सोमवार को कहा कि भारतीय क्रिकेटरों का विदेशी लीग में नहीं खेलना भी टी20 विश्वकप में उनके खराब प्रदर्शन का एक कारण है। भारत के किसी भी सक्रिय खिलाड़ी को विदेशी टी20 लीग में खेलने की अनुमति नहीं है। वेस्टइंडीज को 2012 और 2016 में टी20 विश्व कप का खिताब दिलाने वाले सैमी ने कहा कि इंग्लैंड को उसके खिलाड़ियों के विदेशी लीग विशेषकर ऑस्ट्रेलिया की बिग बैश में खेलने का फायदा मिला।

सैमी ने आईसीसी की विज्ञिप्त में कहा,"विश्व भर की टी20 लीग में खेलने वाले खिलाड़ियों ने वास्तव में अपनी चमक बिखेरी। आप भारत को देखिए जिसकी सबसे बड़ी टी20 लीग है लेकिन उसके खिलाड़ियों को उन खिलाड़ियों जैसा अनुभव नहीं है जो विश्व भर में विभिन्न लीग में खेल रहे हैं।" उन्होंने कहा, "आप एलेक्स हेल्स, क्रिस जॉर्डन जैसे खिलाड़ियों को देखें जो कि बिग बैश में खेलते हैं। यह कोई संयोग नहीं है कि उन्होंने (इंग्लैंड) ऑस्ट्रेलिया में अच्छा प्रदर्शन किया। इंग्लैंड की टीम सबसे संपूर्ण टीम थी और वे चैंपियन बनने के सच्चे हकदार थे। उन्होंने सभी दबाव वाले मैचों में दिखाया कि उनके पास सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंडर टीम है।" इंग्लैंड ने रविवार को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर पाकिस्तान को पांच विकेट से हराकर टी20 विश्वकप का खिताब जीता। वह एकमात्र टीम है जिसके पास एक ही समय में वनडे और टी20 विश्व कप के खिताब हैं।

यंगमेन को रौंदकर शीर्ष पर काबिज सीआईएसएफ

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। सीआईएसएफ प्रोटेक्टर ने सोमवार को फुटबॉल दिल्ली सीनियर डिवीजन लीग में यंगमेन एफसी को 8-1 से रौंद डाला। विजेता टीम के लिए सुमित ने दो, जबकि मैन ऑफ द मैच भोला सिंह, साहिल, चंद्रा, शक्ति, रशीद और संतोष ने एक-एक गोल किया। पराजित यंगमेन का इकलौता गोल ध्रीतेन ने जमाया। इस जीत के साथ सीआईएसएफ अंक तालिका में शीर्ष पर बरकरार है। नेहरू स्टेडियम पर खेले गए दिन के दूसरे मैच में अहबाब एफसी ने जगुआर एफसी को 4-1 से परास्त किया। मैन ऑफ द मैच लालनुनज़ामा ने अहबाब के लिये दो गोलकिये जबकि रिकी घ्रामि और राजप्रसाद ने एक-एक गोल किया। पराजित का गोल आशु ने किया। सीनियर डिवीजन लीग में मंगलवार को खेले जाने वाले मैच में गढ़वाल डायमंड और दिल्ली टाइगर्स आमने-सामने होंगे।

कुंबले टेस्ट और सीमित ओवरों की अलग-अलग टीम रखने के पक्ष में

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। भारत के पूर्व कप्तान और कोच अनिल कुंबले का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में आगे बढ़ने के लिए सीमित ओवरों और टेस्ट प्रारूप की पूरी तरह से भिन्न टीम होनी चाहिए। इंग्लैंड की वनडे और टी20 में सफलता के बाद सफेद गेंद और लाल गेंद से खेले जाने वाले क्रिकेट के लिए अलग-अलग टीम रखने की चर्चा शुरू हो गई है। कुंबले ने ईएसपीएनक्रिकइंफो से कहा," निश्चित तौर पर आपको अलग-अलग टीमों की जरूरत पड़ेगी। आपको टी20 विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है। मुझे लगता है कि इंग्लैंड की इस टीम ने दिखाया है और यहां तक की पिछली बार के टी20 विश्व कप चैंपियन ऑस्ट्रेलिया ने भी साबित किया है कि आपके पास अधिक से अधिक ऑलराउंडर होने चाहिए। आप उनके बल्लेबाजी क्रम पर गौर करिए।"

उन्होंने कहा," आज लियाम लिविंगस्टोन सातवें नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आता है। किसी भी अन्य टीम के पास नंबर सात पर लिविंगस्टोन जैसा बल्लेबाज नहीं है। ऑस्ट्रेलिया के लिए मार्कस स्टोइनिस छठे नंबर पर बल्लेबाजी करता है। आपको इस तरह की टीम तैयार करनी होगी। "

कुंबले ने कहा," मैं वास्तव में इसको लेकर सुनिश्चित नहीं हूं कि आपको अलग कप्तान या अलग कोच चाहिए। यह सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि आप किस तरह की टीम का चयन करने जा रहे हैं। इसके बाद तय करें कि आपको कैसा सहयोगी स्टाफ और कप्तान चाहिए।"

लंबे प्रारूप पर ध्यान देन के लिए आईपीएल से हटे बिलिंग्स

नयी दिल्ली, 14 नवंबर। इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज सैम बिलिंग्स ने लंबे प्रारूप की क्रिकेट पर ध्यान देने के लिए अगले साल होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से हटने का फैसला किया है।

बिलिंग्स ने इस साल के शुरू में कोलकाता नाइट राइडर्स की तरफ से आठ मैच खेले थे जिसमें उन्होंने 169 रन बनाए। उन्होंने 2016 में आईपीएल में पदार्पण किया था। बिलिंग्स ने ट्वीट किया," मैंने एक कड़ा फैसला किया है। मैं अगले आईपीएल में नहीं खेलूंगा। मैं इंग्लैंड में गर्मियों के सत्र में कैंट के लिए लंबे प्रारूप की क्रिकेट में खेलने पर ध्यान देना चाहता हूं। "

उन्होंने कहा," मुझे मौका देने के लिए कोलकाता नाइट राइडर्स का आभार। मैंने उसके साथ बिताए गए हर पल का आनंद लिया। उम्मीद है कि भविष्य में फिर से मैं आपके लिए खेलूंगा।" बिलिंग्स ने खिलाड़ियों को अपनी टीम में बनाए रखने के लिए तय की गई समयसीमा से एक दिन पहले आईपीएल से हटने की घोषणा की।

आईओए के एथलीट कमीशन में सिंधू, मैरी कॉम सहित 10 का चयन

नयी दिल्ली,14 नवंबर। पांच बार की विश्व चैंपियन मैरी कॉम, दो बार की ओलंपिक मेडलिस्ट पीवी सिंधू और राष्ट्रमंडल खेलों के दो बार के गोल्ड मेडलिस्ट अचंता शरत कमल सहित 10 खिलाड़ियों को सोमवार को निर्विरोध रूप से भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के एथलीट आयोग का सदस्य चुना गया।

मैरी कॉम, सिंधू और शरत कमल के अलावा यहां हुए चुनावों में टोक्यो ओलंपिक की सिल्वर मेडलिस्ट भारोत्तोलक मीराबाई चानू, ओलंपिक 2012 के कांस्य पदक विजेता निशानेबाज गगन नारंग, शीतकालीन ओलंपियन शिवा केशवन, वरिष्ठ हॉकी खिलाड़ी रानी रामपाल, साइक्लिस्ट भवानी देवी, नौकायन खिलाड़ी बजरंग लाल और पूर्व शॉट-पुट एथलीट ओम प्रकाश करहाना को भी आयोग के लिये निर्विरोध चुना गया है।

नवंबर 10 को अपनाये गये भारतीय ओलंपिक संघ के नये संविधान के तहत एथलीट आयोग में पुरुष और महिला सदस्यों का समान प्रतिनिधित्व होना है। नवनिर्वाचित सदस्यों में पांच महिलाओं सहित सभी 10 सदस्य ओलंपियन हैं, जबकि केशवन इकलौते शीतकालीन ओलंपियन हैं। एथलीट आयोग में सिर्फ 10 सीटों के लिये इतने ही उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया था, जिसके बाद निर्वाचन अधिकारी उमेश सिन्हा ने सभी को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया।

भारत के पहले ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता निशानेबाज अभिनव बिंद्रा और भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान सरदार सिंह क्रमशः अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) और एशियाई ओलंपिक परिषद (ओसीए) के संबंधित निकायों के सदस्य के रूप में 12 सदस्यीय एथलीट आयोग को पूरा करेंगे। दोनों के

चोट के बाद दो हफ्ते के रिहैब से गुजरेंगे शाहीन

लाहौर, 14 नवंबर। पाकिस्तान के शीर्ष तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को टी20 विश्व कप 2022 के फाइनल में चोट लगने के बाद दो हफ्ते के रिहैब से गुजरने की सलाह दी गई है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने सोमवार को यह जानकारी दी। शाहीन मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर रविवार को खेले गए फाइनल में हैरी ब्रूक का कैच लेते हुए अपने दाहिने घुटने पर गिर गए थे।

वान डेर डुसेन द. अफ्रीका के ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए फिट

जोहानिसबर्ग, 14 नवंबर। उंगली के फ्रैक्चर से उबरने के बाद बल्लेबाज रासी वैन डेर डूसन की अगले महीने से ऑस्ट्रेलिया में शुरू होने वाली तीन टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए सोमवार को दक्षिण अफ्रीका की टीम में वापसी हुई है।

टीम में नये तेज गेंदबाज गेराल्ड कोएट्जे को शामिल किया गया है जबकि बल्लेबाज थेउनिस डि ब्रुइन की भी वापसी हुई है। डि ब्रुइन ने 2019 के बाद से अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला है। रायन रिकेल्टन के चोटिल होने के कारण विकेटकीपर के तौर पर विकेटकीपर-हेनरिक क्लासेन को तरजीह दी गयी है।

टीम को हालांकि शीर्ष क्रम के बल्लेबाज कीगन पीटरसन की कमी खलेगी। तीसरे क्रम पर बल्लेबाजी करने वाले पीटरसन के घरेलू क्रिकेट के दौरान मांसपेशियों में खिंचाव के कारण चोटिल हो गये। क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने कहा कि वह दौरे से पहले 'ठाोइन' की चोट से उबर जायेंगे। कप्तान डीन एल्गर की अगुवाई में टीम ऑस्ट्रेलिया में ब्रिसबेन, मेलबर्न और सिडनी में दिसंबर - जनवरी में तीन मैचों की टेस्ट श्रृंखला खेलेगी। विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप की तालिका में ऑस्ट्रेलिया शीर्ष जबकि दक्षिण अफ्रीका दूसरे पायदान पर है। दक्षिण अफ्रीका पहली बार अंतरिम मुख्य कोच मालिबोंगवे मकेटा के मार्गदर्शन में मैदान में उतरेगा। टी20 विश्व कप में नीदरलैंड से हारने के बाद प्रोटियाज का पहला मुकाबला होगा।

वॉर्नर ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का अंदेशा दिया

मेलबर्न, 14 नवंबर। ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर ने शनिवार को अंदेशा दिया कि वह अगले एक साल में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले सकते हैं।

वॉर्नर ने ऑस्ट्रेलिया के रेडियो नेटवर्क ट्रिपल एम के एक कार्यक्रम में कहा, टेस्ट क्रिकेट शायद सबसे पहले जाएगा, क्योंकि यह सब (क्रिकेट कार्यक्रम) ऐसे ही होंगे। टी20 विश्व कप 2024 में है, (एकदिवसीय) विश्व कप अगले साल है। यह टेस्ट क्रिकेट में मेरे अंतिम 12 महीने हो सकते हैं, लेकिन मैं सीमित ओवर क्रिकेट से प्रेम करता हूं।

टी20 विश्व कप 2022 में ऑस्ट्रेलिया के पहले दौर में बाहर होने के बाद वॉर्नर सहित कई वरिष्ठ खिलाड़ियों के भविष्य पर तलवार लटक रही है। पूर्व कंगारू क्रिकेटर मैथ्यू हेडेन ने हाल ही में कहा कि टीम को 'पुनरुद्धार' की जरूरत है और कुछ खिलाड़ियों को आगामी विश्व कप से पहले टीम से हटना चाहिये। एकदिवसीय विश्व कप 2023 का आयोजन भारत में होना है, जबकि टी20 विश्व कप 2024 वेस्ट इंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा। वॉर्नर ने कहा कि वह दोनों

विश्व कप में खेलना चाहते हैं और उन्होंने क्रिकेट से दूर जाने की योजना बना ली है।

वॉर्नर ने कहा, मैं टी20 क्रिकेट से प्रेम करता हूं। मैं 2024 तक खेलने की कोशिश करूंगा। जो भी लोग कह रहे हैं कि मेरा समय गुज़र गया है और मेरे जैसे कई खिलाड़ियों का समय गुज़र गया है, वे सोच-समझकर दुआ मांगें। उल्लेखनीय है कि अगले 12 महीनों में ऑस्ट्रेलिया को भारत आकर बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी खेलनी है, जिसके बाद कंगारू टीम यहां विश्व कप में भी हिस्सा लेगी। इसके अलावा इंग्लैंड में होने वाली एशेज़ सीरीज 2023 का आयोजन जून-जुलाई 2023 में किया जाएगा।

भारतीय क्रिकेट को इंग्लैंड से सीखना चाहिये : वॉन

सीमित ओवर क्रिकेट खेलने वाले इंग्लैंड के खिलाड़ियों का समूह अद्भुत है, और आखिरकार इंग्लिश क्रिकेट के पास ऐसी टीम है जो दुनिया की दूसरी टीमों को राह दिखा सकती है। इंग्लैंड अपने काम-काज कैसे संभाल रहा है? वह ऐसा क्या करते हैं? अगर भारतीय क्रिकेट की कमान मेरे हाथ में होती तो मैं अपना अभिमान निगल जाता और प्रेरणा के लिये इंग्लैंड की ओर देखता

लंदन/मेलबर्न, 14 नवंबर। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर माइकल वॉन ने भारतीय क्रिकेट प्रशासन को नसीहत देते हुए कहा है कि अगर भारतीय क्रिकेट की कमान उनके हाथ में होती तो वह अपना अभिमान निगलकर टी20 विश्व चैंपियन इंग्लैंड से सीख लेते।

वॉन ने द टेलीग्राफ अखबार में लिखे गए लेख में कहा, सीमित ओवर क्रिकेट खेलने वाले इंग्लैंड के खिलाड़ियों का समूह अद्भुत है, और आखिरकार इंग्लिश क्रिकेट के पास ऐसी टीम है जो दुनिया की दूसरी टीमों को राह दिखा सकती है। इंग्लैंड अपने काम-काज कैसे संभाल रहा है? वह ऐसा क्या करते हैं? अगर भारतीय

क्रिकेट की कमान मेरे हाथ में होती तो मैं अपना अभिमान निगल जाता और प्रेरणा के लिये इंग्लैंड की ओर देखता। इंग्लैंड ने जॉस बटलर की अगुवाई में रविवार को टी20 विश्व कप 2022 का खिताब जीत लिया। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेले गए फाइनल में पाकिस्तान ने इंग्लैंड को 138 रन का लक्ष्य दिया था, जिसे बटलर की टीम ने पांच विकेट गंवाकर 19 ओवर में हासिल कर लिया।

बीते कुछ वर्षों में सीमित ओवर क्रिकेट में इंग्लैंड का प्रदर्शन शानदार रहा है और उन्होंने ऑयन मॉर्गन की अगुवाई में एकदिवसीय विश्व कप 2019 भी जीता था। वॉन ने कहा, इंग्लैंड को विश्व कप जीतने चाहिये क्योंकि उनके पास सर्वश्रेष्ठ टीम है, लेकिन हम कई बार अच्छी टीमों को उनके कद के अनुसार खेलता हुआ नहीं देखते। विश्व कप 2019 के फाइनल में भी, इंग्लैंड को भाग्य का थोड़ा साथ मिला था और यहां भी। वह भाग्यशाली होने के हकदार हैं, क्योंकि उन्होंने एक शैली को अपनाकर लंबे समय तक सही दिशा में काम किया है।

उन्होंने कहा, साल 2019 में भी वह टूर्नामेंट की शुरुआत में पाकिस्तान और श्रीलंका से हार गये थे। यहां वे आयरलैंड से हारे। दोनों बार उनका सफर शुरू में ही खत्म हो सकता था, लेकिन उनकी मानसिकता उन्हें तब जीतना सिखाती है जब जरूरी हो। उनके पास बड़े मैच के खिलाड़ी हैं।

वॉन ने यह भी कहा कि धोनी की तरह बटलर भी लंबे समय तक कप्तान बने रह सकते हैं और एक विरासत बना सकते हैं। उन्होंने कहा, जॉस बटलर ने पहली बार में ही विश्व कप जीत लिया है और 32 साल की उम्र में उनके पास अपनी विरासत बनाने का मौका है। महेंद्र सिंह धोनी भारत के कप्तान के रूप में वर्षों तक बने रहे। बटलर ऐसा कर सकते हैं, खासकर अब वह एक ही (टी20) प्रारूप पर ध्यान दे रहे हैं। जब आपके पास बाएं हाथ का तेज गेंदबाज, गति, स्विंग और स्पिन, तीन स्पिनर हों तो कप्तान के रूप में आपके पास सब कुछ होता है। यह मेरे लिए सीमित ओवर क्रिकेट का मानदंड है। आपके पास विकल्प होने चाहिए। उनके पास सभी खिलाड़ी मैच जिताने की क्षमता रखते हैं।

डार का ऑलराउंड प्रदर्शन, पाक ने श्रृंखला 1-1 से बराबर की

लाहौर, 14 नवंबर। पाकिस्तान ने निदा डार (28 रन, दो विकेट) के हरफनमौला प्रदर्शन की मदद से आयरलैंड को वर्षाबाधित दूसरे महिला टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में सोमवार को छह विकेट से हराकर तीन मैचों की शृंखला 1-1 से बराबर कर ली। आयरलैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पाकिस्तान के सामने 17 ओवर में 119 रन का लक्ष्य रखा, जिसे पाकिस्तान ने चार विकेट गंवाकर 16 ओवर में हासिल कर लिया। पाकिस्तान ने टॉस जीतकर आयरलैंड को बल्लेबाजी के लिये बुलाया और विपक्षी टीम को रन बनाने का अवसर नहीं दिया। सलामी बल्लेबाज एमी हंटर ने आयरलैंड के लिये सर्वाधिक 36 रन बनाये, हालांकि इसके लिये उन्होंने 39 गेंदें खेलीं। ओर्ला प्रेंडरगास्ट ने 17 गेंदों पर तीन चौके लगाकर 20 रन बनाये जबकि ई रिचर्डसन ने 15(9) और रेबेका स्कोटेल ने 17(12) रन का योगदान दिया।

निदा ने पाकिस्तान के लिये शानदार गेंदबाजी करते हुए तीन ओवर में 19 रन देकर दो विकेट लिये जबकि नशरा संधू ने चार ओवर में 21 रन देकर दो विकेट चटकाये। आयरलैंड ने 118 रनों की रक्षा करते हुए चौथे ओवर में सलामी बल्लेबाज मुनीबा अली (12) और कप्तान बिस्माह मारूफ को पवेलियन भेज दिया। आयरलैंड को मैच पर पकड़ बनाने के लिये और विकेटों की जरूरत थी लेकिन सलामी बल्लेबाज जवेरिया खान ने 39 गेंदों पर 35 रन की संयम भरी पारी खेलकर टीम को संकट से निकाल दिया। निदा ने जवेरिया का साथ देते हुए 25 गेंदों पर एक चौके और एक छक्के की मदद से 28 रन बनाये, जबकि दोनों के बीच 46 रन की साझेदारी हुई। जवेरिया और निदा के आउट होने के बाद पाकिस्तान को तीन ओवरों में 22 रन चाहिये थे।

"स्लोप पॉइन्ट" न्यूज़ीलैंड के साउथ आइलैंड के सुदूर दक्षिण में है। इस क्षेत्र में एन्टार्कटिका से आने वाली भयंकर ठंडी दक्षिण-पश्चिम हवायें चलती रहती हैं। ये हवाएं इतनी तीव्र, प्रचण्ड एवं निर्दयी होती हैं कि जिस तरफ ये बहती हैं, पेड़ सदैव के लिये उस दिशा में झुक जाते हैं। "स्लोप पॉइन्ट" क्षेत्र अधिकतर भेड़-पालन के काम में आता है तथा थोड़ी बहुत भेड़ों के अलावा, द्वीप के इस हिस्से पर कोई मानव या अन्य जानवर नहीं रहते। हवाओं से विकृत हो चुके पेड़ों की छाया में, भेड़ों को संरक्षण देने के लिए बनीं गिनी चुनी परित्यक्त झोंपड़ियाँ ही नज़र आती हैं, लेकिन उनमें रहने वाला कोई नहीं होता। अलीशान सीधी खड़ी चट्टानें नीचे समुद्र के अंदर तक चली गई हैं। पथरीले तटीय क्षेत्र तथा आसपास की खड़ी चट्टानों का दृश्य देखने वालों को चकित कर देता है। यहां एक खंभा है जिस पर लगा साइनबोर्ड इस स्थान से भूमध्यरेखा तथा दक्षिणी ध्रुव की दूरी बताता है। इसके अलावा एक छोटा-सा सौर -ऊर्जा -संचालित प्रकाश स्तंभ (लाइट हाउस) जमीन पर खड़ा दिखाई देता है। स्लोप पॉइन्ट तक पहुँचने के लिए ढंग की सड़कें नहीं हैं लेकिन 20 मिनट पैदल चलकर यहाँ पहुँचा जा सकता है। प्रकृति की ताकत द्वारा उत्पन्न यहाँ का सौंदर्य, विस्मयकारी सीधी चट्टानें, हरे-भरे मैदान, एक दिशा में झुके विशाल वृक्ष, दर्शकों को स्तंभित कर सकते हैं, हाँ, लेकिन मौसम अच्छा होना चाहिए।

भारत जोड़ो यात्रा का रूट बदलने के लिए कई विरोध प्रदर्शनों का डर दिखा रही है गहलोत सरकार

पर क्या असली डर सचिन पायलट की लोकप्रियता है, क्योंकि जिन क्षेत्रों से यात्रा गुजरेगी उन पर पायलट की मजबूत पकड़ है

- **गहलोत को डर है कि, इन क्षेत्रों में यात्रा ज्यादा सफल हो गई तो पायलट की वाहवाही होगी और गहलोत की कुर्सी भी खिसक सकती है।**
- **इसलिए कभी गुर्जरों, तो कभी बेरोजगारों व कभी ओ.बी.सी. विरोध प्रदर्शन का डर दिखा रही है प्रदेश सरकार।**

जयपुर, 14 नवम्बर (का.प्र.)। राहुल गांधी अपने हर भाषण में कहते हैं, कि किसी से डरो मत, लेकिन अब राजस्थान की कांग्रेस सरकार और कांग्रेस संगठन राजस्थान में उनकी भारत जोड़ो यात्रा के प्रवेश से पहले ही इस तरह के माहौल की रिपोर्ट भेज रही है, कि जिस रूट से राहुल गांधी की यात्रा होने वाली है, वहां उन्हें विरोध का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में यात्रा का रूट बदलकर यात्रा को आगे बढ़ाया जाए, लेकिन जो कारण बताए जा रहे हैं, वे काफी रोचक हैं।

सबसे पहले कहा गया कि भारत जोड़ो यात्रा का जो रूट तय है, वह गुर्जर बाहुल्य क्षेत्र है, जहां सचिन पायलट की पकड़ है और सचिन पायलट को मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया है, इसलिए गुर्जर नाराज हैं और यात्रा में विरोध जता सकते हैं। लेकिन यह बात सामने आते ही गुर्जर समुदाय ने सोशल मीडिया के माध्यम से स्पष्ट कर दिया कि वे किसी भी यात्रा का विरोध नहीं करने वाले। इसके बाद में गुर्जर नेता कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला के पुत्र विजय बैंसला का एक बयान आया कि यदि एमबीसी आरक्षण की विसंगतियों को शीघ्र दूर नहीं किया गया, तो गुर्जर बाहुल्य 40 विधानसभा क्षेत्रों से अगर राहुल गांधी की यात्रा निकली, तो उसका विरोध किया जाएगा और राहुल गांधी को घुसने नहीं दिया जाएगा।

इस पर भी गुर्जर समाज के ही युवाओं ने जवाब दिया और विजय बैंसला को भाजपा का नजदीकी बताया गया, तो वही विजय बैसला की मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नज़दीकी धर्मेंद्र राठौड़ के साथ फोटो भी तेजी से वायरल हुई। यात्रा के कोऑर्डिनेटर इन दोनों कारणों के नाम पर यात्रा का रुट बदलने की बात कर रहे हैं।

इन दो कारणों का आखस असर नहीं हुआ तो अब कहा जा रहा है कि राजस्थान का बेरोजगार राहुल गांधी की यात्रा में व्यवधान पैदा कर सकता है, इसलिए रूट को बदला जाए। वैसे भी पिछले 4 साल से राजस्थान में चल रहे बेरोजगारों के आंदोलन को लेकर सरकार क्या वास्तव में चिंतित है, यह बड़ा सवाल है।

देखने वाली बात है कि, जो बेरोजगार संगठन उत्तर प्रदेश चुनाव उसके बाद में अब गुजरात चुनाव में कांग्रेस का विरोध कर रहे हैं, वही संगठन राजस्थान में उपचुनाव हो तो सिर्फ सतही विरोध करते नजर आते हैं। सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या राज्य की कांग्रेस सरकार विरोध से निपटने के तरीके नहीं जानती या फिर निपटना नहीं चाहती। ऐसे में विरोध दिखाकर राहुल गांधी की यात्रा का रूट बदलने का प्रस्ताव दिया जा रहा है।

वैसे राजनीतिक रूप से कहा जा रहा है कि यात्रा जिन क्षेत्रों में अधिकांश समय बिताएगी उन्हें गुर्जर बहुल और सचिन पायलट की पकड़ वाला बताया जा रहा है। वहां चिंता यह जताई जा रही है कि कहीं सचिन पायलट के समर्थक मजबूती के साथ राहुल गांधी और कांग्रेस आलाकमान तक यह आवाज नहीं पहुंचा दें, कि राजस्थान में अब बदलाव का समय है।

यही वजह है, जिसके डर के चलते यात्रा के रूट को बदलने की कोशिश की जा रही है।

यात्रा के रूट के बदलाव की खबरों के बीच लोगों का कहना है कि यात्रा के रूट में बदलाव होता भी है, तो जिन नए क्षेत्रों से यात्रा को गुजारने की बात की जा रही है, उनमें भी अधिकांश क्षेत्र वही हैं, जहां या तो सचिन पायलट का दबदबा है या फिर वह क्षेत्र सचिन पायलट की कर्मभूमि रहा है। सवाल यह है कि क्या रूट बदलने से पायलट समर्थकों को यात्रा में आने से रोका जा सकेगा।

वहीं यात्रा का रूट बदलने का एक और कारण दिया जा रहा है कि राजस्थान में ओबीसी वर्गीकरण को लेकर शुरु हुआ आंदोलन। कहा जा रहा है कि इसकी वजह से भी राहुल गांधी की यात्रा में व्यवधान हो सकता है। ऐसे में यह समझना महत्वपूर्ण है कि वर्तमान में भारत जोड़ो यात्रा के रूट में जो क्षेत्र है वे पायलट के दबदबे वाले है लेकिन अगर रुट बदला गया तो यात्रा उन क्षेत्रों से गुजरेगी जहां पायलट के साथ ओ.बी.सी. आंदोलन से जुड़े वर्गों का भी दबदबा है, तो क्या उस रूट पर दोहरा विरोध नहीं हो सकता।

वैसे भारत जोड़ो यात्रा का संचालन करने वाली कमेटी जिसके अध्यक्ष दिग्विजय सिंह हैं और कमेटी के सदस्य खुद सचिन पायलट हैं। उनके साथ ही कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी के संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल के बीच नई दिल्ली में सोमवार को महत्वपूर्ण बैठक हुई है, जिसमें यात्रा में अब तक हुई प्रगति और आगे की यात्रा को लेकर चर्चा हुई है।

वैसे तो भारत जोड़ो यात्रा का रूट तय करने वाले कोऑर्डिनेटर सुशांत मिश्रा राजस्थान आकर रूट के बारे में चर्चा कर चुके हैं वही राजस्थान में यात्रा के पर्यवेक्षक विभाकर शास्त्री भी जयपुर आकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष से चर्चा कर चुके हैं।

इसके बावजूद राज्य सरकार ने यात्रा के संबंध में प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, राजस्व मंत्री रामलाल जाट, खान मंत्री प्रमोद जैन भाया और राजस्थान पर्यटन विकास निगम के चेयरमैन धर्मेंद्र राठौड़ को महाराष्ट्र भेजा है।

गुजरात चुनाव के कारण भारत जोड़ो यात्रा से ब्रेक लेंगे राहुल गांधी

नई दिल्ली, 14 नवम्बर। कांग्रेस नेता राहुल गांधी 22 नवंबर को गुजरात में चुनाव प्रचार करेंगे। वह कांग्रेस पार्टी की भारत जोड़ो यात्रा से ब्रेक लेकर गुजरात का दौरा करेंगे। गुजरात में दो चरणों में 1 और 5 दिसंबर को चुनाव होने हैं। वोटों की गिनती 8 दिसंबर को होगी।

हिमाचल प्रदेश में विधान सभा चुनाव प्रचार नहीं करने के कारण पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष को भाजपा की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है, जहां 12 नवंबर को विधानसभा चुनाव हुए थे। अब हिमाचल में चुनाव खत्म होने के साथ ही कांग्रेस गुजरात पर फोकस कर रही है। अगले कुछ हफ्तों में, कांग्रेस के प्रमुख पार्टी नेताओं द्वारा चुनावी राज्य में कई प्रचार रैलियां निर्धारित की गई हैं। इसके तहत पार्टी आगामी 15 दिनों में कुल 25 मेगा रैली करेगी जो 125 विधानसभा क्षेत्रों को कवर करेगा।

कांग्रेस की ये रैलियां आक्रामक चुनावी रणनीति के तहत होंगी, जिसमें पार्टी के तमाम बड़े नेता शिरकत करेंगे। प्राप्त जानकारी के मुताबिक कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, दोनों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और भूपेश बघेल; कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के अलावा पार्टी के पूर्व मुख्यमंत्रियों और ओ.बी.सी.-एस.सी.-एस.टी.-अल्पसंख्यक वर्ग के बड़े नेता भी आगामी दिनों में गुजरात में चुनावी रैलियां और चुनाव प्रचार करेंगे।

ओड़ा रेलवे पुल विस्फोट मामले में जांच में जुटी राष्ट्रीय जांच एजेंसियां

सैन्ट्रल आई.बी., एन.आई.ए. और एन.एस.जी. की टीम मौके पर पहुंची

- **रेल मार्ग बहाल, दोपहर 12 बजे असारवा से उदयपुर पहुंची ट्रेन शाम को उदयपुर से भी रवाना हुई।**
- **एन.एस.जी. ने सोमवार सुबह 10 से 11.30 बजे तक ब्रिज के आसपास एक दर्जन से ज्यादा जगहों पर सबूत इकट्ठे किए और रेलवे कर्मचारियों के साथ ही ग्रामीणों से भी पूछताछ की। दोपहर करीब 1 बजे एन.आई.ए. और सैंट्रल आई.बी. की टीमें भी मौके पर पहुंचीं।**

उदयपुर, 14 नवम्बर (कासं)। उदयपुर से 35 किमी दूर रेलवे ट्रैक पर ब्लास्ट के मामले में दूसरे दिन सोमवार को सेंट्रल आईबी, ए.एन.आई. और एनएसजी की टीम मौके पर पहुंची और जांच की।

टीम के 4 अधिकारियों ने मौके पर पुलिस के साथ हर एक चीज को बारीकी से देखा। इसके साथ ही देर रात रेलवे ट्रैक को रेलवे इंजीनियर्स ने ठीक कर दिया जिससे इस ट्रैक पर रेलगाड़ियों का संचालन पुनः प्रारंभ हो गया। जांच के लिए एनआईए के दो अधिकारी भी देर रात को मौके पर पहुंच गए थे।

जांच एजेंसियों ने सुबह 10 बजे से 11.30 बजे तक ब्रिज के आस-पास एक दर्जन से ज्यादा जगहों पर सबूत इकट्ठे किए। उन्होंने मौके पर रेलवे कर्मचारियों के साथ ही ग्रामीणों से भी पूछताछ की।

दोपहर करीब 1 बजे एनआईए और सेंट्रल आईबी की टीमें भी मौके पर पहुंच गईं। सेंट्रल आईबी के जॉइंट डायेक्टर और एनआईए के एसपी रवि चौधरी मौके पर टीमों का नेतृत्व कर रहे थे। गुजरात एटीएस के अधिकारी भी सोमवार को अपने स्तर पर जानकारी लेते रहे। आईजी प्रफुल कुमार ने बताया कि, इस घटना के पीछे का कारण क्या है ये फिलहाल उस पर कुछ कहा नहीं जा सकता। एफएसएल रिपोर्ट आने पर ही कुछ पता लग पाएगा।

दरअसल उदयपुर में अगले महीने जी-20 की शिखर बैठक होने वाली है। गत 31 अक्टूबर को ही पीएम नरेन्द्र मोदी ने उदयपुर-अहमदाबाद ब्रॉडगेज का शुभारंभ किया था। इतने ऊंचे ब्रिज को क्षतिग्रस्त करने व विस्फोटक से उड़ाने को लेकर दो एंगल पर जांच हो रही है। आतंकी हमले के साथ ही किसी नक्सली ग्रुप द्वारा विस्फोट करने की भी आशंका जताई गई है। पूर्व सांसद रघुवीर मीणा भी सोमवार को ओड़ा स्थित मौका स्थल पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि इस तरह की हरकत का सामने आना उदयपुर की सुरक्षा पर बड़े सवाल खड़े करता है।

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी कैप्टन शशिकिरण ने बताया कि एटीएस की टीम ने जांच के बाद उत्तर पश्चिम रेलवे को साइट क्लियरैंस रात 11 बजे दी गई। जिसके उपरांत रेलवे के इंजीनियर्स ने आज सुबह 3 बजे ट्रैक को फिट घोषित कर दिया। इसके बाद सुबह 8 बजे मालगाड़ी का संचालन कर इसका ट्रायल लिया गया। इसके बाद असारवा से प्रातः 6.30 बजे निकलने वाली ट्रेन को उदयपुर तक लाने को लेकर हरी झंडी दी गई।

अजमेर मंडल के रेलकर्मियों ने 5 घंटे से भी कम समय में ट्रैक को पुनः रेल संचालन युक्त बना दिया।

बता दें कि अगर हादसे से कुछ ही दूर स्थित गांव के दो युवक अगर मौके पर नहीं पहुंचते तो शायद बड़ा हादसा हो सकता था। रेल ट्रैक पर धमाका शनिवार रात करीब साढ़े सात बजे हुआ। ओड़ा गांव में करीब एक किलोमीटर दूर तक इस धमाके की आवाज सुनाई दी। ट्रैक से सबसे करीब घर के बर्तन तक बजने लगे। अंधेरा होने के कारण रात में लोग मौके पर जाने की हिम्मत नहीं कर सके।

घटनाक्रम की सच्चाई करीब 9 घंटे बाद रविवार सुबह 7 बजे सामने आई। ग्रामीणों की सजगता से अगर समय पर सूचना नहीं मिली होती तो रविवार को बड़ी जनहानि हो सकती थी।

चीन के राष्ट्रपति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नहीं कहा। पूरा विश्व, कोविड महामारी शुरू होने के बाद, तीन साल में पहली बार चीन व अमेरिका के राष्ट्रपतियों के बीच होने वाली वार्ता का इंतजार कर रहा था। प्रतिस्पर्धा एवं आर्थिक संबंधों जैसे अन्य मुद्दों पर, दोनों ने उम्मीद जताई कि, दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा व सहयोग, दोनों ही संभव हो सकते हैं। यह स्पष्ट है कि, अमेरिका एवं पश्चिमी देश, अपने आर्थिक लाभ को देखते हुए चीन के साथ सामान्य संबंधों की बहाली के पक्ष में थे। गत सप्ताह ही जर्मनी के चांसलर ओलाफ शुल्ज़ शी से मिलने बीजिंग गए थे। शुल्ज़ ने चीन के साथ संबंध सामान्य बनाने पर बात की। रूस पर चीन के रूख व अन्य मुद्दों ने यूरोप और चीन के बीच दूरी पैदा कर दी थी।

'झारखण्ड...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आई. (एम.एल.) नेताओं के एक प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्यमंत्री से मिलकर, जातिगत जनगणना की प्रक्रिया को जल्दी पूरा करने की माँग करने का निर्णय लिया है।

क्या खड़गे को ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सी.सी." द्वारा की जायेंगी। पिछले सप्ताह के शुरु में, कांग्रेस के मीडिया तथा पब्लिसिटी विभाग के चेयरमैन पवन खेड़ा ने हिमाचल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष कुलदीप कुमार की ए.आई.सी.सी. प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति की घोषणा की थी तथा कहा था कि यह नियुक्ति ए.आई.सी.सी. महासचिव तथा मीडिया चीफ के अनुमोदन से की गई है। इस बयान के दस मिनट के अंदर ही, एक नया बयान जारी किया गया, जिसमें कहा गया कि कांग्रेस अध्यक्ष ने कुलदीप कुमार की नियुक्ति का अनुमोदन कर दिया गया है। जयराम, खेड़ा तथा वेणुगोपाल जैसे नेता राहुल गांधी के नजदीक हैं तथा ये लोग खड़गे के पार्टी अध्यक्ष होने के बावजूद, उनकी उपेक्षा करने की कोशिश करते हैं।

बंगाल में आजमाई रणनीति अब भाजपा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आक्रामक प्रचार, भ्रष्टाचार को लेकर वहां सत्तासीन क्षेत्रीय दल पर जबरदस्त हमले तथा उस पर पारिवारिक पार्टी होने के आरोपों के साथ ही, पश्चिम बंगाल में हमने देखा कि भाजपा ने किस तरह संबंधित क्षेत्रीय दल के प्रभावशाली नेताओं को तोड़कर स्वयं में मिलाया था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दो दिन, 11 एवं 12 नवम्बर को, कर्नाटक, तमिलनाडु, तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश का तूफानी दौरा किया, जहाँ से 100 से अधिक सांसद लोकसभा पहुँचते हैं। उन्होंने इन राज्यों में हजारों करोड़ रूपये की लागत के प्रोजैक्टों का उद्घाटन तथा विकास एवं इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजैक्टों के वादे किये तथा इस प्रकार उन्होंने स्थानीय नेताओं द्वारा प्रचार किये जाने का आधार तैयार कर दिये। अब स्थानीय भाजपा नेता सीना ठोक कर यह कह सकेंगे कि मोदी सरकार इन राज्यों में विकास पर कितना जोर दे रही है तथा "डबल इंजन" सरकार होने की स्थिति में, ये राज्य कितने फायदे में रहेंगे।

राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि जो विरोधी पार्टियाँ भाजपा के राडार पर हैं, उन्हें कमजोर करने की अपनी आम रणनीति के रूप में, भाजपा केन्द्र सरकार की एजेंसियों का उपयोग अपनी राजनैतिक आक्रामकता के लिये करती है।

उदाहरण के लिये कांग्रेस को ही लीजिये, भाजपा इसके सदस्यों को लुभाकर तथा डराकर पार्टी से दूर करती है जिससे यह दिखाई दे कि पार्टी कमजोर हो रही है तथा भाजपा क्षेत्रीय नेताओं तथा आम जनता की पसंदीदा पार्टी बनती जा रही है। तथा लोगों की सोच बदल रही है क्योंकि आम जनता की भारी भीड़ भाजपा की जनसभाओं में दिखाई देती है।

जहाँ कर्नाटक विधानसभा चुनाव अगले वर्ष के शुरु में ही होने हैं, वहीं तेलंगाना एवं आंध्र प्रदेश के विधानसभा चुनाव भी जल्दी ही होंगे। तेलंगाना में तो भाजपा ने व्यापक प्रचार शुरु कर ही दिया है। अभी हाल ही में हुये मुनुगोडे विधानसभा उपचुनाव में उसकी जबरदस्त कोशिश, भले ही वह नाकाम रही हो, हम देख चुके हैं तथा वह सत्तारूढ़ पार्टी के लिये एक गंभीर चुनौती के रूप में आ चुकी है। आंध्र प्रदेश में, यह पहला अवसर है कि मोदी सरकार ने जगन मोहन रेड्डी सरकार को अपने राजनैतिक शत्रु के रूप में देखने के संकेत दिये हैं, जबकि रेड्डी की पार्टी संसद के अंदर और बाहर मोदी सरकार की प्रबलतम समर्थक-सहयोगी रही है।

वर्तमान स्थिति यह है कि भाजपा इन दोनों तेलुगू भाषी राज्यों स्वयं को एक पार्टी के रूप में खड़ा कर रही है, कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों के नेताओं को चुरा रही है, फिल्म स्टारों तथा सेलिब्रिटीज को अपनी ओर खींच रही है तथा "पारिवारिक राजनैतिक संस्थानों (दलों) पर बहुत बड़े-बड़े भ्रष्टाचारों के आरोप लगा रही है।

केन्द्रीय एजेंसियों ने भी इन दोनों राज्यों में अपनी सक्रियता बढ़ा दी है, भले ही यह सक्रियता युक्ति युक्त हो। लेकिन राजनैतिक विश्लेषकों की नजर में, इस सक्रियता का समय संदेहों को जन्म तो देता ही है, उन्हें मजबूत भी करता है।

आंध्र प्रदेश में, फिल्म स्टार से राजनेता बने पवन कल्याण के साथ परसों हुई प्रधानमंत्री की मीटिंग उनके संगठन के साथ गठबंधन को मजबूत करने की योजना का ही हिस्सा बताई जा रही है।

शीर्ष भाजपा नेता तेलुगू फिल्मी दुनिया के मेगा फिल्म स्टारों के सम्पर्क में हैं।

ऐसी अटकलें भी जोर पकड़ रही हैं कि भाजपा आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ वाई.एस.आर.सी.पी. विधायकों को तोड़ने की कोशिश कर सकती है।

पिछले सप्ताह के दक्षिण भारत के दौरे में, प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु में जनसभाओं को अंग्रेजी में संबोधित किया तथा इस प्रकार यह संकेत दे दिया कि वे हिन्दी-विरोधी भावनाएं रखने वाले राज्य को कितना महत्व देते हैं। ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री ऐसे समय पर भाषाई भावनाओं को छेड़ना नहीं चाहते, जब भाजपा इस राज्य में प्रवेश करने के लिये सामंजस्यपूर्ण प्रयास कर रही है।

प्रसंगवश बता दें कि इन सभी राज्यों में, राज्यपाल कुछ ज्यादा ही सक्रिय हो गये हैं तथा तमिलनाडु, तेलंगाना तथा केरल तक में ऐसा प्रतीत होता है कि वे निर्वाचित सरकार से जानबूझ कर झगड़े मोल ले रहे हैं। पश्चिम बंगाल में भी, राज्यपाल जगदीप धनखड़ के भारत के उपराष्ट्रपति बन जाने से पहले, उनके आक्रामक स्वरूप के साथ राज्य की मुख्यमंत्री उनके साथ टकराव की स्थिति तक पहुँचने के लिये विवश हो गई थीं। उनके कई पार्टी साथी, जो भ्रष्टाचार एवं घोटालों में लिप्त बताये गये हैं, प्रवर्तन निदेशालय की कार्यवाही का सामना कर रहे हैं। इसमें कुछ गलत भले ही न हो, लेकिन भाजपा में शामिल हो चुके पूर्व टी.एम.सी. नेताओं के खिलाफ कोई कार्यवाही न होना एक ऐसी चीज है, जिसके चलते विपक्ष के आरोप आम जनता को विश्वसनीय लगते हैं।

संभवतः यही कारण है कि 2019 के लोकसभा चुनावों में 19 सीटें जीतने की बड़ी उपलब्धि अर्जित करने वाली भाजपा, इनके बाद हुये बंगाल के विधानसभा चुनावों में, विधानसभा में बहुमत लाने का भाजपा का मेगा प्लान धरा का धरा रह गया।

पश्चिम बंगाल में, मुख्यमंत्री तथा टी.एम.सी. प्रमुख ममता बनर्जी ने 2021 के विधानसभा चुनावों में भाजपा तथा केन्द्र सरकार की पूरी ताकत के खिलाफ जमकर संघर्ष किया था। वे अपनी अन्तर्दृष्टि तथा गुरुमंत्रों को तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव तथा तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के साथ भी साझा कर रही है, जिन दोनों के साथ, अलग-अलग अवसरों, हाल ही में उनकी मीटिंग हुई थीं।

पूजा स्थल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पहले था।

सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र की तरफ से कोर्ट में मौजूद सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने हलफनामा दायर करने के लिए और समय मांगा क्योंकि इस पर उच्च स्तर पर विचार विमर्श करने की जरुरत है। उन्होंने कहा, "मुझे विस्तृत जवाब देने के लिए सरकार से चर्चा करनी होगी।

भाजपा के पूर्व सांसद डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा कि वे कानून रद्द करने की मांग नहीं कर रहे पर सिर्फ दो और मंदिरों को इस कानून के दायरे से बाहर रखने की मांग करते हैं, एक्ट जस का तस रह सकता है।

याचिकाओं में चुनौती दी गई है कि यह एक्ट हिंदू, सिखों, जैन व बौद्धो को अपने उन पूजा स्थलो पर नियंत्रण पाने के अधिकार से वंचित करता है जिन्हें बाहरी हमलावरो ने तोड़ दिया था।

जमीयत उलेमा ने एक हिंदू द्वारा दायर याचिका को चुनौती दी थी और कहा था कि इससे देश भर की अनेकों मस्जिदों के खिलाफ मुकदमों की बाढ़ आ जाएगी। इंडियन मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने भी याचिका का विरोध किया है, कहा है कि एक्ट से भगवान राम के जन्म स्थल को बाहर रखा गया था पर भगवान कृष्ण के जन्म स्थान को शामिल किया गया, दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार हैं।

विरोध जताने के लिये चीन के नागरिक "कैन्टोनीज़"...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया है, साथ ही जरूरी मैडिकल उपचार में विलम्ब हो रहा है, जिससे जनता गुस्से में है।

वायरस कंट्रोल के घपलों, मिश्रित संदेश और अधिकारियों की मनमानी को लेकर भारी नाराजगी रहती आयी है। बताया जाता है कि कोविड टैस्ट में निगेटिव आए लोगों को भी अधिकारियों ने सरकार की क्वांरटीन फैसिलिटीज़ में जबरन भेज दिया और उनके घरों को डिसइन्फैक्ट करने के लिए उनकी चाभियां मांगी। पश्चिमी मीडिया की खबरें संकेत देती हैं कि कानून के कई विशेषज्ञों ने इन कार्रवाईयों को अवैध बताते हुए उनकी निंदा की है।

मैन्युफैक्चरिंग का ग्लोबल पावर हाउस माने जाने वाले एवं 19 मिलियन लोगों की आबादी वाले ग्वांग्ज़ू के कोविड के राष्ट्र व्यापी प्रकोप के केन्द्र बिन्दु बनने और इस वजह से यहां फिर से लॉकडाउन उपाए किए जाने के बाद यहां के निवासी अपनी कुंठा व्यक्त कर रहे हैं।

ट्विटर के एक प्रतिबंधित चाइनीज़ संस्करण "वीबो" पर एक निवासी ने पोस्ट किया कि "हमें अप्रैल माह में लॉकडाउन का सामना करना पड़ा और दोबारा से नवम्बर माह में।" इससे पहले उन्होंने अपनी पोस्ट में धर्म भ्रष्ट आचरणों के बारे में लिखा, उसमें वास्तविक मांओं के भी उल्लेख थे। "सरकार ने हमें सब्सिडीज़ नहीं दी है, क्या आप समझते हैं कि मुझे मकान के किराए के रूप में धन नहीं देना पड़ता?" अन्य यूजर्स ने अपनी पोस्ट्स में सिर्फ संदेश दिए जिनका सीधा सा रूपान्तरण का "गो टू हैल।" कुछ लोगों ने सरकार पर भारी बेवकूफी के आरोप लगाए, हालांकि अपेक्षाकृत तीखे अंदाज में।

आमतौर पर सरकारी नीतियों की ऐसी खुली और कड़ी आलोचना को सरकार के नियंत्रकों की टीम द्वारा तुरंत प्रभाव से हटा लिया जाता है, फिर भी ये पोस्ट्स कई दिनों तक अप्रभावित रहीं और संभवतः इसलिए कि ये ऐसी भाषा में लिखी गई है कि इसे सरकार के कुछ ही सैन्सर्स (नियंत्रक) समझा सकते हैं। चीन की अधिकारिक भाषा एवं सरकारी समर्थन प्राप्त मंदारिन भाषी लोगों के लिए भी इसका गूढ़ अर्थ निकालने में कठिनाई हो सकती है, खासतौर पर इसके लिखित और बोलचाल के जटिल प्रारूपों को समझने में।

और लगता है कि यह इस बात का नवीनतम उदाहरण है कि चीन के लोग सैन्सर्स का ध्यान आकर्षित किए बिना सरकार के प्रति अपना असंतोष व्यक्त करने के लिए कैन्टॅनीज़ का प्रयोग करने लगे हैं जो एक बेअदब बोली है और व्यंग्य की प्रचुर संभावनाएं उपलब्ध करवाती हैं।

इस वर्ष के सितम्बर माह में अमेरिका के एक स्वतंत्र मीडिया निगरानी संस्थान "चाइना डिजिटल टाइम्स" ने कैन्टॅनीज़ भाषा में लिखी गई ऐसी कई असंतोषजनक पोस्ट्स पर ध्यान दिलाया था, जो ग्वांग्डोंग में बड़े पैमाने पर की गई कोविड टैस्टिंग की प्रतिक्रिया में थी, लेकिन सैन्सर्स का उन पर ध्यान नहीं दिया गया था। संस्थान जो कि यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया से सम्बद्ध है, ने कहा कि "ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि वीबो के कन्टैन्ट सैंसरशिप सिस्टम को कैन्टॅनीज़ शब्दों का विन्यास समझने में कठिनाई आती है। इसी कारण तीखी, दृढ़ और सीधी भाषा में लिखी गईं कई पोस्ट अब भी मौजूद हैं। लेकिन यदि ऐसा ही कन्टैन्ट मंदारिन भाषा में लिखा गया हो तो उसके लॉक या डिलीट कर दिए जाने की संभावना होती है।

कैन्टनीज़ भाषी पड़ोसी हांगकांग में वर्ष 2019 में हुए सरकार विरोधी प्रदर्शनों में चीन सरकार की संभावित निगरानी से बचने के लिए नारों और भाषणों में प्रायः कैन्टॅनीज़ का प्रयोग किया गया।

अब, ऐसा लगता है कि कैन्टनीज़ उन लोगों के लिए एक साधन है जो चीन के निरंतर ज़ीरो कोविड लॉकडाउन्स से उकता चुके हैं और अपने असंतोष को अधिक कुशाग्र तरीके से व्यक्त करना चाहते हैं।

युनिवर्सिटी तेलूक में राजनीति शास्त्र के एक सहायक प्रोफेसर जीन फ्रांस्वा दूप्रे, जिन्होंने हांगकांग की भाषा राजनीति का अध्ययन किया है, ने बताया कि सार्वजनिक आलोचना को बर्दाश्त ना करने की चीन सरकार की सामर्थ्य ने उसके आलोचकों को संचार के नए तरीके "ईजाद" करने का अवसर दिया है।

दूप्रे ने कहा कि "ऐसा प्रतीत होता है कि संवादों के प्रेषण में मंदारिन की जगह किसी अन्य भाषा का उपयोग असंतुष्टों को ऑन लाइन सैन्सरशिप से बचा सकता है। कम से कम कुछ समय के ही लिए।"

"यह अद्भुत घटना सरकार में विश्वास की कमी और बढ़ते उन्माद को प्रमाणित करती है और यह भी दर्शाती है कि जोखिम और बाधाओं के बावजूद नागरिक उत्सुकता से अपना प्रतिरोध जारी रखे हुए हैं।"

चीन सरकार द्वारा राष्ट्रव्यापी शिक्षा और दैनिक जीवन में मंदारिन भाषा के उपयोग पर जबर्दस्त जोर दिए जाने के कारण, कुछ लोगों द्वारा सरकार की आलोचना के लिए कैन्टनीज़ का उपयोग किया जाना सही लगता है। उदाहरण के तौर पर टेलीविजन प्रसारणों व अन्य मीडिया में क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों की कीमत पर प्रायः मंदारिन के उपयोग का दबाव बनाया जाता है।

सरकार का यह दबाव वर्ष 2010 में तब एक राष्ट्रीय विवाद में तब्दील हो गया था, जब सरकार के अधिकारियों ने कैन्टनीज़ भाषी ग्वांगज़ू टेलीविजन चैनल पर प्रमुख रूप से मंदारिन भाषा के प्रोग्राम बढ़ाने पर जोर दिया था, तब यहां के निवासी आक्रोषित हो गए थे। उन्होंने सड़कों पर रैलियां निकाली थीं और पुलिस के साथ हाथापाई की थी, जो कि यहां पर अपने आप में दुर्लभ था।

नेताजी की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करेगा? आप कोर्ट के अधिकार क्षेत्र को गंभीरता से लीजीए। आप भी वकील हैं।

वकील ने कहा "आज बाल दिवस है। हम कई और जयंतियां मनाते है जैसे बुद्ध पूर्णिमा तो ये क्यों नहीं।" चीफ जस्टिस ने कहा, इस पर भारत सरकार को विचार करना है।

जनहित याचिका में कहा गया कि, भारत सरकार अभी तक नेताजी सम्मान नहीं दे पाई है जबकि आजाद हिंद फौज के हजारो जवान भारत की आज़ादी के लिए लड़ते हुए मारे गए थे। भारत सरकार ने हमेशा नेताजी के इतिहास को छुपाने की कोशिश की और युवा भारतीय छात्र नेताजी के और उनकी आज़ाद हिंद फौज के बलिदान से अनभिज्ञ हैं। विश्व में कई देश, जिनमें जापान भी है, नेताजी का सम्मान करते हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908